अखबार जो बदल दे नजरिया

राष्ट्रीय खबर हमारी नज़र

पेज » 12 मूल्य » 3 रुपये » वर्ष » 14 अंक » 182 epaper.rashtriyakhabar.com श्रावण, कृष्णपक्ष द्वितीया, विक्रम संवत 2080

चाणक्य नीति

पत्युराज्ञा विना नारी उपोष्य व्रतचारिणी।

आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्॥

भावार्थ : पति की आज्ञा के बिना जो स्त्री उपवास रूपी व्रत करती है, वह अपने पति की आयु को कम करनेवाली होती है। वह स्त्री नरक में जाती है, उसे महान कष्ट भोगने पड़ते हैं।

रांची पारा अपडेट

मैक्सिमम	मिनीमम
32.00 °c	25.00 °c

सूर्यास्त (आज) » 18.39 बजे

सूर्योदय (कल) » 05.07 बजे

शाह ने सैनिक स्कूल का किया शिलान्यास

मेहसाणा: केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को गुजरात के मेहसाणा में दूधसागर रिसर्च एंड डेवलपमेंट एसोसिएशन द्वारा संचालित श्री मोतीभाई आर. चौधरी सागर सैनिक स्कूल का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शिलान्यास किया। श्री शाह ने इस अवसर पर कहा कि मोतीभाई आर. चौधरी ने दशकों तक गांधीनगर के पशुपालकों, विशेषकर चौधरी समाज की बहनों की आजीविका के साधन उत्पन्न कर, इस दूधसागर डेयरी के नाम को चरितार्थ किया है। श्री मोतीभाई के नेतृत्व में अनेक कठिन पड़ाव इस दूधसागर डेयरी ने पार किये है।

फ्रांस में अधिक सख्ती की अनुमति देने का अनुरोध

पेरिस: फ्रांस की राजधानी पेरिस के पूर्वी क्षेत्र न्यूली-सुर-मार्ने कम्यून के मेयर जारतोश्ते बख्तियारी ने मंगलवार को फ्रांस में चल रहे संघर्षों से निपटने के लिए अधिक सख्ती और स्थानीय पुलिस को शहर में गतिविधि की निगरानी के लिए ड्रोन का उपयोग करने की अनुमति देने का अनुरोध किया। श्री बख्तियारी ने कहा कि वह आज फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन के साथ संकट पर चर्चा करने के लिए दो सौ से अधिक अन्य मेयरों के साथ एलीसी पैलेस जाने वाले हैं। उन्होंने राज्य से फ्रांस में चल रहे संघर्षों से निपटने के लिए अधिक सख्ती और स्थानीय पुलिस को शहर में गतिविधि की निगरानी के लिए ड्रोन का उपयोग करने की अनुमति देने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि देश में जो हो रहा है वह राजनेताओं की वर्षों की कमजोरी और समय पर नहीं लिए गए फैसलों का ही नतीजा है। उन्होंने कहा, यह अधिकार की समस्या है क्योंकि इन दंगाइयों को कानून का डर नहीं है।

आतंकवाद के खिलाफ दोहरे मापदंड छोड़े दुनिया

नयी दिल्ली: भारत ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में सुधारों एवं आधुनिकीकरण करके सरकारों के परे लोगों के बीच संपर्क गहन बनाने की आज वकालत की और आतंकवाद के खिलाफ दोहरे मापदंड छोड़ने का पुरजोर आह्वान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23वें एससीओ शिखर-सम्मेलन के मुख्य सत्र की अध्यक्षता करते हुए यह आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पिछले दो दशकों में, एससीओ, पूरे एशियाई क्षेत्र में, शान्ति, समृद्धि और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफार्म के रूप में उभरा है। इस क्षेत्र के साथ, भारत के हजारों वर्ष पुराने सांस्कृतिक और जनता के बीच संबंध, हमारी साझा विरासत का जीवंत प्रमाण हैं। हम इस क्षेत्र को विस्तारित पड़ोस ही नहीं, विस्तारित परिवार की तरह देखते हैं। श्री मोदी ने भारत के अध्यक्षीय काल में एससीओ के विचार बिन्दुओं में विस्तार होने का विवरण दिया और कहा कि एससीओ के अध्यक्ष के रूप में, भारत ने हमारे बहुआयामी सहयोग को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए निरंतर प्रयास किये हैं। इन सभी प्रयासों को हमने दो मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित किया है। पहला, वसुधैव कुटुम्बकम, यानि पूरा विश्व एक परिवार है। यह सिद्धांत, प्राचीन समय से हमारे सामाजिक आचरण का अभिन्न अंग रहा है।

बिहार के मंत्री को मिली जान से मारने की धमकी

गया: बिहार के सहकारिता मंत्री डॉ. सुरेंद्र प्रसाद यादव ने गया के वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती को पत्र लिखकर अपनी हत्या की आशंका जताई है। मंत्री डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद यादव ने यहां बताया कि उनका सिर काट कर लाने वाले को 11 करोड़ रुपये इनाम देने का ऐलान किया गया है, जिसके बाद उन्होंने सरकार और गया के वरीय पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखा है। उन्होंने कहा कि जातीय आधार बना कर और बड़े गैंग से मिलकर कुछ लोग बुरा अंजाम देना चाहते हैं। अपराधी चिन्हित हो चुके हैं। मंत्री ने कहा कि ऐसे रंगदार बिहार में बहुत आए और गये। ऐसे लोगों से सरकार निपट लेगी। इस बीच सहकारिता मंत्री के आवेदन पर गया के रामपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस छानबीन में जुट गई है।

अपरिहार्य कारणों से आज का अंक 12 पृष्ठों का है। पाठकों की असुविधा के लिए हमें खेद है।

शुभारंभ साईं हीरा ग्लोबल कन्वेंशन सेंटर का ऑनलाइन उद्घाटन

विचार तब प्रभावी जब उसपर कार्रवाई हो: मोदी

- ऑनलाइन लेनदेन में भारत का बड़ा योगदान
- पुट्टापर्थी जिला को ही डिजिटल बनायें लोग
- सत्य साईं खुद दुनिया में संदेश प्रसारित किया

राष्ट्रीय खबर

नयी दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को भक्तों से पूरे आंध्र प्रदेश के पुट्टापर्थी जिले को डिजिटल अर्थव्यवस्था में बदलने का आग्रह किया। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (वीसी) के जरिए पुट्टापर्थी में साईं हीरा ग्लोबल कन्वेंशन सेंटर का आज उद्घाटन किया। श्री मोदी ने इस मौके पर अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि दुनिया में होने वाले वास्तविक समय(रियल टाइम) के 40 प्रतिशत ऑनलाइन लेनदेन भारत में हो रहे हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि हर कोई इस संकल्प को पूरा करने के लिए एकजुट होते है तो पूरे पुट्टापर्थी जिले को श्री सत्य साईं बाबा की अगली जयंती तक डिजिटल बना दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा, देखा गया परिवर्तन प्रत्येक सामाजिक वर्ग के योगदान का परिणाम है। ग्लोबल काउंसिल जैसे संगठन भारत के बारे में अधिक जानने और दुनिया से जुड़ने का एक प्रभावी माध्यम हैं। श्री मोदी ने खुशी जताई कि आज उनके मिशन का विस्तार हो रहा है और देश को साईं हीरा ग्लोबल कन्वेंशन सेंटर के नाम से एक नया प्रमुख कन्वेंशन सेंटर मिल रहा है। उन्होंने कहा, श्री सत्य साईं का आशीर्वाद और प्रेरणा आज हमारे साथ है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि कि नया केंद्र आध्यात्मिकता और आधुनिकता के वैभव का अनुभव कराएगा। केंद्र में सांस्कृतिक विविधता और एक वैचारिक भव्यता शामिल है। यह आध्यात्मिकता और शैक्षणिक कार्यक्रमों पर चर्चा का केंद्र बिंदु बन जाएगा और विद्वानों और विशेषज्ञों का साथ मिलेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोई भी विचार तब सबसे प्रभावशाली होता है जब वह कार्रवाई के रूप में आगे बढ़ता है।

प्राचीन ग्रंथों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि संतों को बहते पानी की तरह माना जाता है क्योंकि वे कभी अपने विचार नहीं छोड़ते और अपने व्यवहार से कभी नहीं थकते। श्री मोदी ने कहा, संतों का जीवन उनके निरंतर प्रवाह और प्रयासों से परिभाषित होता है। उन्होंने कहा कि किसी संत का जन्मस्थान उसके अनुयायियों का निर्धारण नहीं करता है। उन्होंने कहा, भले ही श्री सत्य साईं बाबा का जन्म पुट्टापर्थी में हुआ था, लेकिन उनके अनुयायी दुनिया भर में पाए जा सकते हैं और उनके

» पेज 2 भी देखें

परीक्षण में सफल होने के बाद प्रारंभ होगा हवाई टैक्सी से आना जाना

उड़ने वाली कार के प्रोटोटाइप को अमेरिका में प्रमाणपत्र मिला

एजेंसियां

न्यूयॉर्क: फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन ने एक वाहन के परीक्षण के लिए प्रमाणित किया है जिसे कैलिफोर्निया के एक स्टार्टअप ने उड़ने वाली कार के रूप में वर्णित किया है - पहला पूरी तरह से इलेक्ट्रिक वाहन जो अमेरिकी सरकार की मंजूरी प्राप्त करने के लिए सड़कों पर उड़ और यात्रा दोनों कर सकता है। एलेफ ऑटोमोटिव ने कहा कि उसका वाहन/विमान, जिसे मॉडल ए कहा जाता है, पहला उड़ने वाला वाहन है जो सार्वजनिक सड़कों पर चलने योग्य है और एक सामान्य कार की तरह पार्क करने में सक्षम है। इसमें वर्टिकल टेकऑफ और लैंडिंग क्षमताएं भी हैं। जाहिर तौर पर यह एक या दो लोगों को ले जाने में सक्षम होगा और इसकी सड़क-सीमा 200 मील और उड़ान सीमा 110 मील होगी। कंपनी को 2025 के अंत तक पहली डिलीवरी के साथ प्रत्येक वाहन को तीन लाख डॉलर में बेचने की उम्मीद है। एफएए ने पुष्टि की कि उसने कंपनी को एक विशेष उड़ानयोग्यता प्रमाणपत्र जारी किया है, जो सीमित उद्देश्यों के लिए अनुमति देता है जिसमें प्रदर्शनी, अनुसंधान और विकास शामिल हैं। कई कंपनियां ऑल-इलेक्ट्रिक वीटीओएल पर काम कर रही हैं, जिसका मतलब वाहन टेकऑफ और लैंडिंग विमान है। एफएए ने कहा कि एलेफ विशेष उड़ानयोग्यता प्रमाणपत्र पाने वाला अपनी तरह का पहला विमान नहीं है। हालाँकि, एलेफ ने कहा कि इसका वाहन सड़क और हवा दोनों में काम करने, सामान्य कार की तरह दिखने और सामान्य पार्किंग स्थान में पार्क करने की क्षमता के कारण अलग है। हम एफएए से यह प्रमाणन प्राप्त करके उत्साहित हैं। यह हमें लोगों को पर्यावरण के अनुकूल और तेज आवागमन प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ने की अनुमति देता है, जिससे प्रत्येक सप्ताह व्यक्तियों और कंपनियों के घंटों की बचत होती है। यह विमानों के लिए एक छोटा कदम है, कारों के लिए एक बड़ा कदम है।

» पेज 2 भी देखें

महंगाई को लेकर मोदी सरकार पर कड़ा हमला

मोदी को महंगाई मैन करार दिया सुप्रिया श्रीनेत्र ने

- सामानों का वजन घटाकर जनता से ठगी
- लोगों को राहत देने में सरकार निर्विकार
- उत्पाद शुल्क कम कर भी राहत दे सकते

राष्ट्रीय खबर

नईदिल्ली: कांग्रेस ने आवश्यक वस्तुओं के आसमान छूती कीमतों के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्हें मंगलवार को महंगाई मैन करार दिया और कहा कि लोग कमरतोड़ महंगाई से त्रस्त हैं और सरकार लोगों को राहत देने के लिए कोई कदम नहीं उठा रही है। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने आज यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जनता महंगाई से त्रस्त हो चुकी है लेकिन सरकार महंगाई से लोगों को राहत देने के लिए कुछ नहीं कर रही है। उन्होंने इस पर आश्चर्य जताया कि खाने पीने के सामान का वजन घटाकर उनकी कीमत बढ़ा दी गई है। उन्होंने कहा, सरकार चाहे तो उत्पाद शुल्क कम कर जनता को बड़ी राहत दे सकती है। डीजल का दाम घटेगा तो यातायात की लागत घटेगी और सब्जियां तथा जरूरी चीजें सस्ती होंगी। खाने- पीने के सामानों की कीमत ज्यादा और वजन कम करके देश की जनता की जेब पर डाका डाला जा रहा है। वजन घटाकर ज्यादा दाम पर बेचे जा रही वस्तुओं का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पहले पांच रुपये में 80 ग्राम बिस्कुट मिलता था जो अब 50 ग्राम कर दिया गया है। इसी तरह से पहले चायपत्ती 70 रुपये 250 ग्राम मिलती थी। नमकीन अब 10 रुपये में 32 ग्राम मिल थी है जो पहले 65 ग्राम थी। चॉकलेट 10 रुपये में 13.2 ग्राम मिल रही है जो पहले पांच रुपये में 13.2 ग्राम मिलती थी। कॉफी 10 रुपए

» पेज 2 भी देखें

50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए माता वैष्णो देवी के दर्शन

जम्मू: जम्मू-कश्मीर में रियासी जिले के त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित विश्वप्रसिद्ध श्री माता वैष्णो देवी गुफा मंदिर में चालू वर्ष के पहले छह महीनों में 50 लाख से अधिक भक्तों ने दर्शन किए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गत जनवरी से जून तक 50,43,438 लाख भक्तों ने गुफा मंदिर में दर्शन किए हैं। उन्होंने कहा, ''इस साल उक्त अवधि में लगभग छह लाख से अधिक भक्तों ने गुफा मंदिर का दौरा किया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में 45,96,453 तीर्थयात्रियों ने गुफा मंदिर के दर्शन किये थे।'' सूत्रों ने कहा कि स्कूलों में गर्मियों की छुट्टियों के मद्देनजर मई-जून के महीनों में तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ गई। उन्होंने कहा,''वर्तमान में, भवन तक पहुंचने के लिए 13 किलोमीटर लंबे रास्ते पर यात्रा करने के लिए प्रति दिन लगभग 30,000 से 35,000 तीर्थयात्री कटरा पहुंच रहे हैं।'' आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार इस साल जनवरी में 5,24,189 तीर्थयात्रियों ने, फरवरी में 4,14,432, मार्च में 8,94,650, अप्रैल में 10,18,540, मई में 9,95,773 और जून के महीने में 11,95,844 यात्रियों ने गुफा मंदिर पहुंचे तथा माता के दर्शन किये।'' अधिकारी ने कहा कि 2022 में जनवरी में 4,38,521 तीर्थयात्रियों ने, फरवरी में 3,61,074, मार्च में 7,78,669, अप्रैल में 9,02,192, मई में 9,86,766 और जून में 11,29,231 तीर्थयात्रियों ने गुफा मंदिर का दौरा किया था।

खाद्य संकट से पीड़ित कई यूरोपीय देश रूस से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं

राष्ट्रीय खबर

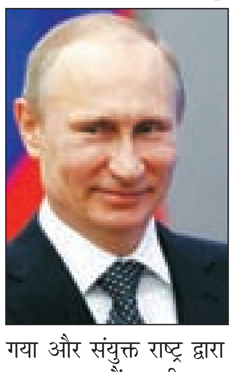

मॉस्को: यूरोपीय संघ स्वीकृत रूसी बैंक को वैश्विक वित्तीय प्रणाली से फिर से जोड़ना चाहता है। यह गुट काला सागर अनाज समझौते का विस्तार करने के लिए पुतिन के समर्थन को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है, जो शीघ्र ही समाप्त हो रहा है। इस समझौते ने रूस की नाकाबंदी के बीच अपने बंदरगाहों से यूक्रेन के खाद्य उत्पादों के निर्यात की अनुमति दी। वैश्विक खाद्य आपूर्ति संकट इतना खराब हो गया है कि यूरोपीय संघ एक स्वीकृत रूसी बैंक को वैश्विक वित्तीय प्रणाली से फिर से जोड़ना चाहता है, यह लिंक तब टूट गया था जब देश ने पिछले साल यूक्रेन पर हमला किया था। रियायत राज्य के स्वामित्व वाले रूसी कृषि बैंक को अनाज निर्यात से संबंधित भुगतान संभालने देना चाहती है। प्रस्ताव के तहत - मास्को द्वारा शुरू किया गया और संयुक्त राष्ट्र द्वारा मध्यस्थता, बैंक की एक नई सहायक कंपनी को वैश्विक मैसेजिंग सिस्टम स्विफ्ट का उपयोग करने की भी अनुमति दी जाएगी, जिसे कुछ रूसी बैंकों को यूक्रेन पर देश के आक्रमण के बाद उपयोग करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

दो सूत्रों ने एफटी को बताया कि रूसी बैंक को वैश्विक वित्तीय प्रणाली तक पहुंच देने का प्रस्ताव इस साल 18 जुलाई को समाप्त होने वाले काला सागर अनाज सौदे के विस्तार के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के समर्थन को सुरक्षित करने के लिए सबसे खराब विकल्प है। अनाज सौदा, जिसने यूक्रेन के तीन प्रमुख बंदरगाहों से भोजन और उर्वरक के परिवहन की अनुमति दी, जुलाई 2022 में हुआ, ताकि यूक्रेन को खाद्य संकट के बीच वैश्विक बाजार में अपने खाद्य उत्पादों का निर्यात जारी रखने की अनुमति मिल सके।

इससे पहले, यूक्रेनी अनाज शिपमेंट देश के बंदरगाहों पर फंस गए थे क्योंकि रूस ने कुछ प्रमुख काला सागर शिपिंग मार्गों को अवरुद्ध कर दिया था। रूसी कृषि बैंक को स्विफ्ट प्रणाली में वापस लाने की प्रस्तावित रियायत मॉस्को के खिलाफ लगाए गए प्रतिबंधों पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने आने वाली कठिनाइयों को रेखांकित करती है। संभावित रियायत की खबर तब आई जब संयुक्त राष्ट्र में रूस के दूत

» पेज 2 भी देखें

अनुसंधान निरंतर शोध के बाद जैव अनुकूल सामग्रियों से तैयार हुई इलेक्ट्रॉनिक चमड़ी

यह इंसानी शरीर की गतिविधियों का संकेत देती है

- समुद्री खर पतवार के उपयोग से इसे बनाया गया
- परीक्षण में यह काफी सटीक विश्लेषण करती है
- इसकी सामग्री किसी तरह का प्रदूषण नहीं फैलाती

राष्ट्रीय खबर

रांची: इंसान अधिकांश अवसरों पर अपनी सेहत के बिगड़ते के आंतरिक संकेतों को समझ या पकड़ नहीं पाता है। अब काफी दिनों की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इंसानों को इस परेशानी से मुक्ति दिलाने का नया रास्ता खोजा है। इस बार जैव-अनुकूल सामग्रियों से बनी इलेक्ट्रॉनिक [illegible] संवेदनशीलता के

स्किन अत्यंत उच्च परिशुद्धता के साथ मानव महत्वपूर्ण संकेतों को ट्रैक कर सकती है। शोधकताओं ने स्मार्ट पहनने योग्य वस्तुएं बनाने के लिए आणविक गैस्ट्रोनॉमी से प्रेरित सामग्रियों का उपयोग किया है जो

» पेज 2 भी देखें

वर्तमान में नैनोकम्पोजिट-आधारित सेंसर पर अधिकांश शोध गैर-टिकाऊ सामग्रियों से संबंधित है

वर्तमान में नैनोकम्पोजिट-आधारित सेंसर पर अधिकांश शोध गैर-टिकाऊ सामग्रियों से संबंधित है। इसका मतलब यह है कि ये उपकरण प्लास्टिक कचरे में योगदान करते हैं जब वे उपयोग में नहीं रह जाते हैं। एडवांस्ड फंक्शनल मटेरियल्स में 28 जून को प्रकाशित एक नया अध्ययन पहली बार दिखाता है कि ऐसे उपकरण बनाने के लिए आणविक गैस्ट्रोनॉमी अवधारणाओं को बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों के साथ जोड़ना संभव है जो न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं, बल्कि गैर-नॉन से बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता भी रखते हैं। वैज्ञानिकों ने तरल ग्राफीन स्याही कोर के चारों ओर एक ठोस समुद्री शैवाल/ग्राफीन जेल परत से बने ग्राफीन कैप्सूल बनाने के लिए रेस्तरां उद्योग में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली दो सामग्रियों समुद्री शैवाल और नमक का उपयोग किया। यह तकनीक उसी तरह है जैसे मिशेलिन स्टार रेस्तरां तरल जैम कोर के चारों ओर एक ठोस समुद्री शैवाल/रास्पबेरी जैम परत के साथ कैप्सूल परोसते हैं।

देश में बढ़ती बेरोजगार चीन की सरकार के लिए खतरा

राष्ट्रीय खबर

बीजिंग: राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सरकार को सलाह देने वाले एक प्रमुख अर्थशास्त्री ने चेतावनी दी है कि चीन की बढ़ती युवा बेरोजगारी दर को अगर ठीक से नहीं संभाला गया तो राजनीतिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं। युवा बेरोजगारी का मुद्दा संभवतः अगले दशक तक जारी रहेगा और अल्पावधि में और खराब होता जाएगा,लियू युआनचुन ने कहा, जिन्होंने अर्थव्यवस्था पर बीजिंग को मार्गदर्शन प्रदान किया है, जिसमें अप्रैल में शीर्ष निर्णय लेने वाले पोलित ब्यूरो को व्याख्यान देना भी शामिल है।

चीन के रेनमिन यूनिवर्सिटी थिंक टैंक, चाइना मैक्रोइकॉनॉमी फोरम द्वारा पिछले सप्ताह प्रकाशित एक संयुक्त रिपोर्ट में उन्होंने कहा, अगर इसे ठीक से नहीं संभाला गया, तो यह आर्थिक क्षेत्र से परे अन्य सामाजिक समस्याओं को जन्म देगा, यहां तक कि राजनीतिक समस्याओं

» पेज 2 भी देखें

शहर >> अपडेट

भाजपा ने अपने ताबूत में अंतिम कील ठोंक दी : झामुमो

रांची: पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी को भाजपा द्वारा प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर झामुमो ने कड़ी टिप्पणी की है। पार्टी के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार पांडेय ने कहा कि झामुमो का इससे कोई लेना-देना नहीं है कि वह अपना प्रदेश अध्यक्ष किसे बनाती है। इससे झामुमो की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हां यह जरूर कहा जा सकता है कि बाबूलाल के रूप में भाजपा ने अपने ताबूत पर अंतिम कील ठोंक दी है। क्योंकि बाबूलाल मरांडी पिछले कई वर्षों से अपने अस्तित्व बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं।

फैसला

चुनावों से पहले पार्टी का बड़ा फैसला

बाबूलाल मरांडी बने झारखंड बीजेपी के अध्यक्ष

राष्ट्रीय खबर

रांची: बाबूलाल मरांडी को झारखंड बीजेपी का अध्यक्ष चुना गया है। बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व ने 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले कई राज्यों के अध्यक्ष को बदला है। झारखंड में अब ये कमान बाबूलाल मरांडी को दी गई है। इससे पहले दीपक प्रकाश राज्य की कमान संभाल रहे थे। बाबूलाल मरांडी को बीजेपी विधायक दल का नेता भी चुना गया था। अब उनके प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है।

2024 के लोकसभा चुनावों को देखते हुए बाबूलाल मरांडी को मिली ये जिम्मेदारी काफी अहम मानी जा रही है। बाबूलाल मरांडी झारखंड के वरिष्ठ नेता हैं। उनका जन्म जनवरी 1958 को गिरिडीह मे हुआ था। गिरिडीह कॉलेज से उन्होंने ग्रेजुएशन की डिग्री ली। उन्होंने एक साल तक प्राथमिक शिक्षक के रूप में काम किया। इसके बाद वो आरएसएस से जुड़े। साल 1983 में उन्हें संथाल परगना के विश्व हिंदू परिषद के संगठन मंत्री की जिम्मेदारी मिली।साल 1991 में बाबूलाल भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए। लोकसभा चुनाव 1991 में उन्होंने दुमका सीट से चुनाव लड़ा। लेकिन वो हार गए।

1996 लोकसभा चुनाव में वो फिर दुमका सीट से उम्मीदवार बने। इसबार वो महज 5 हजार वोट से दोबारा हारे। साल 1996 में बीजेपी ने उन्हें वनांचल क्षेत्र का अध्यक्ष बनाया। इसके बाद साल 1998 में उन्होंने दुमका सीट पर जीत दर्ज की। 1999 में वो फिर जीतकर सांसद बने।अटल सरकार में बाबूलाल मरांडी वन पर्यावरण राज्यमंत्री बने। साल 2000 में वो झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बने। 2003 में उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 2004 में वह कोडरमा सीट से चुनाव लड़े और जीते। 2006 में बीजेपी छोड़कर नई पार्टी झारखंड विकास मोर्चा का गठन किया। 2006 में कोडरमा सीट पर हुए उपचुनाव वो निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लड़े और जीत हासिल की।

2009 में कोडरमा सीट से बतौर जेवीएम उम्मीदवार लड़े और जीत हासिल की। 2014 में उन्होंने दुमका सीट से चुनाव लड़ा लेकिन हार गए। 2014 विधानसभा चुनाव में भी उन्हें हार मिली। 2019 के विधानसभा चुनाव में बाबूलाल मरांडी की पार्टी जेवीएम अकले चुनाव लड़ा था। इस चुनाव में उन्हें सिर्फ तीन सीटों पर ही जीत मिली। इसके बाद उन्होंने एक बार फिर से बीजेपी में जाने का फैसला किया और पार्टी ने तीन विधायकों में से दो बंधु तिर्की और प्रदीप यादव को निलंबित कर दिया और पार्टी का विलय बीजेपी में कर दिया। बीजेपी ने उन्हें विधायक दल का नेता बनाया लेकिन सदन में उसे अभी तक मान्यता नहीं मिली है।

पेज एक का शेष

विचार तब प्रभावी .. .. ..

संस्थानों और आश्रमों तक भारत के हर राज्य में पहुंचा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भाषा और संस्कृति से परे सभी भक्त प्रशांति निलयम से जुड़े हैं और यही इच्छा है जो भारत को एक सूत्र में पिरोकर इसे अमर बनाती है। सेवा की शक्ति पर सत्य साईं का उद्धरण देते हुए श्री मोदी ने गुजरात में आए भूकंप के दौरान उनके मार्गदर्शन और मदद को याद किया। उन्होंने श्री सत्य साईं के अत्यंत दयालु आशीर्वाद को याद किया और कहा कि उनके लिए मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा थी। भारत जैसे देश में धार्मिक और आध्यात्मिक संस्थाएं हमेशा सामाजिक कल्याण के केंद्र में रही हैं, प्रधानमंत्री ने कहा, आज जब हम अमृत काल के संकल्पों के साथ विकास और विरासत को गति दे रहे हैं, तो सत्य साईं ट्रस्ट जैसी संस्थाओं की इसमें बड़ी भूमिका है।

उन्होंने आंध्र के लगभग 40 लाख छात्रों को श्री अन्ना रागी-जावा से बना भोजन उपलब्ध कराने की सत्य साईं सेंट्रल ट्रस्ट की पहल की सराहना की। श्री अन्ना के स्वास्थ्य लाभों को रेखांकित करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि यदि अन्य राज्य भी इस तरह की पहल से जुड़ेंगे तो देश को काफी लाभ होगा। श्री मोदी ने कहा, श्री अन्ना में स्वास्थ्य भी है, संभावनाएं भी हैं। श्री सत्य साईं सेंट्रल ट्रस्ट ने प्रशांति निलयम, पुट्टपर्थी में एक नई सुविधा, साईं हीरा ग्लोबल कन्वेंशन सेंटर का निर्माण किया है। प्रशांति निलयम श्री सत्य साईं बाबा का मुख्य आश्रम है।

उड़ने वाली कार के .. ..

कंपनी की वेबसाइट में कहा गया है कि उड़ने वाली कार को कम गति वाले वाहन के रूप में प्रमाणित किया जाएगा, जिसका अर्थ है कि यह पक्की सड़क पर लगभग 25 मील प्रति घंटे से अधिक तेज चलने में सक्षम नहीं होगी। कंपनी ने साइट पर पोस्ट किया, धारणा यह है कि, यदि ड्राइवर को तेज मार्ग की आवश्यकता है, तो ड्राइवर एलेफ की उड़ान क्षमताओं का उपयोग करेगा।

बहरहाल, सड़कों पर चलने के लिए इसे अभी भी राष्ट्रीय राजमार्ग यातायात सुरक्षा प्रशासन से अनुमोदन की आवश्यकता है। यह कंपनी वर्ष 2015 से वाहन पर विकास कार्य चल रहा है। चार दोस्तों, कॉन्स्टेंटाइन किसली, पावेल मार्किन, ओलेग पेत्रोव और डुखोवनी ने बैक टू द फ़्यूचर फिल्मों से प्रेरित होकर एक वाहन बनाने का निर्णय लिया। कार के बाहरी ढांचे की प्रारंभिक स्वचालित परीक्षण उड़ान 2018 में सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी और अगले वर्ष एक पूर्ण आकार का प्रोटोटाइप उड़ाया गया था। लेकिन एलेफ ने कहा कि आवश्यक अनुसंधान और विकास जारी रखने के लिए उसे एफएए के विशेष उड़ानयोग्यता प्रमाणपत्र की आवश्यकता है। कंपनी ने यह भी कहा कि इस साल की शुरूआत में उसने 400 से अधिक वाहनों के लिए रिफंडेबल प्री-ऑर्डर लिया था, जिसमें सामान्य कतार में होने के लिए 150 डॉलर या प्राथमिकता कतार के लिए 1,500 डॉलर की लागत थी।

मोदी को महंगाई मैन .. ..

में 5.5 ग्राम है जो पहले 7.5 ग्राम था। श्रीमती श्रीनेत ने कहा कि सब्जियों के दाम रॉकेट की तरह भाग रहे हैं। सब्जियां इतनी महंगी हो चुकी हैं कि उन्हें शादियों के सीजन में गिफ्ट के तौर पर दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि महंगाई के हाल हुआ है कि नींबू 400 रुपए किलो, हरी मिर्च 400 रुपए किलो, अदरक 400 रुपए किलो,धनिया 200 रुपए किलो, टमाटर 160 रुपए किलो, लहसुन 130 रुपए किलो, परवल 80 रुपए किलो, अरबी 80 रुपए किलो और भिंडी 70 रुपए किलो बिक रही है। इस बीच महिला कांग्रेस ने भी आज यहां महंगी होती सब्जियों को लेकर प्रदर्शन किया और सरकार के विरोध में नारेबाजी की।

खाद्य संकट से पीड़ित कई .. ..

गेन्नेडी गैटिलोव ने क्रेमलिन समर्थक इजवेस्टिया अखबार को बताया कि काला सागर अनाज सौदे की यथास्थिति बनाए रखने का कोई आधार नहीं है। सोमवार की रिपोर्ट के अनुसार, गैटिलोव ने कहा कि रूसी कृषि बैंक को वापस स्विफ्ट से जोड़ना समझौते के विस्तार की शर्तों में से एक था। गैटिलोव ने इजवेस्टिया को बताया, रूस ने सकारात्मक बदलाव की उम्मीद में सौदे को बार-बार बढ़ाया है। हालांकि, अब हम जो देख रहे हैं वह हमें यथास्थिति बनाए रखने के लिए सहमत होने का आधार नहीं देता है। रूस ऊर्जा से लेकर कृषि उपज तक वस्तुओं का एक प्रमुख निर्यातक है। जबकि 2020 में कोविड 19 महामारी शुरू होने के बाद से आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान की स्थिति में है, रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध से अव्यवस्थाएं बढ़ गई हैं, जो दोनों प्रमुख गेहूं निर्यातक हैं। संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन खाद्य मूल्य सूचकांक - जो आम तौर पर कारोबार की जाने वाली वस्तुओं की एक टोकरी को ट्रैक करता है - मार्च 2022 में 159.7 के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया, हालांकि मई 2023 में सूचकांक वापस गिरकर 124.3 पर आ गया।

यह इंसानी शरीर की .. ..

मामले में समान उपकरणों से आगे निकल गए हैं। उन्होंने अत्यधिक ट्यून करने योग्य और टिकाऊ एपिडर्मल इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए नैनोकम्पोजिट माइक्रोकैप्सूल बनाने के लिए समुद्री शैवाल में ग्राफीन को एकीकृत किया। जब इसे एक नेटवर्क में इकट्ठा किया जाता है, तो छोटे कैप्सूल अल्ट्राहाई परिशुद्धता के साथ वास्तविक समय में मांसपेशियों, श्वास, नाड़ी और रक्तचाप माप को रिकॉर्ड कर सकते हैं।

हालांकि, आणविक गैस्ट्रोनॉमी कैप्सूल के विपरीत, ग्राफीन कैप्सूल दबाव के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं; इसलिए, जब निचोड़ा या संपीड़ित किया जाता है, तो उनके विद्युत गुण नाटकीय रूप से बदल जाते हैं। इसका मतलब यह है कि उनका उपयोग अत्यधिक कुशल स्ट्रेन सेंसर के रूप में किया जा सकता है और उच्च परिशुद्धता, वास्तविक समय बायोमैकेनिकल और महत्वपूर्ण संकेत माप के लिए स्मार्ट पहनने योग्य त्वचा पर उपकरणों के निर्माण की सुविधा प्रदान कर सकता है।

लंदन की क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी में सामग्री विज्ञान के व्याख्याता डॉ. दिमित्रियोस पापेजोरगिउ ने कहा, हमने नव-निर्मित समुद्री शैवाल-ग्रैफीन माइक्रोकैप्सूल के असाधारण गुणों का उपयोग किया है जो इसे फिर से परिभाषित करते हैं। इस शोध को अब अन्य प्रयोगशालाओं द्वारा समान सामग्रियों के तनाव-संवेदन गुणों को समझने और हेरफेर करने के लिए एक ब्लूप्रिंट के रूप में उपयोग किया जा सकता है, जो नैनो-आधारित पहनने योग्य प्रौद्योगिकियों की अवधारणा को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। प्लास्टिक कचरे के पर्यावरणीय प्रभाव का हमारी आजीविका पर गहरा प्रभाव पड़ा है और भविष्य में प्लास्टिक आधारित एपिडर्मल इलेक्ट्रॉनिक्स को अधिक टिकाऊ दृष्टिकोण की ओर रुझान की आवश्यकता है। ये कैप्सूल पुनर्नवीनीकरण योग्य और बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों का उपयोग करके बनाए गए हैं, जो पहनने योग्य सेंसिंग उपकरणों के बारे में हमारे सोचने के तरीके और उनकी उपस्थिति के प्रभाव को प्रभावित कर सकते हैं।

देश में बढ़ती बेरोजगार चीन .. .

का कारण भी बनेगा। 110 पेज के दस्तावेज में चीन के ट्विटर जैसे वीबो पर साझा किए गए, जिसमें उपयोगकताओं ने राजनीतिक जोखिमों पर लेखकों की चेतावनियों पर प्रकाश डाला। पिछले साल, शी को अपने एक दशक से अधिक के कार्यकाल के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता के लिए सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा, जब राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन, छात्रों के नेतृत्व में सख्त कोविड जीरो नियमों को लेकर भड़क उठे, जिनमें से कुछ ने चीनी नेता को पद छोड़ने के लिए कहा। मई में 16 से 24 वर्ष की आयु वालों के बीच चीन की बेरोजगारी दर 20.8% के रिकॉर्ड पर पहुंच गई। देश की धीमी होती अर्थव्यवस्था और बाजार में नए स्नातकों की बाढ़ नीति निमार्ताओं को कुछ आसान सुधारों के साथ एक चुनौती दे रही है। रिपोर्ट के लेखकों के अनुसार, चीन की युवा बेरोजगारी दर कोविड प्रतिबंधों से प्रभावित निजी क्षेत्र में स्थिरता के कारण उत्पन्न हुई है, जिसमें रेनमिन विश्वविद्यालय के लियू शियाओगुआंग और चीन चेंगक्सिन इंटरनेशनल क्रेडिट रेटिंग कंपनी के यान यान भी शामिल हैं।

मोदी सरनेम केस

राहुल गांधी मामले पर अब 22 जुलाई को सुनवाई

राष्ट्रीय खबर

रांची: मोदी सरनेम केस में कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी मामले में मंगलवार को सुनवाई हुई। रांची सिविल कोर्ट स्थित एमपी-एमएलए के विशेष न्यायिक दंडाधिकारी अनामिका किस्कू की अदालत में इस मामले पर सुनवाई हुई। अदालत ने इस मामले में अगली सुनवाई 22 जुलाई को निर्धारित की है। बता दें कि 16 जून को इस मामले में सुनवाई हुई थी, उस दिन अदालत ने अगली सुनवाई की तिथि चार जुलाई को निर्धारित करते हुए राहुल गांधी को सशरीर उपस्थिति होने का निर्देश दिया था। मंगलवार को सिविल कोर्ट में अधिवक्ता प्रदीप चंद्रा ने आवेदन देकर समय की मांग की थी। उस आवेदन पर सुनवाई करते हुए अदालत ने उक्त तिथि निर्धारित की है। इधर, हाइकोर्ट ने इसी मामले में 16 अगस्त तक राहुल गांधी को पीड़क कार्रवाई पर रोक लगा दी है।

चुनौती के बावजूद मिशन 2024 के तहत जीतेंगे झारखंड की सभी 14 सीट: बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय खबर

रांची: झारखंड बीजेपी के नवनियुक्त अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में झारखंड की सभी 14 सीटों को जीतने का दावा किया है। केंद्रीय नेतृत्व के प्रति आभार जताते हुए बाबूलाल मरांडी ने कहा कि जिस उम्मीद और विश्वास के साथ पार्टी ने जो जिम्मेदारी दी है उसपर खरा उतरने का प्रयास करूंगा।पार्टी आलाकमान द्वारा बाबूलाल मरांडी बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। इसको लेकर रांची के बीजेपी प्रदेश कार्यालय में जश्न का माहौल है। रांची में पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने गर्मजोशी के साथ बाबूलाल मरांडी का स्वागत किया और प्रदेश अध्यक्ष बनने पर उन्हें बधाई दी। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर खुशी जताते हुए बाबूलाल मरांडी ने इसके लिए पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित कई नेताओं के प्रति आभार जताते हुए कार्यकताओं से मिशन 2024 के लक्ष्य को पूरा करने में जुटने की अपील की।बाबूलाल मरांडी के बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद बीजेपी प्रदेश कार्यालय में जश्न का माहौल देखा जा रहा। झारखंड विकास मोर्चा के विलय के वक्त बाबूलाल मरांडी के साथ बीजेपी में शामिल होने वाले नेता और कार्यकर्ता काफी खुश दिखे। जिस वक्त बाबूलाल मरांडी को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने की सूचना आई उस समय निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश बीजेपी प्रदेश कार्यालय में मौजूद थे।बाबूलाल मरांडी कोडरमा और गिरिडीह के रास्ते में थे और सूचना मिलने के बाद आननफानन में रांची के लिए रवाना हुए। रांची आ रहे बाबूलाल मरांडी को बीच रास्ते में जगह जगह कार्यकताओं ने स्वागत किया और बधाइयां दी गयीं। उस दौरान मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए बाबूलाल मरांडी ने कहा कि 2024 का चुनाव चुनौतीपूर्ण है जिसे हर हाल में लक्ष्य के अनुरूप कार्यकताओं के बल पर पूरा करेंगे।

केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक में उठी मांग, झारखंड में झामुमो बड़ा भाई, उसी तरह मिले हक

राष्ट्रीय खबर

रांची: लोकसभा चुनाव की तैयारी के आगाज साथ ही झामुमो केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक मंगलवार को रांची के सोहराय भवन में गई। बैठक में यह बात खुलकर आयी कि झारखंड में झामुमो बड़े भाई की भूमिका में है, इसलिए यहां पर झामुमो को बड़े भाई की तरह ही हक मिलना चाहिए। इस बार अंतिम निर्णय गठबंधन दल के केंद्रीय नेता बैठकर आपस में तय करेंगे। उक्त बातें पार्टी के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार पांडेय ने बैठक के बाद आयोजित प्रेस ब्रीफिंग में कही। उन्होंने बताया कि बैठक में लोकसभा चुनाव, डुमरी उपचुनाव के को देखते हुए संगठन को कैसे मजबूत करना है, इसपर चर्चा हुई।

बैठक में पार्टी केंद्रीय अध्यक्ष शिबू सोरेन ने सभी जिला अध्यक्षों को निर्देश दिया कि हर बूथ, हर पंचायत एवं हर जिला तक संगठन को मजबूत बनाएं। पार्टी के द्वारा चलाए जा रहे सदस्यता अभियान, जिसमें 50 लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य है, उसे हर हाल में तय समय सीमा तक पूरा करें।डुमरी उपचुनाव को देखते हुए बोकारो जिला को एक महीने के अंदर बूथ स्तर पर कमेटी बनाने का निर्देश पार्टी अध्यक्ष शिबू सोरेन ने दिया है। पार्टी के नेता एवं कार्यकताओं को डुमरी उपचुनाव को लेकर तुरंत क्षेत्र कूच करने और तैयारी में जुटने का निर्देश दिया गया है।बैठक में नेता-कार्यकताओं को सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का निर्देश दिया गया है। कहा गया कि सरकार ने कई ऐसे काम किये हैं, जिससे आमजन और गरीबों को सीधा लाभ मिला है।

सरकार का भी लक्ष्य है कि योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। मगर कहीं का कहीं, कोई कमी अवश्य रह जाती है, इसलिए सभी को मिलकर योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है। ताकि सरकार के अच्छे काम का सही दिशा में प्रचार-प्रसार हो सके।पार्टी नेता विनोद पांडेय ने बताया कि 15 दिनों के अंदर पार्टी की कमेटी घोषित कर दी जाएगी। बतातें चलें कि 18 दिसंबर 2021 को पार्टी का महाधिवेशन रांची में हुआ था। जिसमें शिबू सोरेन अध्यक्ष और हेमंत सोरेन कार्यकारी अध्यक्ष चुने गए थे।

मगर डेढ़ साल बीत जाने के बाद भी अब तक कमेटी की घोषणा नहीं हुई। इसके बारे में पूछे गए सवाल पर विनोद पांडेय ने कहा कि 15 दिनों के अंदर कमेटी घोषित हो जाएगी।बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष शिबू सोरेन ने कहा कि हम अक्सर केंद्रीय समिति, जिला समिति, प्रखंड समिति की बैठक करते हैं। मगर इसमें सभी की आम सहभागिता नहीं हो पाती है। संगठन को मजबूत करने के लिए इसमें सभी की सहभागिता जरूरी है। जब संगठन मजबूत होगा, तभी हम मजबूत होंगे, सरकार मजबूत होगी।

नीतीश कुमार से मिले झारखंड जदयू के नेता, संगठन मजबूत करने की मिली जिम्मेवारी

राष्ट्रीय खबर

रांची: झारखंड प्रदेश जदयू के प्रभारी सह बिहार सरकार के मंत्री डॉ अशोक चौधरी और झारखंड जदयू प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद खीरू महतो ने नीतीश कुमार से मुलाकात की। उनके साथ जदयू का प्रतिनिधिमंडल ने भी सीएम नीतीश कुमार से पटना में मुलाकात की। इस दौरान झारखंड में संगठन को लेकर चर्चा हुई। वहीं झारखंड में पार्टी के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की विस्तृत रूप से जानकारी के साथ ही संगठन के बारे में विस्तृत लिखित रिपोर्ट सौंपी गयी। मौके पर सीएम नीतीश कुमार ने झारखंड में संगठन को मजबूत करने का निर्देश दिया।प्रतिनिधि मंडल में झारखंड जदयू के प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी श्रवण कुमार, युवा जदयू के प्रदेश अध्यक्ष निर्मल सिंह, युवा नेता व मांडू के पूर्व प्रत्याशी दुष्यंत कुमार पटेल, धनबाद जिला के अध्यक्ष पिंटू सिंह,धनलाल दुबे शामिल थे।

राजनीति

बाबूलाल मरांडी को झारखंड बीजेपी का प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने पर

झामुमो ने कसा तंज, कहा: उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहिए

राष्ट्रीय खबर

रांची: मंगलवार का दिन बाबूलाल मरांडी के लिए मंगल रहा। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के रूप में बाबूलाल मरांडी का नाम आते ही झारखंड की राजनीति गरमा गई है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता ने बीजेपी के इस फैसले पर तंज कसा है। वहीं झारखंड बीजेपी ने इसकी सराहना की है।झारखंड बीजेपी की कमान बाबूलाल मरांडी को मिली है। कहा जा रहा है कि बीजेपी केंद्रीय नेतृत्व ने बाबूलाल मरांडी को जिम्मेदारी देकर 2024 के मिशन को कामयाब करने के लिए ट्राइबल कार्ड खेला है। बीजेपी के इस दांव से झारखंड की राजनीति मंगलवार को दोपहर बाद अचानक गरमा गई। बीजेपी दफ्तर में जहां हलचल बढ़ी, वहीं यह खबर झारखंड मुक्ति मोर्चा की केंद्रीय समिति की विस्तारित बैठक तक भी पहुंच गई। उस बैठक में झारखंड मुक्ति मोर्चा के सभी टॉप टू बॉटम नेता मौजूद थे और सभी 2024 पर ही मंथन करने के लिए जुटे थे।बाबूलाल मरांडी, सोरेन परिवार और झारखंड मुक्ति मोर्चा के धूर विरोधी माने जाते हैं, ये उनके द्वारा हर दिन सोशल मीडिया में हो रहे पोस्ट पर भी दिखता है। झामुमो नेताओं ने बाबूलाल मरांडी को बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर तंज कसा है। झामुमो विधायक सरफराज अहमद ने बाबूलाल मरांडी के बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर तंज कसते हुए कहा कि बीजेपी को उन्हें देश का प्रधानमंत्री बनाना चाहिए था।

सरफराज अहमद ने कहा कि बाबूलाल मरांडी के बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने से बीजेपी को कुछ भी फायदा नहीं होगा, क्योंकि बाबूलाल मरांडी सामान्य सीट से चुनाव लड़ते रहे हैं। इसमें वे कभी दूसरे तो कभी तीसरे नंबर पर रहते हैं। ऐसे में ट्राइबल फेस के रूप में बाबूलाल मरांडी को 2024 के चुनाव के लिए पेश करना भूल होगी। अर्जुन मुंडा का नाम लेते हुए सरफराज अहमद ने कहा कि अर्जुन मुंडा केंद्रीय मंत्री भी हैं और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भी रहे हैं, उन्हें जिम्मेदारी दी जा सकती थी, मगर ऐसा नहीं हुआ है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता मनोज पांडे ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के अंदर खेमेबाजी जबरदस्त रूप से है और बाबूलाल मरांडी के प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद यह पार्टी चार भागों में बंट जाएगी।वहीं, बाबूलाल मरांडी को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने से बीजेपी के अंदर उत्साह देखा जा रहा है। पूर्व स्पीकर और रांची के बीजेपी विधायक सीपी सिंह ने केंद्रीय नेतृत्व के फैसले का स्वागत करते हुए कहा है कि बाबूलाल मरांडी को संगठन से लेकर सरकार तक का अनुभव है। वह सांसद, विधायक और झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं। ऐसे में पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को यह महसूस हुआ है कि उनके नेतृत्व में संगठन और मजबूत होगा, इसलिए उन्हें जिम्मेदारी दी गई है।

शहर >> अपडेट

कृषि विभाग से केले का पौधा नहीं मिलने से महंगें दामों पर खरीद कर रहे किसान

बगहा/पिपरासी : पिपरासी प्रखंड में केला की पौधा कृषि विभाग के द्वारा किसानों को अनुदान पर नहीं दी गई है। जिससे किसानों में भारी रोष है। विभाग की लापरवाही के कारण यहां के किसान उतरप्रदेश के पडरौना, छितौनी, खड्डा आदि जगहों पर केला का पौधा खरीद कर लाने को मजबूर है। किसान संदेश यादव, चंद्रप्रताप यादव, हीरालाल कुशवाहा, केदार कुशवाहा, वीरेंद्र कुमार, केदार प्रसाद, रमेश कुशवाहा आदि ने बताया कि 15 मई से 15 जुलाई के बीच केला की खेती किया जाता है। और चार जुलाई तक केले की पौधा का कहीं आता पता नहीं है। किसान औने-पौने दाम पर उत्तरप्रदेश के बाजारों से खरीद कर खेती कर रहे हैं।

बीडीओ ने विद्यालयों का निरीक्षण कर व्यवस्था में सुधार का दिया निर्देश

राष्ट्रीय खबर

सुगौली,पू.च: विभागीय आदेश के आलोक में प्रखंड विकास पदाधिकारी तेज प्रताप त्यागी ने नियमित निरीक्षण कार्यकम के तहत नगर पंचायत के आधा दर्जन विद्यालय की जांच की। जिसके बाद बीडीओ श्री त्यागी ने बताया कि नगर पंचायत के पंडित दीनदयाल बालिका उच्चतर माध्यमिक+2 विद्यालय, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय विशुनपुरवा, उत्क्रमित माध्य विद्यालय सुगौली उर्दू, नौवाडीह, राय टोला नींमूई विद्यालय की जांच की गई। जांच के बाद बीडीओ श्री त्यागी ने बताया कि विद्यालय की पढ़ाई की व्यवस्था साफ सफाई, पेजल, शौचालय, मध्यान भोजन, छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति की जांच की गई। जांच में पंडित दीनदयाल बालिका उच्चतर माध्यमिक+2 विद्यालय की व्यवस्था और शिक्षा की स्थिति संतोष जनक पाई गई। शिक्षक उपस्थित थे पर छात्राओं की उपस्थिति कम पाई गई। वही बाकी के विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति काफी कम पाई गई। साफ-सफाई और शौचालय की स्थिति दैनीय पाई गई। कुछ विद्यालयों में शिक्षक नियमित आवेदन पर अवकाश में थे। उन्होंने बताया कि जिन विद्यालयों में शैक्षणिक व्यवस्था,मध्यान भोजन की गुणवत्ता सहित अन्य कमी थी उनको जथा शीघ्र सुधार के निर्देश दिए गए हैं।

गुमटी बंद करने को लेकर ग्रामीणों ने जमकर बवाल काटा

राष्ट्रीय खबर

सुगौली,पू.च: गुमटी बंद करने को लेकर ग्रामीणों ने जमकर बवाल काटा और नारेबाजी की।जिसके चलते करीब आधा घण्टा ट्रेन स्टेशन पर खड़ी रही। पूर्वमंत्री के पहल पर भीड़ को हटाया गया। जानकारी के अनुसार प्रखंड के दक्षिणी छपरा बहास पंचायत के मधुमालती से सेमरा मुख्य पथ में आने के लिए स्टेशन से पूरब रेलवे फाटक है। जिसे रेलवे के द्वारा बंद किया जाना है। जिसके चलते मधुमलती, कपरसंडी सहित अन्य गांव के लोगो को आने जाने में काफी परेशानी होगी। इससे आक्रोशित होकर ग्रामीणों ने जमकर बवाल काटा। सरकार व विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। ग्रामीण लोगो ने बताया कि सेमरा के मुख्य सड़क से गुमटी होकर मधुमालती जाने का इकलौता सड़क है। जब गुमटी को बंद कर दिया जाएगा तो लोगो को आने जाने का मार्ग खत्म हो जाएगा। गांव में तीन तरफ से नदी है। दूसरा को मार्ग भी नही है। यह इलाका बाढ़ प्रभावित है। रेलवे के द्वारा बनाई जा रही सड़क से लोगो को बहुत परेशानी होगी। सड़क से ऊंचा अंडर पास बना दिया जाय तो कुछ समस्या का समाधान हो सकेगा। रेलवे के द्वारा मनमानी की जा रही है। जिसके चलते लोगो मे आक्रोश है। मामले की खबर पर पूर्वमंत्री रामचन्द्र सहनी, मुखिया प्रतिनिधि अनिरुद्ध सिंह, मंडल अध्यक्ष महेश मिश्र, सरपंच प्रतिनिधि अरविंद यादव, मनोज यादव सहित कई लोग पहुंचे और लोगों से उनकी समस्या को जाना। लोगो को समझा बुझाकर भीड़ को हटवाया गया। लोगो की समस्या को वरीय अधिकारी को अवगत कराया जाएगा।

मारपीट कर दुकानदार ने छीना 55 हजार

नरकटियागंज : नगर स्थित नंदपुर चौक से दुकान बंद कर घर जाने के क्रम में एक दुकानदार से कतिपय तत्वों ने 55000 हजार रुपए छीन लेने की खबर है। मामला में दुकानदार मो. मुस्लिम ने शिकारपुर थाना में आवेदन देकर उन्होंने बताया है कि दुकान बंद कर घर जाने के दौरान रास्ते में नंदपुर गाँव के नुरैंन आलम व राजा ने घेर लिया और मारपीट कर उक्त रुपये छीन लिया। बताया गया है कि आरोपी दुकानदार से रंगदारी की मांग करते रहे हैं और जान मारने की धमकी देते रहे। आवेदक ने पुलिस को बताया है कि राहगीरों ने उनकी जान बचाई। नंदपुर चौक पर उनकी गेट ग्रील की दुकान है। प्रशिक्षु थानाध्यक्ष नवनीत कुमार ने बताया कि मामला की छानबीन की जा रही है। आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय को सौंप दिया जाएगा।

अधेड़ व्यक्ति के लापता होने से घर में मचा कोहराम

बेतिया, प च : जिला अंतर्गत शनिचरी थाना क्षेत्र के सिकटाकला खुर्द निवासी एक प्रौढ अचानक लापता हो गया है। घटना के बाद उसके परिवार में कोहराम मच गया। लापता व्यक्ति घनश्याम प्रसाद (50 वर्ष) रुपए निकालने के लिए शनिचरी स्थित एक सीएसपी केंद्र में गया, शाम तक घर नहीं लौटन पर परिजनों की चिंता बढ़ गई। आने की बाट देखते दिन बीत गया, अब तक कहीं कोई सुराग नहीं मिला। उनके परिजनों में छोटा प्रसाद ने एक शिकायत शनिचरी थाना को दिया है। जिसमें उन्होंने बताया है कि विगत 1 जुलाई को मेरे पिता घनश्याम प्रसाद भोजन कर घर के लोगों से आधार कार्ड मांग, शनिचरी चौक पर सीएसपी से रुपए निकालने के लिए साइकिल से गए। पुलिस को आवेदन देने तक सभी रिश्तेदारों के यहां भी इसकी सूचना दी जा चुकी है, कहीं उनका अता पता नहीं चल रहा है। शनिचरी थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि आवेदन प्राप्त है, लापता व्यक्ति की खोज की जा रही है।

तय गन्ना मूल्य हास्यप्रद, किसानों में नाराजगी

रीगा : स्थानीय चीनी मिल क्षेत्र के किसानों ने केंद्र सरकार द्वारा गन्ना मूल्य तय किए जाने पर विभिन्न संगठनों की ओर से दी जा रही प्रतिक्रिया को हास्यास्पद एवं बेतुका बताया है। इलाके के किसान राम कैलाश सिंह, नरेंद्र कुमार सिंह, विनोद झा, सुनील कुमार राय, दिनेश प्रसाद आदि ने बताया कि रीगा चीनी मिल क्षेत्र के 40 हजार किसानों का लगभग एक अरब रुपया चीनी मिल के जिम्मे बकाया है। बैंक एवं चीनी मिल के मिलीभगत से चीनी मिल मालिक 12 हजार किसानों को बैंकों का कर्जदार बना दिया। इन सवालों पर कोई संगठन बोलने को तैयार नहीं है। जब किसान गन्ना की खेती बिल्कुल ही छोड़ दिया है तब गन्ना मूल्य तय करने के मामले को लेकर हाय तौबा मचाया जा रहा है। जो हास्यास्पद है, जिससे इलाके के किसानों में गुस्सा है। किसानों ने बताया है कि धान, गेहूं आदि अनाज के सरकारी खरीदारी मूल्य पर कोई संगठन बोलने को तैयार नहीं है। इलाके के किसानों के लिए विगत 4 वर्षों से गन्ना की खेती सपना सी हो गई है। छठ पर्व के अवसर पर विगत 4 वर्षों से इलाके के किसान गन्ना खरीद कर त्यौहार मना रहा है। लेकिन आज गन्ना के मूल्य निर्धारण पर अभी भी राजनीतिक रोटियां सेंकी जा रही है। जो हास्यास्पद है।लोगों का कहना है कि किसानों एवं मजदूरों के बकाये का भुगतान कराने की बात करने वाला ही किसानों का शुभचिंतक है। बाकी सारी बयानबाजी चीनी मिल मालिक को फायदा पहुंचाने वाला है। और मिल मालिक के इशारे पर ही अपने बचाव में इस तरह की बयान बाजी कराई जा रही है। ताकि सरकार की ओर से किसानों मजदूरों के बकाये राशि के भुगतान को लेकर मिल मालिक पर कोई कार्रवाई न हो।

तीसरी बार जिलाध्यक्ष बने डॉ मंतोष साहनी, बधाइयों का लगा तांता

पार्टी द्वारा मिली जिम्मेवारियों को निष्ठा पूर्वक पूरा किया जाएगा : डॉ साहनी

राष्ट्रीय खबर

मोतिहारी, पू च : वरीय जदयू नेता डॉ मंतोष कुमार साहनी को जनता दल यूनाइटेड द्वारा पुनः अति पिछड़ा प्रकोष्ठ का

जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर कार्यकताओं एवं स्थानीय लोगों ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी है। समाज सेवा से जुड़े श्री साहनी विगत एक दशक से भी अधिक समय से पीड़ित मानव की सेवा को अपना धर्म मानते हैं। अपने मनोनयन पर डॉ साहनी ने विकास पुरूष के नाम से जगजाहिर लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीवरंजन उर्फ ललन सिंह, प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा, अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र कुमार चंद्रवंशी, समाज कल्याण मंत्री मदन सहनी, विधान परिषद सदस्य भीष्म सहनी और जिलाध्यक्ष मंजू देवी के प्रति आभार व्यक्त किया है। वहीं उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा मिली जिम्मेवारियों को हरहाल में निष्ठापूर्वक पूरा किया जायेगा। युद्धस्तर पर अभियान चला कर बूथ तक पार्टी को नम्बर एक बनाया जाएगा। बधाई देने वालों में प्रमंडल प्रभारी रोविन कुमार सिन्हा, विधायक शालिनी मिश्रा, एमएलसी खालिद अनवर, पूर्व विधायक मो. ओबैदुल्लाह, रजिया खातून, श्यामबिहारी प्रसाद, बिरेन्द्र कुशवाहा, शिवजी राय, मीना द्विवेदी, प्रदेश महासचिव सतीश कुमार, प्रो. दिनेश चंद्र प्रसाद, अरुण कुशवाहा, भुवन पटेल, अजित सहनी, हीरालाल महतो, सगीर आलम, दीपक पटेल, राजकिशोर ठाकुर, बभन कुशवाहा, विशाल साह, महिला अध्यक्ष शोभा सिंह, रविन्द्र सिंह पटेल, संजय सिंह, विनय कुशवाहा, जन्मेजय पटेल, बैजनाथ भगत, सुनील भूषण ठाकुर, दुलार यादव, शकील अंसारी, कवींद्र कुशवाहा, जुल्फिकार आफताब, संजीव कुमार, शमानंद सहनी, श्यामकांत कुशवाहा, डॉ. बासुदेव कुमार शर्मा, बिनोद सहनी, संतोष ठाकुर, ब्रह्मदेव साह, नंदलाल चौधरी, शहजाद आलम, अरविंद तिवारी, ब्रजेश श्रीवास्तव, बृजमोहन गुप्ता, ब्यास सिंह, देवेन्द्र सहनी, दिलीप कुशवाहा, जितेंद्र सिंह, कुणाल पटेल, मुक्ति सिंह, विनय सहनी, देवकी प्रसाद, कांति पटेल सहित अन्य शामिल थे।

पहलेजा घाट से जलबोझी कर हजारों शिवभक्त करते हैं बाबा गरीब नाथ का जलाभिषेक

मुजफ्फरपुर : श्रावणी मेला के अवसर पर बाबा गरीबनाथ मंदिर में जलाभिषेक करनेवाले कांवरियाँ.सोनपुर स्थित पहलेजा घाट से जल बोझकर प्रतिवर्ष आते हैं। कांवरिया एनएच-77 होते हुए रामदयालु रेलवे गुमटी पार कर अघोरिया बाजार चौक, हरिसभा चौक, देवी मंदिर रोड, पानी टंकी चौक,जिला स्कूल मैदान में बने जिग-जैग से गुजरते हुए हाथी चौक,अमर सिनेमा चौक, छोटी कल्याणी, प्रभात सिनेमा चौक, साहु पोखर होते हुए बजरंगबली चौक से माखन साह चौक के रास्ते बाबा गरीबनाथ मंदिर मार्ग से बाबा मंदिर मे प्रवेश कर जलाभिषेक करेंगे। इसके बाद कांवरिया छाता बाजार की ओर से बाहर निकल जायेंगे। वही, कांवरिया मार्ग पर यातायात नियंत्रण के लिए शहर में प्रवेश करने वाले मार्ग रामदयालु नगर, कच्ची-पक्की चौक, गोबरसही चौक, भगवानपुर पुल, बैरिया गोलम्बर, जीरो माईल चौक, मिठनपुरा चौक तथा बनारस बैंक चौक से अति आवश्यक सेवा को छोड़कर सभी प्रकार के वाहनों का शनिवार की दोपहर से रविवार की करीब शाम तक शहरी क्षेत्र की ओर प्रवेश पर पुरी तरह प्रतिबंध रहेगा। सरैयागंज टावर से गांधी चौक, छाता चौक, माखन साह चौक एवं पुरानी बाजार चौक तक संपूर्ण क्षेत्र में रिक्शा एवं चार पहिया वाहनों का प्रवेश भी पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। मेले मे कांवरियों के ठहरने के लिए आरडीएस कॉलेज मे टेंट सिटी बनवाई जा रही है।परिसर में पोखर के किनारे लगभग 4 दर्जन शौचालय व स्नानघर भी बनवाए जाएंगे। पूर्व की तरह इस बार भी टेंट सिटी में कांवरियों के ठहरने के लिए बेड के साथ शीतल पेयजल, लाइट, कांवर स्टैंड लगेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन होगा। जुलाई के पहले सप्ताह तक मंच बना देना है। टेंट सिटी के अलावा कॉलेज परिसर तथा सभागार में कांवरियों के ठहरने की व्यवस्था प्रशासन की ओर से की जा रही है।

स्वास्थ्य कर्मियों के साथ पीएचसी प्रभारी ने की बैठक

बगहा/पिपरासी: पिपरासी स्वास्थ्य केंद्र में पीएचसी प्रभारी के द्वारा स्वास्थ्य कर्मियों के साथ बैठक कर बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में विशेष सतर्कता एवं चौकसी बरतने का निर्देश जारी किया। पीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. रविंद्र कुमार मिश्रा ने उपस्थित नर्स, लेखपाल, डाटा एंट्री ऑपरेटर को संबोधित करते हुए कहा कि अपने अपने पोषक क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति होने पर विशेष सतर्कता बरतें। गर्भवती पर विशेष निगरानी रखें। उसे सुरक्षित प्रसव कराए। परिवार कल्याण योजना के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रभारी के द्वारा दिया गया। ड्यू लिस्ट और सर्वे रजिस्टर को भी अप टू डेट करने का निर्देश दिया। बरसात और बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में ब्लीचिंग का छिड़काव करना सुनिश्चित करें। सभी उप स्वास्थ्य केंद्र में बाढ़ को लेकर दवा भंडारित कर दिया गया है। इसकी भी समीक्षा प्रभारी के द्वारा किया गया।

शिक्षक तबादले के नाम पर मोटी रकम की हुई उगाही

बगहा/पिपरासी: पिपरासी प्रखंड में शिक्षकों के तबादले में बड़ा खेल होने की सूचना प्राप्त हो रही है। तबादले के नाम पर मोटी रकम की उगाही बड़े पैमाने पर हुई है। अपर मुख्य सचिव के हिदायत के बाद भी यह होना सवाल उत्पन्न कर रहा है। प्रखंड के एक वरिष्ठ शिक्षक ने नाम न छापने के शर्त पर बताया कि पिपरासी में कोई रिक्त पद नहीं है। और वहां एक जूनियर शिक्षक की नियुक्ति कर दी गई। शिक्षक तबादले की जब सूची जारी हुई तो यह देख कर शिक्षक हैरान रह गए। यह जांच का विषय है कि किस कारण से ऐसा खेल खेला गया।कौन कौन पदाधिकारी और कर्मी इसमें शामिल है । जनप्रतिनिधि इस मामले को अब मुख्य सचिव के के पाठक के पास पहुंचा कर न्याय की गुहार लगाने की बात कर रहे हैं। कहां से इस तरह की चुक और उगाही हुई है या कौन से हथकंडे अपने गए हैं। इसकी जांच की मांग कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष चंद्रप्रताप यादव उर्फ साधु ने किया है। और शिक्षा मंत्री तथा अपर मुख्य सचिव से मुलाकात कर इस मुद्दे को रखेंगे। सरकार की साख पर बट्टा कौन पदाधिकारी लगा रहे हैं इसकी भी जांच होगी।

मुंगेर डीपीओ को अतिरिक्त प्रभार मिलने से शिक्षकों को नहीं मिल पाया वेतन

राष्ट्रीय खबर

मुंगेर : एक ओर सरकार जहां शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने को लेकर कई तरह की योजनाएं चला रही है ।वहीं दूसरी ओर मुंगेर की शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई है। शिक्षकों को वेतन नहीं मिलने के कारण स्थिति भयावह हो गई है।मुंगेर में शिक्षा विभाग के कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना के पद पर नियुक्त विनय कुमार सुमन को रामगढ़ और चानन के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी का अतिरिक्त प्रभार दिए जाने के कारण शिक्षकों के वेतन के भुगतान की प्रक्रिया बाधित हुई है ।ऐसी स्थिति उत्पन्न होने का कारण यह है कि पूर्व में विनय कुमार सुमन के पास बिहार शिक्षा परियोजना में भी कार्यक्रम पदाधिकारी का भी पद है। सरकार के आदेश के बावजूद बकरीद जैसे पर्व में भी शिक्षकों को वेतन नहीं मिल पाया । 28 जून को ही बकरीद पर्व के अवसर पर शिक्षकों का वेतन का भुगतान होना था। जबकि अभी तक नहीं हो पाया है। वेतन नहीं मिलने की स्थिति में शिक्षकों में आक्रोश व्याप्त है। बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ गोप गुट के मुंगेर जिलाध्यक्ष रंजन कुमार ने लंबित वेतन के भुगतान की मांग मुंगेर के जिला शिक्षा पदाधिकारी अश्वनी कुमार से की है।

राम-लक्ष्मण की जोड़ी वाल्मीकिनगर मे लिखेगी जीत की गाथा : पूर्वमंत्री

राष्ट्रीय खबर

भितहा : राज्यसभा सांसद सतीशचन्द्र दुबे एवं बिहार सरकार के पूर्व मंत्री सह भाजपा नेता राजेश सिह ने प्रखंड के दर्जनों गांवों में जनसपंर्क किया। जनसंपर्क यात्रा के दौरान खैरवा निवासी सुभाष चौबे, डीही के मुरारी चौधरी फिर मुड़ाडीह मे सुग्रीव पाण्डेय सहित भितहा प्रखंड के दर्जनों लोगों के घर ग्रामीणों से रूबरू होते हुए केंद्र सरकार के 9 साल बेमिसाल का नारा बुलंद किये। जनसंपर्क कार्यक्रम के दौरान भारत के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा किये गये लोक कल्याणकारी योजनाओं को लोगो के बीच साझा करते हुए बताया गया कि किसानों के हित को ध्यान मे रखते हुए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सुकन्या समृद्धि योजना,गरीब असहाय लोगो के पाच लाख तक के फ्री मे इलाज के लिए आयुष्मान कार्ड योजना, महिलाओं के हीत को ध्यान मे रखते हुए उज्जवला योजना,प्रधानमंत्री आवास योजना,प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना सहित दर्जनों योजना बनाकर जन जन तक पहुचाने का काम किया है। सरकार द्वारा जो इन 9 सालो मे कार्य किये है वह आपके सामने है।वही लोगो के बीच पर्चा भी बाटा गया जिसमे केन्द्र सरकार की तमाम उपलब्धियो को दशार्या गया है। वही भाजपा नेता सह पूर्व मंत्री राजेश सिंह ने कहा कि माननीय रास सांसद मेरे राम और मैं उनका लक्ष्मण हुं। पूरे देश में बीजेपी की सरकार तो बनने ही जा रही है परंतु बाल्मीकिनगर में राम और लक्ष्मण की जोड़ी जीत की गाथा निश्चित रूप से लिखेगी ' वही भ्रमण के दौरान प्रखंड अध्यक्ष अनिल जायसवाल रविंद्र यादव, विनय चौबे, डॉ. बृजेश (टुन्नू) सिंह, संजय मिश्रा, दिनेश साह, अमित साह व दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

देखभाल की अभाव में समय पूर्व काल के गाल में समा जाते हैं बेजुबान

भगवान भरोसे हैं आवारा पशु, संरक्षित करने की है दरकार

राष्ट्रीय खबर

बेतिया, प च : नगर क्षेत्र में आवारा एवं बेसहारा पशु भगवान भरोसे हैं। आये दिन उन पशुओं को ठोकर लगती हैं अथवा नाला में गिरकर अपनी जान गवां बैठते हैं। लंबी बीमारी और उचित देखभाल के अभाव में समय पूर्व काल के गाल में समा जाते हैं, आवारा व बेसहारा बेजुबान जीव। उन पशुओं को बचाने तथा सुरक्षित करने की योजना भी बेतिया नगर निगम को बनाने की आवश्यकता है। बिहार सरकार और उसके नगर विकास एवं आवास विभाग को ऐसी योजना बनाने की आवश्यकता है। जिससे बेजुबान आवारा व बेसहारा पशुओं की समुचित देखभाल की जा सकती है। वर्षों से सड़कों पर घूम घूम कर कूड़े के ढेर में कचरा खाकर अपना जीवन बसर कर रहे आवारा पशुओं के लिए शासन-प्रशासन के पास यहां न कोई योजना है, ना कोई मानवीय संवेदना। यहां तक की बड़े-बड़े वादे और दावे करने वाले राजनेता भी इस मामले में बिल्कुल असफल हैं। हां इतना अवश्य है कि आवारा और बेसहारा पशुओं को बचाने के लिए कहीं ना कहीं पब्लिक या सामाजिक गतिविधि चलाने वाले स्वयंसेवी संस्था को आगे आना होगा। विगत रात्री ऐसी ही एक घटना नगर निगम क्षेत्र के वार्ड संख्या 25 में घटी, वहां के पार्षद केशव राज ने बताया की सोमवार की रात एक सांड स्टेशन चौक के पास गहरे नाला में गिर गया। जिसकी सूचना पर वहां पहुंचे नगर पार्षद और देखते ही देखते लोगों का बहुत बड़ा हुजूम खड़ा हो गया, जेसीबी लाया गया और नाला पर बने कुछ स्लैब को नाले से हटाया गया। फिर भी जब सफलता नहीं मिली कामयाबी तो मोटे रस्सा को मंगवा कर उसके सहारे इस सांड को बांधा गया। जेसीबी मशीन के सहारे उसे धीरे-धीरे उठाकर किसी तरह घंटों मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया। इस अवसर पर नगर निगम की उप मेयर गायत्री देवी के प्रतिनिधि रमन गुप्ता, नीरज सोनी, सोनू कुमार, सुजीत सोनी, मेराज के अलावा सैकड़ों अगल-बगल के लोग उपस्थित रहे। इन सभी लोगों की सहायता से भारी-भरकम सांड को नाला से निकालने में सफलता मिली।

सावन के प्रथम दिन विभिन्न शिवालयों में श्रद्धालुओं ने किया जलाभिषेक

राष्ट्रीय खबर

बगहा/मधुबनी : सावन महीने के प्रथम दिन मंगलवार को अनुमंडल क्षेत्र के सभी शिव मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ी हुई थी। श्रद्धालुओं ने शिवालयों में पूजा-अर्चना कर अपने तथा स्वजनों के जीवन की मंगल कामना की। सुबह से ही रामनगर का ऐतिहासिक नीलकंठ नर्मदेश्वर महादेव का मंदिर, वाल्मीकिनगर शिव मंदिर जटाशंकर, कौलेश्वर मंदिर, हरनाटांड़ स्थित सुंदर महादेव मंदिर, बगहा एक पक्कीबावली मंदिर, बगहा दो अनुमंडलीय मैदान के प्रांगण में स्थित शिव मंदिर, अमलोरवा कुट्टी स्थित बाबा अमलेश्वर नाथ, हरीनाथ नाम टडवलिया, मउरही कुट्टी, सेमरा, सौरहा सहित सभी प्रखंडों में स्थित शिवालयों में पूजा-अर्चना को लेकर श्रद्धालुओं का तांता लगा था।श्रद्धालुओं के जयघोष में हर हर महादेव, हर हर महादेव, जय शिव शंकर की जय घोष से पूरा मंदिर भक्तिमय हो उठा.कई श्रद्धालुओं ने तो अपने परिवार के लोगों के साथ मंदिर के समीप स्थित तालाब या नदी में स्नान कर बाबा भोले का जलाभिषेक किया। गंडक पार के पिपरासी एवं मधुबनी प्रखंड के सभी शिवालयों में श्रद्धालुओं ने जलाभिषेक किया। पिपरासी के परसौनी, श्रीपतनगर , सौराहा चनकुहवा, मंझरिया एवं मधुबनी के तमकुही, दहवा, मधुबनी,धनहा सहित अन्य शिवालयों में श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना किया । आज से सावन माह का शुभारंभ हुआ है । जिसको लेकर बोल बम तथा जय भोले की जयकारे से शिवालय गूंज उठा ।

पंडित सुबोध मिश्रा ने बताया कि सावन के पहले दिन मंगलागौरी दिन है। इस दिन भगवान शिव के साथ मां पार्वती की पूजा का विधान है। इससे सौभाग्य की वृद्धि होती है। माता पार्वती ने भी शिव जी को पति के रूप में पाने के लिए सावन महीने में ही कठोर तप किया था तब उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान महादेव ने माता पार्वती को पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

स्ट्रेचर पर शव रख परिजनों ने किया यातायात अवरुद्ध

नरकटियागंज, प च : नगर के रेल ओवर ब्रिज पर देर रात सड़क दुघर्टना मे एक 38 वर्षीय युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान सोफवा वॉर्ड संख्या 4 के पूर्व वार्ड सदस्य बद्री महतो पिता सुरेश महतो के रुप मे हुई है। उधर परिजनों का आरोप है कि 10 दिन पूर्व भूमि विवाद के परिणामस्वरुप बद्री महतो को जबरन बुलाकर उसकी हत्या कर सड़क दुर्घटना का रुप दिया गया है। परिजनों ने पुलिस पर भी लापरवाही का आरोप लगाते हुए, मंगलवार पूर्वाह्न अनुमंडल अस्पताल के सामने स्ट्रेचर पर रखे शव के साथ नरकटियागंज मुख्य मार्ग का यातायात अवरुद्ध कर, इंसाफ की मांग किया। इसके पहले परिजनों ने अस्पताल से स्ट्रेचर पर शव को लेकर शिकारपुर थाना पहूंचे और आवेदन दिया। शव के साथ यातायात अवरुद्ध करने की सूचना पर प्रशिक्षु डीएसपी सह थानाध्यक्ष नवनीत कुमार अस्पताल के सामने पहुंचे और परिजनों को समझाबूझा कर अवरुद्ध यातायात प्रारम्भ कराया।

सहकारिता मंत्री का सर कलम करने पर 11 करोड़ का इनाम मामले का आरोपी गिरफ्तार

बेलागंज से 8 बार विधायक हैं बाहुबली सुरेंद्र यादव

समाज की बेटी करिश्मा कुमारी पर मंत्री द्वारा अमर्यादित टिप्पणी से आहत है राजपूत समाज : राठौड़

राष्ट्रीय खबर

पटना/गया : नीतीश सरकार के सहकारिता मंत्री एवं बेलागंज से राष्ट्रीय जनता दल के बाहुबली विधायक सुरेंद्र प्रसाद यादव को जान से मारने की धमकी मिली थी। एक सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से उनकी हत्या करने वाले को 11 करोड़ रुपये की राशि देने का ऐलान किया गया है।वहीं मंत्री ने इस मामले में 66 आईटी एक्ट और धारा 115 और 120 बी के तहत रामपुर थाने में नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई थी। आवेदन में जिक्र था कि जो सुरेंद्र प्रसाद यादव का सिर काटकर जो लाएगा, उसे 11 करोड का इनाम दिया जाएगा। इस संबंध

में मेरे द्वारा गया एसएसपी को लिखा गया है। इस तरह का पोस्ट से उन्हें हत्या की आशंका है। वहीं, परिवार और साथ में रहने वाले लोगों को भी जान का खतरा है। गया के दो सांसद ईश्वर चौधरी और राजेश कुमार की पूर्व में हत्या हो चुकी है। गिरफ्तार होने से पूर्व क्षत्रिय सेवा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष धनवंत सिंह राठौर ने पत्रकारों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि एक महिला पर मंत्री द्वारा आपत्तिजनक टिप्पणी के बाद लोकतंत्र का चारों स्तम्भ चुप है। आरोपी मंत्री पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस लिए हमने अपने पोस्ट में लिखा था, 'जो व्यक्ति इस कृत्य को अंजाम देगा, उसे 11 करोड़ रुपये की राशि इनाम स्वरुप दी जाएगी। मैं अपने वचन पर अटल हूँ। रामपुर थानाध्यक्ष रवि कुमार ने इस संबंध में बताया कि मंत्री को एक वीडियो पोस्ट कर सोशल मीडिया के माध्यम से क्षत्रिय सेवा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष धनवंत सिंह राठौर के द्वारा धमकी दिया गया था। इस घटना के पीछे बताया जाता है कि जदयू की महिला प्रदेश सचिव करिश्मा कुमारी को लेकर सहकारिता मंत्री सुरेंद्र प्रसाद यादव के आपत्तिजनक बयान से क्षत्रिय सेवा महासंघ के कार्यकताओं में नाराजगी है। इसी से आक्रोशित होकर यह पोस्ट किया गया है। मंत्री की शिकायत पर पुलिस प्राथमिकी दर्ज करने के बाद गिरफ्तारी की कार्रवाई की है।

भाजपा का व्यापक स्तर पर जन संपर्क अभियान जारी

रीगा : मंडल भारतीय जनता पार्टी दक्षिणी इकाई की ओर से आम मतदाताओं के बीच पार्टी का प्रचार एवं जनसंपर्क अभियान सोमवार को प्रारंभ किया गया। दक्षिणी मंडल अध्यक्ष नवीन कुमार गुप्ता के अध्यक्षता में इसका संचालन किया गया। भाजपा मंडल प्रभारी संजीव कुमार चौधरी ने कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत हाथों में आज देश सभी ओर से सुरक्षित है। अन्य देशों की तुलना में भारत आर्थिक रूप से काफी समृद्ध हुआ है। विगत 9 वर्षों में विकास के रिकार्ड काम किए गए हैं। कांग्रेस के 50 वर्षों के शासनकाल में देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं विदेश नीति काफी कमजोर थी। भारत का विश्व में कोई पहचान नहीं था। लेकिन आज भारत के प्रधानमंत्री या कोई भी प्रतिनिधि का विदेशों में भव्य स्वागत हो रहा है। मौके पर जनसंपर्क अभियान में संजीव कुमार चौधरी, नवीन कुमार गुप्ता, महेंद्र राम, कुनकुन माझी, दिलचंद महतो, लालबाबू प्रसाद आदि उपस्थित थे।

ई-शिक्षा कोष से शिक्षकों की केवल हाजिरी ही क्यों, समस्याओं का भी हो समाधान : महासंघ

मोतिहारी पू चं : अपने नए-नए अनोखे आदेशों से चर्चा मे रहने वाला शिक्षा विभाग एक बार पुनः चर्चा में है। शिक्षा विभाग के अपर परियोजना निदेशक ने एक फरमान जारी किया है कि शिक्षकों को अपने स्मार्ट फोन से स्वयं अपनी उपस्थिति दर्ज करनी है। इसके लिए शिक्षा विभाग ने एक ई-शिक्षा कोष नाम से ऐप लांच किया है। इस ऐप से राज्य के प्रत्येक प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को टैग कर दिया गया है। इन विद्यालयों मे पदस्थापित सभी शिक्षक विद्यालय परिधि मे रहकर ही आने जाने का ससमय उपस्थिति दर्ज करेंगे। बिना किसी ठोस तैयारी एवं तकनीकी प्रशिक्षण के बगैर थोपे गए फरमान से शिक्षकों मे आक्रोश व्याप्त है।परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ ने विभाग के इस फरमान का विरोध करते हुए कहा है कि सरकार ने शिक्षकों को बिना शर्त राज्य कर्मी का दर्जा देने व डोमिसाइल लागू करने जैसे महत्वपूर्ण मांग से ध्यान भटकाने के उद्देश्य से इस तरह का फरमान जारी किया है। प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने कहा कि स्मार्ट फोन से उपस्थिति दर्ज करने के लिए विभाग पहले शिक्षकों को स्मार्ट फोन उपलब्ध कराकर विधिवत तकनीकी प्रशिक्षण दे। साथ ही डाटा खर्च के लिए भत्ता भी दे।

रंगदारी का आरोपी बसंतपुर से गिरफ्तार

बेतिया, प च : जिला अंतर्गत मैनाटांड़ थाना की पुलिस ने बसंतपुर गांव में छापामारी कर रंगदारी के मामला के आरोपी को गिरफ्तार किया है। मैनाटांड थानाध्यक्ष राजीव रंजन सिन्हा के अनुसार बसंतपुर के किशोरी साह को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। उसपर इंड्स टावर के पदाधिकारी ने प्राथमिकी दर्ज

गन्ना के खेत से मिला गायब युवती का शव, ससुराल पक्ष से था अनबन

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जीएमसीएच भेजा

राष्ट्रीय खबर

बेतिया/लौरिया रा टी : थाना क्षेत्र के बगही देवराज में अदालत हुसैन हाई स्कूल के पीछे गन्ना के खेत में एक युवती का शव बरामद होने से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि युवती का दोनों हाथ पीछे कर बंधा हुआ देखा गया।उसके गले पर निशान, देखा गया, प्रथम द्दष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि युवती की हत्या अन्यत्र कर साक्ष्य छुपाने के उद्देश्य से शव स्कूल के पीछे गन्ना के खेत में फेंक दिया गया। युवती की पहचान बगही गांव के वार्ड 3 निवासी

शमशुदीन अंसारी की (25 वर्षीया) पुत्री नजराना खातून के रूप में हुई है। उसकी शादी 2019 में साठी थाना के लछनौता के धुरकुली मियां के पुत्र अबरार मियां से हुई। नजराना तीन माह पूर्व अपने मायके आई, उसका ढ़ाई वर्ष का एक पुत्र नासिर भी बताया गया है। इधर चर्चा सर्वत्र है कि ससुराल में उसका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं, जबकि उसकी मौत मायके में हुई है। पुलिस हत्या के कारणों का पता लगा रही है। पुलिस इस हत्या की गुत्थी सुलझाने में लगी है। इस बाबत युवती के पिता शमसुद्दीन ने बताया कि वह बगीचा में आम की रखवाली कर रहा था तभी बगीचा मालिक ने उन्हें फोन कर घर बुलाया और कहा कि तुम अभी घर जाओ। मुझे कुछ अटपटा लगा और कुछ अनहोनी की आशंका को लेकर घर पहुंचा, जहां मुझे खबर मिली कि बेटी का शव खेत में पड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी सोमवार को 11 बजे दिन में घर से निकली, शाम में पुत्री का शव देखकर वे सन्न रह गए। इस बाबत थानाध्यक्ष कैलाश कुमार ने बताया कि युवती के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। सभी पहलुओं की जांच की जाएगी। लौरिया थानाध्यक्ष कैलाश कुमार ने बताया कि सूक्ष्म अनुसंधान कर हत्या के कारणों का पता लगाया जाएगा। हत्यारे गिरफ्तार कर न्यायालय को सौंपे जाएंगे।

रिहायशी क्षेत्र में पहुंचे मगरमच्छ का रेस्क्यू कर गंडक में छोड़ा

राष्ट्रीय खबर

बगहा : वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के मदनपुर वन क्षेत्र अंतर्गत गोबरहिया गांव के नवका टोला स्थित एक घर के पिछे खेत मे करीब 6 फीट लंबे मगरमच्छ के आने से लोगों में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों ने इसकी सूचना तुरंत मदनपुर वन क्षेत्र कार्यालय को दी। सूचना को गंभीरता से लेते हुए वन विभाग की टीम गांव में पहुंचीं और ग्रामीणों की मदद से मगरमच्छ का रेस्क्यू कर लिया गया। मदनपुर वन प्रक्षेत्र के प्रभारी वन क्षेत्र अधिकारी अवधेश कुमार सिंह ने बताया कि गांव में मगरमच्छ आने की सूचना ग्रामीणों द्वारा मिली। इस सूचना को गंभीरता से लेते हुए रामपुर वन परिसर के वनपाल राजेश रौशन के नेतृत्व में वन कर्मियों की टीम द्वारा घटनास्थल पर पहुंचकर मगरमच्छ का रेक्स्सू किया गया। उन्होंने बताया कि रेक्स्सू किया गया मगरमच्छ को गंडक नदी में छोड़ दिया गया।

पैक्स चुनाव : छः पदों के लिए 10 लोगों ने भरे नामांकन पर्चे

राष्ट्रीय खबर

सुगौली, पू.च. : प्राथमिक कृषि साख समिति (पैक्स) गठन को लेकर होने वाले चुनाव के लिए नामांकन के दूसरे और अंतिम दिन अध्यक्ष पद के लिए 2 और सदस्य पद के लिए कुल 8 सहित 10 लोगो ने अपने नामांकन का पर्चा दाखिल किया है। प्रखंड विकास पदाधिकारी सह निवार्ची पदाधिकारी तेज प्रताप त्यागी के हवाले से प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी सह उप निर्वाचि पदाधिकारी प्रियरंजन ने बताया कि पैक्स के गठन के लिए कुल 6 पदो पर चुनाव होना है। पश्चिमी भाग के पैक्स के अध्यक्ष पद के लिए प्रदीप कुमार और श्याम शर्मा ने अपना नामांकन का फार्म भरा है। सदस्य के सामान्य, पिछड़ा, अत्यन्त पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति पद पर कुल 8 लोगों ने अपना नामांकन भरा। जिसमें अनिल चौधरी, शशिकांत भगत, रीना देवी, मुकेश चौधरी, नारायण कुमार, मालती देवी, शोभा देवी, पुरषोत्तम लाल शर्मा, सत्यनारायण प्रसाद और प्रभु राय ने अपना नामांकन कराया। उन्होंने बताया कि इस चुनाव के लिए पूर्व में भरे गए सभी नामांकन वैध पाए गए हैं। उप निर्वाचि पदाधिकारी ने बताया कि अब भरे गए नामांकन के पर्चे की जांच की जाएगी जिसके बाद चुनाव की अगली प्रक्रिया की जाएगी।

रंगे हाथ भैंस चोर गिरफ्तार

बैरिया,प च : थाना क्षेत्र के तधवानंदपुर से भैंस चोरी कर ले जा रहा पशु चोर को गिरफ्तार किया गया है। थानाध्यक्ष प्रणय कुमार ने बताया कि गिरफ्तार हरिओम मिश्र सुगौली थाना क्षेत्र के छपवा निवासी है। जिसे पुलिस ने न्यायालय को सुपुर्द कर दिया है। बताया जाता है कि तधवानंदपुर निवासी बिन्दा प्रसाद के दरबाजे भैंस गायब होने के बाद खोजबीन शुरू की गई। तभी, मलकौली के रास्ते वह भैंस ले जाते देखा गया, जब लोगो को देख चोर भैंस छोड भागने लगा, परंतु लोगो ने उसे खदेडकर पकड लिया। उसके बाद पुलिस के हवाले कर दिया।

सफाई कर्मी की मौत पर शोकसभा आयोजित

बेतिया : जिला के नगर पंचायत चनपटिया कार्यालय के सभागार में मंगलवार को एक सफाईकर्मी की मौत हो गई। जिसको लेकर शोकसभा कर मृतक के प्रति संवेदना व्यक्त की गई। मृतक की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण किया गया। इस दौरान ईओ लक्ष्मण प्रसाद ने कहा कि सफाईकर्मी श्यामलाल हरिजन काफी मिलनसार स्वभाव के रहे। वे पिछले कई माह से बीमार चल रहे थे। इसी बीच सोमवार की देर शाम उनका आकस्मिक निधन हो गया। शोक सभा में ईओ लक्ष्मण प्रसाद, जेई मनीष कुमार, पार्षद विनय उर्फ उज्जवल जायसवाल, विवेक कुमार, प्रधान सहायक धर्मेंद्र कुमार, नपं कर्मी अभिषेक मिश्रा, मनोज कुमार, बृजेश कुमार यादव, संजय पाण्डेय, कपिलदेव प्रसाद, गुलशन कुमार, राहुल कुमार, आदर्श कुमार आदि शामिल रहे।

चार दिवसीय संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक का श्रीगणेश

नवीनतम शोध को मूर्त रूप देने को कृषि वैज्ञानिकों का हुआ जमावड़ा

राष्ट्रीय खबर

पटना : राजधानी स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर में 04 जुलाई से चार दिवसीय संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक का श्रीगणेश हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ. अनुप दास की अध्यक्षता में यह बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक की शुरूआत डॉ. अभय कुमार, प्रभारी पीएमई प्रकोष्ठ के स्वागत भाषण से किया गया। जिसके बाद प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शिवानी ने संस्थान में प्रगतिशील परियोजनाओं से संबंधित कृत कार्रवाई पर एक प्रस्तुति दी। इस दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली से डॉ. राजबीर सिंह, सहायक महानिदेशक आभासी

माध्यम से इस बैठक में जुड़े रहे। अटारी, पटना के निदेशक डॉ. अंजनी कुमार ने भी इस बैठक में अपने विचार व्यक्त किए। बैठक के दौरान विभिन्न केन्द्रों के अध्यक्ष, विभागाध्यक्ष एवं 70 से अधिक वैज्ञानिकों ने आगामी शोध की दशा और दिशा तय करने के लिए अपने-अपने विचार व्यक्त किए। राँची अवस्थित संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र कृषि प्रणाली का पहाड़ी एवं पठारी अनुसंधान केन्द्र, पटना मुख्यालय के फसल अनुसंधान प्रभाग, भूमि एवं जल प्रबंधन प्रभाग, अग्रिन्नोवेट इंडिया, नई दिल्ली, पशुधन एवं मात्स्यिकी प्रबंधन प्रभाग, सामाजिक-आर्थिक एवं प्रसार प्रभाग के प्रगतिशील परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषकों/सह-प्रधान अन्वेषकों द्वारा प्रस्तुति दी गई। ज्ञात हो कि यह संस्थान पूर्वी क्षेत्र के लिए भूमि और जल ससांधनों के प्रबंधन, खाद्यान्न, बागवानी, मात्स्यिकी, पशुधन और कुक्कुट, कृषि प्रसंस्करण तथा सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर अनुसंधान कार्य करा रहा है। जिसमें संस्थान मुख्यालय सहित इसके रांची, रामगढ़ और बक्सर अवस्थित अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकगण भाग ले रहे हैं, जिसमें प्रगतिशील परियोजनाओं पर समीक्षा की जाएगी एवं नए शामिल किए जाने वाले परियोजनाओं पर रणनीति बनाई जाएगी। डॉ. शिवानी, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन हुआ।

युवक के चेहरे को पत्थर से चूर कर मौत के घाट उतारा

गया : जिला में मानवता को दरकिनार कर अपराधियों ने एक युवक को पत्थर से कुचल कर मार डाला। कोतवाली थाना क्षेत्र के रामशिला पहाड़ी का रहने वाला 22 वर्षीय राजा कुमार को अज्ञात अपराधियों ने मौत की नींद सुला दी। घटना के संबंध में बताया जाता है कि सोमवार की रात गया-पटना रोड पर स्थित चिल्ड्रन पार्क के पास अज्ञात हमलावरों ने सिर को पत्थर से कुचल कर हत्या कर दी। सुबह में चिल्ड्रन पार्क में घूमने वाले लोगों ने शव को देखा तो इसकी सूचना पुलिस को दी। इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गई।आनन-फानन में पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेज दिया। घटना का कारण पुरानी रंजिश बताया जा रहा है। बीते कुछ वर्ष पहले ही इनके भाई की हत्या हुई थी। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को शव सौंप दिया। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। इधर मृतकों के परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। मंगलवार को दोपहर बाद विष्णुपद स्थित श्मशान घाट में अंत्येष्टि की गई।

जिलाधिकारी के निर्देश के बाद फ्लड फाईटिंग का कार्य शुरू

राष्ट्रीय खबर

बगहा : गंडक के जलस्तर में उतार-चढ़ाव के बीच बगहा के शास्त्री नगर में नदी का कटाव शुरू हो गया है। जिसके बाद स्थानीय लोगों में दहशत का माहौल है। मंगलवार के दिन बेतिया जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा मौके पर पहुंच कर स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के बाद डीएम ने तत्काल फ्लड फाइटिंग कार्य युद्ध स्तर पर करने का निर्देश दिया गया जिसके पश्चात जल संसाधन विभाग द्वारा नदी के दबाव वाले बिंदुओं पर कटाव निरोधी कार्य शुरू कर दी गई। हालांकि पूर्व में भी करीब 9 करोड़ की लागत से बांध बनाकर इस मोहल्ले को सुरक्षित

करने की कोशिश की गई थी, लेकिन नदी की परिवर्तित धारा धीरे-धीरे दबाव बनाकर कराए गए कार्यों को ध्वस्त कर रही है।

जल संसाधन विभाग के सहायक अभियंता विकास कुमार ने बताया कि पूर्व में कराया गया एंटीरोजन कार्य थोड़ा ध्वस्त हो रहा है, उसी डैमेज को कंट्रोल करने में विभाग के लोग लगे हैं। बालू से भरी हुई बोरी को डाला जा रहा है, स्थिति सामान्य है। वरीय पदाधिकारियों को इसकी सूचना दे दी गई है। नदी का जलस्तर अभी कम है। नदी का जलस्तर जब काम होता है तो गंडक कटाव करती है। कटाव की स्थिति नहीं है। सिर्फ एंटीरोजन काम दब रहा है।

राजगीर में बसपा का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू, राष्ट्रीय नेताओं की होगी शिरकत

- भाजपा का एकमात्र विकल्प बसपा और बहन मायावती हैं : अनिल कुमार
- विपक्षी एकता है एक शिगूफा मात्र : सांसद

राष्ट्रीय खबर

राजगीर/पटना : बहुजन समाज पार्टी, बिहार के तत्वाधान में तीन दिवसीय राज्यस्तरीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद रामजी गौतम एवं प्रदेश प्रभारी अनिल कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए प्रदेश प्रभारी श्री कुमार ने कहा कि यह प्रशिक्षण शिविर कई मायनों में महत्वपूर्ण है, इसमें देशभर से बहुजन समाज पार्टी के कई एक्सपर्ट प्रशिक्षक आ रहे हैं। इस प्रशिक्षण शिविर में बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के सपनों का भारत, मान्यवर कांशीराम की विचारधारा, बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा, बूथ लेवल मेनेजमेंट, लोकसभा चुनाव में बिहार के प्रत्येक सीट पर मजबूती से लड़कर जीत हासिल करने और लोकसभा चुनाव में बहन मायावती को प्रधानमंत्री बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बीजेपी का एकमात्र विकल्प बसपा है। देश अक्षरशः संविधान से चलेगा और धर्म व नफरत की झूठी राजनीति का अंत होगा। राज्यसभा सांसद रामजी

गौतम ने कहा कि बसपा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता इस प्रशिक्षण शिविर को लेकर काफी उत्साहित हैं। देश के संविधान से मिलने वाले अधिकार और चुनाव की रणनीति पर तीन हजार कार्यकताओं को प्रशिक्षण मिलेगा, ताकि साल 2024 का लक्ष्य को पाने की दिशा में तेजी से अग्रसर हुआ जा सके। उन्होंने कहा कि बाबा साहब एवं कांशीरामजी के विचारधारा को लेकर हमलोग जन जन तक पहुंचने का हमारा लक्ष्य है। आज देश एवम प्रदेश जिस अवस्था से गुजर रहा है। गरीबों, किसानों, मजदूरों, शोषितों, वंचितों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों को न्याय की बात तो दूर उनकी बातों को सुना भी नहीं जा रहा है। इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से वोट हमारा राज तुम्हारा, नही चलेगा नही चलेगा के नारे को चरितार्थ करने का उद्देश्य है जिसमें हमलोग निश्चित रूप से कामयाब होंगे। इस मौके पर केंद्रीय प्रदेश प्रभारी लालजी मेघानकर, केंद्रीय प्रदेश प्रभारी सुरेश राव, प्रदेश अध्यक्ष शंकर महतो, प्रदेश उपाध्यक्ष सकलदेव दास, प्रदेश महासचिव संजय मंडल, डॉ रंजन पटेल, अमर आजाद, मुख्य सेक्टर प्रभारी ई सुनेश कुमार, अरुण कुमार, धर्मेंद्र साहनी, कुणाल किशोर विवेक, प्रमोद निराला के साथ हजारों कार्यकर्ता एवं पधाधिकारी गण मौजूद थे।

विधायक डॉ प्रेम कुमार ने महिला मोर्चा के कार्यालय का किया उद्घाटन

महिलाएं एकजुट होकर पीएम के हाथों को बनाएं मजबूतः डॉ करुणा

राष्ट्रीय खबर

गया : पूर्व मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने मंगलवार को केंदुई स्थित गया जिला भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्षा डॉ करुणा कुमारी के आवास पर महिला मोर्चा के कार्यालय कक्ष का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस दौरान महिला मोर्चा की अध्यक्ष डॉ करुणा कुमारी ने मंचासीन सभी भाजपा नेताओं को पुष्पगुच्छ और अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महिलाओं के मजबूती और सशक्तिकरण के लिए कार्यालय खोला गया है ताकि महिलाओं को केंद्र सरकार के 9 वर्षो की कार्यकाल की जानकारी प्राप्त हो सके। उन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में महिला मोर्चा की पदाधिकारियों और कार्यकताओं से मोदी सरकार के 9 साल बेमिसाल के तहत कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने महिलाओं के सम्मान में कई बड़े जन कल्याणकारी योजनाओं को लाया है। जिसका सीधा लाभ महिलाओं को पहुंच रहा है। आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। हमारी सरकार महिलाओं के लिए उज्जवला योजना जनधन खाते, मुद्रा लोन योजना, लाडली योजना, सुकन्या योजना जैसे कई योजनाओं को आम जनों तक पहुंचा कर महिलाओं और युवतियों को सशक्त किया है। केंद्र की मोदी सरकार ने संवैधानिक पद राष्ट्रपति के पद पर बैठाकर महिलाओं को सम्मान दिया है। राष्ट्रपति से लेकर डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस आईपीएस तक महिलाओं ने परचम लगाया है। पूर्व मंत्री ने महिलाओं को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से लाभ लेने की अपील करते हुए कहा कि आने वाले समय में महिलाओं के कल्याण के लिए सरकार हर कदम प्रयास करेगी। नारी कल ही भारी थी। आज भी भारी है पुरुष कल आभारी था। पुरुष आज भी आभारी है। क्योंकि महिलाओं के बगैर खूबसूरत दुनिया हो ही नहीं सकती। जिला अध्यक्ष डॉ करुणा सिंह ने कहा कि आधी आबादी के बगैर सशक्तिकरण असंभव है।महिलाओं के सशक्तिकरण और मजबूती के लिए मोदी सरकार कृत संकल्पित है। हम सब महिलाओं को एकजुट होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत बनाना होगा तभी आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव में केंद्र में हमारी सरकार बनेगी। महिलाओं के हित पूर्ति के लिए केंद्र के जनकल्याणकारी योजनाओं से सभी को जानने की आवश्यकता है। उन्होंने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए मुद्रा लोन योजना के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर भाजपा महिला मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष निकिता रजक, राखी सेठ,संजय सिंह, विभा कुमारी, जिला मंत्री नगीना देवी, अमित लोहानी, प्रेमसागर, विनय जैन,नीरज कुमार, आनंद सिंह, पश्चिमी महिला मंडल की अध्यक्षा इंदू प्रजापति,निशा नंदन,राम पुकार सिंह, विमला कुमारी अनुराधा कुमारी सहित बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल थी।

भारी मात्रा में कस्तूरी शराब लदी कार जब्त, तस्कर फरार

मझौलिया, प.च. : स्थानीय पुलिस ने मंगलवार की सुबह रुलही गांव निवासी चंद्रिका राम के घर के सामने सड़क पर एक इंडिका कार बरामद किया। जिसकी तलाशी लेने पर 5 बोरे में रखे 578 नेपाली कस्तूरी शराब बरामद किया गया, जिसे पुलिस ने जब्त कर ली। दरअसल, पुलिस की भनक लगते हीं चालक के साथ एक अन्य व्यक्ति फरार हो गया। उपर्युक्त जानकारी इंस्पेक्टर सह थानाध्यक्ष अभय कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि मामले में चालक मुकेश साह पिता विजय साह रुलही व एक अन्य सिपाही सहनी पिता भिखारी सहनी सेनवरिया नया टोला के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज किया गया है। 578 पीस नेपाली कस्तूरी शराब कुल लगभग 174 लीटर बताया गया है।

पुलिस ने एक शराब कारोबारी व दो शराबियों को किया गिरफ्तार

बगहा : पुलिस जिला के नगर थाना की पुलिस ने थाना क्षेत्र के चखनी वार्ड नं पांच से एटपीएम फ्रुटी अंग्रेजी शराब के साथ एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया है। पुलिस इन्स्पेक्टर सह नगर थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिन्हा ने बताया कि बगहा पुलिस गश्ती में थी , तभी थाना क्षेत्र के चखनी वार्ड संख्या 5 से अंग्रेजी शराब के साथ प्रमोद कुमार, पिता-बेचू साह को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि शोर शराबा करते हुए दो नशेड़ियों को गिरफ्तार किया गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि थाना क्षेत्र के मिथलेश कुमार बनकटवा व विकास राम को गांधीनगर निवासी को गिरफ्तार किया गया। जो नशे में धुत होकर शोर-शराबा कर रहा था। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार धंधेबाज व दोनों नशेडिों के विरुद्ध बिहार उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज करते हुए मंगलवार को न्यायिक हिरासत में बगहा भेजा गया।

विभिन्न मांगों को लेकर बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ ने किया प्रदर्शन

राष्ट्रीय खबर

बेतिया : विभिन्न मांगों को लेकर बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ बेतिया ने मंगलवार को होगा प्रदर्शन किया। उपर्युक्त जानकारी संतोष प्रसाद ,बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ जिला शाखा पश्चिमी चंपारण ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन के दौरान दिया। उपर्युक्त प्रदर्शन के दौरान उपस्थित कर्मियों को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि भारतीय राज्य कर्मचारी महासंघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी, बिहार राज्य राज्य कर्मचारी महासंघ बिहार पटना के राज्य कर्मियों की बैठक में लिए गए निर्णय अनुसार पुरानी पेंशन बहाल करने, ठेका संविदा समाप्त करने, संविदा पर बहाल कर्मी को नियमित करने, वेतन पुनरीक्षण समिति का गठन करने, 18 माह से बकाया महंगाई भत्ता का भुगतान करने जैसे मांगों को पूर्ति के लिए मंगलवार को जिला स्तर पर जिला पदाधिकारी के समक्ष राष्ट्रीय परिवाद मार्च आयोजित करते हुए मांग पत्र मुख्यमंत्री को समर्पित किया गया। जिसके आलोक में श्री प्रसाद ने जिला पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान राहुल, सुनीता कुमारी, एवं बहुत कर्मचारी मौजूद रहे।

निद्रामग्न धर्म प्रचारक पर धारदार हथियार से जानलेवा हमला, जख्मी हालत में इलाज जारी

गांव में अपराधियों ने 10 से 12 राउंड की हवाई फायरिंग

राष्ट्रीय खबर

गया : ज्ञान व मोक्ष की भूमि गया ज़िले के पंचानपुर ओपी क्षेत्र में एक धर्म प्रचारक पर जानलेवा हमला करने की घटना प्रकाश में आई है। ऐतिहासिक विष्णु पंचायतन मंदिर परिसर रामेश्वरबाग में दिव्य चातुर्मास व्रतानुष्ठान सह श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ पूज्य पाद श्री श्री 1008 स्वामी धरणिधाराचार्य जी महाराज के परम शिष्य अंतरराष्ट्रीय धर्म प्रचारक श्री वैष्णव सिद्ध पीठ नरहट के पीठाधीश्वर स्वामी रंगनाथाचार्य जी के नेतृत्व में बीते 29 जून से आयोजन हो रहा है जो आगामी चार माह तक चलेगा।

बीते 2 जूलाई स्वामी रंगनाथाचार्य दैनिक प्रवचन के बाद अपने विश्रामगृह में सोये हुये थे। मध्य रात्रि में करीब 12 बजे रात्रि में अज्ञात लोगों द्वारा धारदार व जान घातक हथियार से सिर पर जानलेवा प्रहार किया गया। स्वामी द्वारा जब शोर किया गया तो आसपास के सेवक व समर्थक व भक्तजन जागे एवम शोर मचाए तब तक सभी अपराधी 10 से 12 राउंड गोलीबारी किए। जिससे सेवक एवम धमार्नुरागी इधर-उधर भागे तथा रॉड के जानलेवा हमला से स्वामी जी का सिर फट गया जिन्हे लेकर लोग पंचानपुर के तरफ भागे। इसी बीच अपराधियो द्वारा महायज्ञ स्थल पर खड़ी गाड़ी एक्सयूवी में टायर पर कुछ ज्वलनशील पदार्थ रखकर आग लगाया। त्वरित सूचना से आस पास के ग्रामीण जुटे जिससे अपराधी फायरिंग करते हुए भागे करते हुये भाग गये। अपराधियों की गोलीबारी से सभी दहशत में है। स्वामी जी का प्राथमिक उपचार पंचानपुर में निजी चिकित्सक के यहां कराया गया। जिसके बाद टेकारी रेफरल अस्पताल में इलाज हुआ जिसमे सिर में सात टांके लगाए गए। विशेषज्ञ चिकित्सकों ने स्वामी रंगनाथाचार्य जी का सीटी स्कैन कराया है और कम से कम एक सप्ताह के चिकित्सा लाभ का सुझाव दिया है। महायज्ञ समिति की ओर से थाना में अज्ञात लोगों के खिलाफ जानलेवा हमला करने व गोलीबारी करने का मामला पंचानपुर ओपी में दर्ज किया गया है।

चोरी की दो बाइक से नेपाल की यात्रा करने वाले गिरफ्तार, 98.4 हजार भारतीय मुद्रा बरामद

राष्ट्रीय खबर

बेतिया : सशस्त्र सीमा बल ने भारत-नेपाल सीमा के भंगहा थाना क्षेत्र अंतर्गत पचरौता बीओपी क्षेत्र में चोरी की बाइक से नेपाल की यात्रा करने वाले दो व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। दोनो व्यक्ति से भारी मात्रा में इंडियन करेंसी भी बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष नवीन कुमार ने बताया कि पचरौता एसएसबी ने 98,400 भारतीय रुपये के साथ दो व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उनसे बरामद बाइक की जांच में दोनों बाइक की कोई कागजात नहीं बताया गया। पुलिस ने सत्यापन में दोनों बाइक चोरी का बताया। जब्त दोनों बाइक में एक सिवान निबंधित नंबर और दूसरा बेतिया निबंधित है। पुलिस के अनुसार दोनों चोरी की बाइक को नेपाल में खपाने के लिए ले जा रहे थे। जाने के क्रम में जांच के दौरान पचरोता बीओपी एसएसबी के हत्थे चढ़ गये। एसएसबी की गिरफ्त में आए दोनों युवक उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिला अंतर्गत सजिया सुजान थाना क्षेत्र के अहिरौली दान गांव निवासी तूफानी यादव और हरेंद्र सिंह है। तूफानी के पास से भारतीय करेंसी 48,400 रुपये और हरेंद्र सिंह के पास 50,000 रुपये बरामद हुई है। नियम के अनुसार 25,000 रुपये से अधिक बिना अनुमति के भारत से नेपाल में नहीं ले जाना है। इसलिए पचरौता एसएसएबी ने करेंसी जप्त कर लिया है। थानाध्यक्ष श्री कुमार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों व्यक्ति के विरुद्ध पचरौता एस एसएबी के मुख्य जीडी संतरी संजू कुमार तिवारी के शिकायत पर कांड दर्ज कर न्यायालय को सुपुर्द कर दिया गया है।

गुरु पूर्णिमा को लेकर पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न

राष्ट्रीय खबर

ह. खड़गपुर : नगर के गायत्री शक्तिपीठ में गुरु पूर्णिमा को लेकर पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सोमवार को किया गया। परिव्राजक आशुतोष शर्मा ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ कर्मकांड को संपन्न कराया। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन में एक गुरु अनिवार्य रूप से रहना चाहिए। जो हमें धैर्य ध्यान ज्ञान के साथ मानवीय जीवन के मूल्य मान्यताओं का संवर्धन करते हैं। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव पंडित तपोनिस्ट श्री राम आचार्य शर्मा गायत्री परिवार के संस्थापक हैं। उन्होंने अपने जीवन में कठोरता एवं दूसरे के जीवन में उदारता के भाव से आज 20 करोड़ से अधिक गायत्री परिवार संगठन के रूप में उनके अनुनाई है। उन्होंने कहा कि मुख्यालय शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन से क्षेत्र में रचनात्मक एवं सामाजिक गतिविधियां चलाया जा रहा है। मानव में देवत्व और धरती पर स्वर्ग के अवतरन संकल्प के विचार को हर घर में स्थापित हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विद्या चरण सिंह ने कहा कि गुरु के बताए हुए संकल्प समय दान और अंशदान को जीवन में आत्मसात बनाए रखने की जरूरत है। इस अवसर पर सुनील कुमार साह, अनुपम कुमार ,ललन कुमार ,पुरुषोत्तम कुमार, विपिन कुमार साहा, अंकित कुमार ,प्रतिमा भारती, माला देवी, मीतू देवी ,महेश पोद्दार आदि दर्जनों गायत्री परिवार उपस्थित थे ।

सावान में बन रहे कई महायोग शश, लक्ष्मी नारायण, गजकेसरी और बुधादित्य योग : स्वामी जी

राष्ट्रीय खबर

मोतिहारी पू चं: हर वर्ष आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। इस साल गुरु पूर्णिमा का महापर्व सोमवार, 03 जुलाई 23 को मनाया गया। बताते चले की शहर के ख्याति प्राप्त ज्योतिषाचार्य दीपक चतुर्वेदी (स्वामी जी) के छोटा बरियारपुर स्थित आवास पर भक्तो ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्री स्वामी जी का आशिर्वाद लिया। गुरु पूर्णिमा की छटा उनके आवास पर देखते ही बन रही थी। श्री स्वामी जी ने कहा की ज्योतिषों के अनुसार, इस बार सावन का महीना 4 जुलाई 2023 से शुरू होने जा रहा है और 31 अगस्त, 2023 को समाप्त होगा। 59 दिनों के इस सावन महिने में शश योग, गजकेसरी योग, बुध व शुक्र के संयोग से लक्ष्मी नारायण योग और सूर्य व बुध की युति से बुधादित्य राजयोग का निर्माण हो रहा है। सावन माह में एक साथ इतने योग बनना दुर्लभ माना जाता है। इससे कई राशियों को धन, नौकरी, करियर और बिजनेस में लाभ के योग है। सावन के महीने में मिथुन राशि, सिंह राशि, तुला राशि, धनु राशि और मीन राशि के जातकों पर भगवान शिव की विशेष कृपा बनी रहेगी। इस बार सावन का महीना 5 राशि के जातकों के लिए विशेष होने वाला है। पांच राशियों वाले जातक के लिए सावन का महीना भाग्यशाली रहेगा सावन। वही वृषभ राशि के जातकों के लिए सावन का महीना बहुत शुभ है। उन्हें कई अवसर मिलेंगे जो पेशेवर क्षेत्र में उनके विकास में सुधार करेंगे। जहां तक उनके निजी जीवन की बात है, वे किसी ऐसे व्यक्ति से मिल सकेंगे जो उन्हें प्यार और रिश्तों की वास्तविक क्षमता का एहसास कराएगा। मिथुन राशि वालों के लिए सावन का महीना बहुत भाग्यशाली रहेंगे। उनकी कड़ी मेहनत आखिरकार रंग लाएगी और वे रोजमर्रा की भागदौड़ से दूर कुछ फुर्सत के पल निकाल सकेंगे। वे अपने प्रियजनों को आवश्यक ध्यान देने में सक्षम होंगे। सिंह राशि के जातकों को सावन का महीना उत्कृष्ट अवसर प्रदान करेगा। इन भाग्यशाली आकर्षणों को हासिल करना उन पर निर्भर है। वे अपना पूरा ध्यान उन छोटे-छोटे संकेतों की पहचान करने पर देंगे जो उन्हें अपने साथी के साथ एक सफल जीवन की ओर ले जा सकते है। सावन के महीने में तुला राशि वालों का भाग्योदय होगा। जीवन के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे जो उनके जीवन की दिशा तय करेंगे। अगर वे अपनी ऊर्जा सही जगह पर लगाएंगे तो उनके जीवन में प्यार और इच्छा के लिए बहुत जगह होगी। धनु राशि वालों के लिए नौकरी के अवसरों की भरमार रहेगी। अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन पर अधिक ध्यान केंद्रित करें। उनके पास ढेर सारा धन, सफलता और समृद्धि होगी और उन्हें कभी भी अपने रास्ते में किसी भी बाधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

वन विभाग व शूरवीर फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से मनाया वन महोत्सव

राष्ट्रीय खबर

मधुबनी/ बगहा : यूपी बिहार सीमा के बांसी घाट स्थित बिशुनपुरा ब्लाक के गंभीरिया गांव में वन विभाग व शूरवीर फाउंडेशन संस्था की तरफ से सोमवार देर शाम में वन महोत्सव मनाया गया। इस दौरान उक्त गांव के मनरेगा पार्क व बांसी नदी राम घाट पर पौधारोपण किया गया। साथ ही नदी घाट की साफ सफाई किया गया। इस दौरान वन विभाग के दरोगा रामध्यान पांडेय शूरवीर संस्था की अध्यक्षा पूर्णिमा पांडेय ने संयुक्त रूप से बताया कि वन महोत्सव के दौरान फलदार पेड़ लगाये जा रहे हैं। जिससे आम लोगों को सेहत के साथ फल की प्राप्ति होगी। साथ ही कहा कि जिस तरह से आज के परिवेश में वायुमंडल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा लगातार बढ़ रही है. जिससे मानव जीवन पर खतरा मंडराने लगा है। इसको देखते हुये इस बेहतर कार्य का शुभारंभ किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों से विनम्र अपील करते हुये कहा कि प्रत्येक परिवार के सदस्यों को जिम्मेदारी के साथ एक एक फलदार पेड़ लगाकर अपनी जीवन के मूल्यों की रक्षा करें। इस दौरान अभिनव पाठक, सुनील भाटिया के तरफ से आम, निम, पीपल, अमरूद ,सागवान समेत कई प्रजातियों के पौधे लगाए गये. इसके बाद पौधारोपण करने और उसके संरक्षण के लिए शपथ दिलायी गयी। इस दौरान ग्राम प्रधान बबलू कुशवाहा कांस्टेबल संदीप, हेमंत गोपाल दास, खुर्शीद आलम, हेमंत मिश्रा, नवीन पांडेय, अनुराग मिश्रा,दिव्यांशु पांडेय,सुजल ,मुकेश गुप्ता, स्वेता सिंह आदि मौजूद रहे।

संपादकीय

चुनावी राजनीति के अखाड़े में टमाटर और हरी मिर्च

राजनीतिक दल अगले साल के लोकसभा चुनाव के लिए मोचार्बंदी कर रहे है। दूसरी तरफ भारतीय जनता महंगाई से जूझ रही है। इस बात को समझना होगा कि कई अवसरों पर आम जनता के ऐसे मुद्दे ही तमाम किस्म की राजनीतिक सोच पर भारी पड़ जाते हैं क्योंकि इसका जनता और घर के बजट से सीधा रिश्ता होता है। भारतीय परिवार टमाटर, प्याज और आलू से लेकर अरहर दाल और चावल तक, रसोई के आवश्यक सामानों की कीमतों में तेज वृद्धि से निपटने के लिए खुद को एक बार फिर संघर्ष कर रहे हैं। उपभोक्ता मामले विभाग के मूल्य निगरानी प्रभाग के आंकड़ों से पता चलता है कि टमाटर की कीमतें महीने-दर-महीने दोगुनी हो गई हैं और अखिल भारतीय औसत खुदरा कीमत 29 जून को बढ़कर ?53.59 प्रति किलोग्राम हो गई है, जो 29 मई को ?24.37 थी। उसी एक महीने की अवधि में प्याज और आलू की कीमतों में वृद्धि क्रमशः 7.5 प्रतिशत और 4.5 प्रतिशत से कहीं अधिक है। उदाहरण के लिए, शाकाहारी परिवारों के आहार में प्रोटीन का एक प्रमुख स्रोत अरहर दाल की कीमत लगातार बढ़ रही है; सरकार

के आंकड़ों के मुताबिक, 29 जून को यह महीने-दर-महीने 7.8 प्रतिशत बढ़कर ?130.75 प्रति किलोग्राम हो गया था। इस महीने की शुरूआत में जारी मई के आधिकारिक खुदरा मुद्रास्फीति आंकड़ों से पता चला है कि दालों की कीमतें, जिसमें तुअर दाल भी शामिल है, साल-दर-साल 128 आधार अंक बढ़कर 31 महीने के उच्चतम 6.56 प्रतिशत पर पहुंच गई है। ऐसा लगता है कि सरकार द्वारा 2 जून को उड़द और तुअर पर स्टॉक सीमा लागू करने से मसूर की कीमतों में बढ़ोतरी पर कोई खास असर नहीं पड़ा है। कृषि उपज की कीमतों में एक मौसमी घटक होता है और उनकी आपूर्ति काफी हद तक फसल के समय और मंडियों में प्रचलित कीमतों सहित कारकों द्वारा निर्धारित होती है जब किसान अपनी फसल को बाजारों में ले जाते हैं। पिछले महीने ही, ग्रामीण महाराष्ट्र में टमाटर उत्पादकों ने अलाभकारी मूल्य की पेशकश के बाद बड़ी मात्रा में अपनी उपज सड़कों पर फेंक दी थी। हालाँकि, टमाटर सहित इनमें से कई खाद्य पदार्थों की कीमतें अभी भी पिछले साल की समान अवधि की तुलना में काफी अधिक हैं, सरकार की एगमार्केट वेबसाइट के अनुसार मंडियों में दैनिक भारित औसत आगमन कीमतों से पता चलता है कि टमाटर की कीमतें साल-दर-साल लगभग तीन गुना हो गई हैं। इस वर्ष अब तक मानसून में 13 प्रतिशत की कमी हुई है, और आने वाले महीनों में स्थानिक और लौकिक वितरण का दृष्टिकोण अल नीनो द्वारा अनिश्चितता के साथ बादल गया है, एक वास्तविक जोखिम है कि खाद्य कीमतें खुदरा मुद्रास्फीति को फिर से तेज कर सकती हैं। इन बदलावों की वजह से इस बार प्याज नहीं बल्कि टमाटर लोगों की आंखों में आंसू ला रहा है। देश के कई शहरों में टमाटर की कीमत 100 रुपये के पार पहुंच चुकी है। दिल्ली में तो कई स्थानों पर टमाटर की कीमत 200 रुपये किलो पहुंच चुकी है। साप्ताहिक बाजार में भी खराब क्वालिटी का टमाटर 120 रुपये किलो मिल रहा है। देश में आलू, प्याज और टमाटर मुख्य सब्जियों में शामिल हैं। इसमें से किसी एक कीमत बढ़ने से सरकारों के भी हाथपांव फूल जाते हैं। किसान पिछली फसल को मिली कीमत के आधार पर टमाटर की बुवाई करते हैं। अप्रैल-मई में टमाटर की कीमत 1-2 रुपये किलो तक गिर गई थी। इस कारण किसानों ने इस बार टमाटर की खेती से परहेज किया। इससे टमाटर की कीमत अचानक से आसमान पर पहुंच गई। देश में पूरे साल टमाटर की फसल होती है। मुख्य रूप से इसकी खेती मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात में होती है। देश होने वाली टमाटर की कुल खेती में इन राज्यों की हिस्सेदारी 46 परसेंट है। भारत दुनिया में टमाटर का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है लेकिन देश में प्रति हेक्टेयर उपज बहुत कम है। 2021-22 में यह प्रति हेक्टेयर 24.4 टन रही जबकि चीन में यह 58.4 टन प्रति हेक्टेयर है। इसका वैश्विक औसत 37 टन प्रति हेक्टेयर है। दुनिया में टमाटर का उत्पादन ग्रीनहाउसेज और पॉलीहाउसेज में होता है। लेकिन भारत में अब तक बड़े पैमाने पर इसे नहीं अपनाया गया है। सरकार ने 2018-19 में टमाटर, प्याज और आलू की वैल्यू चेन को दुरुस्त करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन्स चलाया था। इसका मकसद किसानों को टमाटर, प्याज और आलू की उचित कीमत दिलाना, नुकसान को कम करना और कीमतों में उतारचढ़ाव पर अंकुश लगाना था। वह कितना सफल हुआ है, यह सरकार के विचार का विषय है। इस बीच यह साफ हो गया है कि आने वाले दो सप्ताह में फिर से टमाटर की कीमतें कम हो जाएंगी। फिर भी यह एक चुनावी मुद्दा है जो हर घर को प्रभावित करता है। ऐसे में सरकार की चिंता का बढ़ना स्वाभाविक है।

सामाजिक एकता बढ़ाएगा समान कानून

वर्तमान में समान नागरिक कानून की चर्चा बहुत ज्यादा है। होना भी चाहिए, क्योंकि विश्व के अधिकांश देश समान कानून की अवधारणा को स्वीकार करते हैं। आज जो देश विश्व की महाशक्ति मानने का साहस रखते हैं, उन सभी देशों में कानून के नाम पर कोई समझौता नहीं किया जाता। भारत में कानून के नाम पर जो प्रावधान हैं, उनमें कई प्रकार की खामियां देखने को मिलती हैं। जो समाज में असमानता का भाव पैदा करने वाले कहे जा सकते हैं। विसंगति यह है कि मुस्लिमों के लिए जो पर्सनल कानून बनाए गए हैं, वे सामाजिक उत्थान और मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने का ही एक प्रयास था, लेकिन इसका परिणाम क्या हुआ है, यह हम सभी के सामने है। मुस्लिम समाज का कुछ वर्ग देश की वास्तविकता से परिचित होना नहीं चाहता। इतना ही नहीं वह अभी तक भारत के उन संस्कारों से समरस नहीं हो सका है, जो मुगलों और अंग्रेजों से पहले से चले आ रहे हैं।
भारत के मुसलमानों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यह मुसलमान सनातन काल से भारत के ही हैं। वह अपना इतिहास खोजेंगे तो उन्हें इसके प्रमाण भी मिल जाएंगे। आज कई

सुरेश हिन्दुस्तानी
टिप्पणीकार

मुस्लिम अपने पूर्वजों द्वारा की गई गलतियों को सुधारने का प्रयास भी करने लगे हैं। वसीम रिजवी और जफर शेख ने इस पहल को गति देने का कार्य किया है। अभी मुस्लिम समाज को सुबह का भूला निरूपित किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, लेकिन यकीनन वो शाम भी आ रही है, जिसमें सब घर लौटने की कवायद करेंगे।
समान नागरिक संहिता को लेकर कुछ संस्थाओं द्वारा यह प्रचारित करने का प्रयास किया जा रहा है कि यह कानून भारत के मुस्लिमों के विरोध में है। जबकि इस पर गंभीरता पूर्वक मंथन किया जाए तो समान नागरिकता कानून मुस्लिमों के लिए बड़ा हितकारक ही सिद्ध होगा। हम जानते हैं कि आज देश का बहुत बड़ा मुस्लिम समाज मुख्य धारा से कटा हुआ है। इसके पीछे एक मात्र कारण देश की राजनीति को माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद राजनीतिक दलों ने मुस्लिमों के वोट प्राप्त करने के लिए तमाम तरीके से प्रलोभन देने का काम किया, यही प्रलोभन मुस्लिम समाज के विकास में बाधक बनकर सामने दिखाई दिया। अगर सारे समाज के लिए देश में एक समान कानून बन जाएगा तो स्वाभाविक रूप से समाज में भेदभाव भी समाप्त होगा, जो अपरिहार्य भी है। इसलिए अब देश के मुस्लिम समाज को स्वयं ही समान नागरिक संहिता लागू करने की मांग करना चाहिए, जो न्यायोचित कदम होगा।
वर्तमान में हम देख रहे हैं कि कुछ लोग समान नागरिक कानून का विरोध कर रहे हैं, जबकि मुस्लिम समाज की महिलाएं इस कानून के समर्थन करने के लिए आगे आ रही हैं। समान नागरिक कानून समान व्यवहार करने वाला ही साबित होगा। ऐसा किया जाना इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि निजी कानूनों के चलते समाज में भेदभाव की खाई लगातार गहरी होती जा रहा है। दिल्ली हाई कोर्ट ने एक बार तलाक के एक प्रकरण में सुनवाई करते हुए स्पष्ट किया था कि समान नागरिक संहिता समय की जरूरत है। हम जानते हैं कि गोवा में समान नागरिक संहिता लागू है और इस राज्य के किसी भी वर्ग को किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं है। उत्तराखंड में इसे लागू करने की प्रक्रिया चल रही है। गोवा में समान नागरिक संहिता के होने से समाज को किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं है। समस्या तो केवल उन राजनीतिज्ञों को है जो समाज में विभाजन की लकीर को बड़ा करना चाहते हैं। ऐसे राजनीतिज्ञों को विचार करना चाहिए कि जो काम गोवा में किया जा सकता है, वह शेष देश में क्यों नहीं हो सकता? राजनीतिक दलों को यह समझना चाहिए कि समान नागरिक संहिता न तो किसी के विरोध में है और न ही किसी के समर्थन में है। समान नागरिक संहिता देश के हर नागरिक को समानता का अधिकार देता है। विश्व के कई देशों में संवैधानिक प्रावधानों के तहत किसी वर्ग को विशेष अधिकार नहीं हैं, सबको देश में एक ही कानून को मानना होता है, लेकिन भारत में राजनीतिक फायदे के लिए तुष्टिकरण का ऐसा खेल खेला गया, जो विविधता में एकता के दर्शन को तार-तार कर रहा है। निजी कानूनों के कारण कहीं न कहीं विसंगति के हालात भी पैदा हो रहे हैं। सामुदायिक घटनाओं को भी राजनीतिक दृष्टि से देखा जाता है, घटना को देखने का यह नजरिया वास्तव में वर्ग भेद को बढ़ावा देने वाला है।
देश का मुस्लिम भी समाज का एक हिस्सा है, जिसे इसी रूप में प्रस्तुत करने की परिपाटी चलन में आ जाए तो भेद करने वाले विचारों पर लगाम लगाई जा सकती है। लेकिन हमारे देश के कुछ राजनीतिक दलों ने मुसलमानों को ऐसे भ्रम में रखने के लिए प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही चिंतन करने लगा, जबकि सच्चाई यह है कि आज के मुसलमान बाहर से नहीं आए, वे भारत के ही हैं। परिस्थितियों के चलते उनके पूर्वज मुसलमान बन गए। वे सभी स्वभाव से आज भी भारतीय हैं और विचार से सनातनी हैं, लेकिन देश के राजनीतिक दल मुसलमानों के इस सनातनी भाव को प्रकट करने का अवसर नहीं दे रहे।
जहां तक निजी कानूनों का सवाल है तो यह कहीं न कहीं समाज से दूर करने का बड़ा कारण ही सिद्ध हो रहा है। इन कानूनों से अगर किसी वर्ग को लाभ मिलता तो वह आज मुस्लिम समाज प्रगति कर चुका होता, जबकि वास्तविकता यही है कि अल्पसंख्यकों के नाम पर दी जाने वाली सरकारी सुविधाएं ही उनकी प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। हम जानते हैं कि सुविधाओं के सहारे किसी भी समाज को स्वावलम्बी नहीं बनाया जा सकता। लेकिन भारत में मुस्लिम पर्सनल कानून को लेकर जहां मुस्लिम समाज के पैरोकार समाज में भ्रम की स्थिति पैदा कर समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने से वंचित कर रहे हैं, वहीं देश के कुछ राजनीतिक दल भी आग में घी डालने जैसा कृत्य करते हुए दिखाई देते हैं। वास्तव में यह कदम कहीं न कहीं देश में वैमनस्यता को बढ़ावा देने का ही काम कर रहे हैं। जहां तक साम्प्रदायिक सद्भाव की बात है तो सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोगों को एक दूसरे के रीति रिवाजों को समान भाव से सम्मान देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो सामाजिक समरसता के तमाम प्रयास महज खोखले ही साबित होंगे।
भाजपा शुरू से ही इस पक्ष में रही है कि एक देश में एक ही कानून लागू होना चाहिए। किसी को भी पर्सनल लॉ के तहत काम करने की छूट नहीं दी जानी चाहिए। जो राजनीतिक दल इसे भाजपा या कांग्रेस के नजरिये से देखते हैं, उन्हें एक बार फिर से इस कानून को समझने का प्रयास करना चाहिए। अगर हम यह चिंतन भारतीय भाव से करेंगे तो स्वाभाविक रूप से यही दिखाई देगा कि समान नागरिक कानून देश और समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार बनेगा। अगर इसे हिन्दू-मुस्लिम के संकुचित भाव से देखेंगे तो खामी न होने के बाद भी खामियां दिखाई देंगी। यह मसला वास्तव में केंद्र की मौजूदा सरकार ने अपनी तरफ से शुरू नहीं किया है। यह मांग तो पिछली सरकारों के समय भी उठती रही है, इसलिए वर्तमान केंद्र सरकार को दोषी ठहराना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है। मौजूदा सरकार पूरे देश में हर नागरिक को समान अधिकार देने के पक्ष में है। वह पुरुष हो या महिला। हिंदू हो या मुसलमान या किसी दूसरे मजहब को मानने वाले नागरिक। ऐसा होगा तभी देश में सामाजिक समरसता की स्थापना संभव हो सकेगी।

आखिरी काम !

प्रेरक -प्रसंग

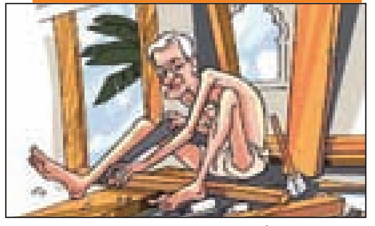

एक बूढ़ा कारपेंटर अपने काम के लिए काफी जाना जाता था , उसके बनाये लकड़ी के घर दूर -दूर तक प्रसिद्द थे । पर अब बूढा हो जाने के कारण उसने सोचा कि बाकी की ज़िन्दगी आराम से गुजारी जाए और वह अगले दिन सुबह-सुबह अपने मालिक के पास पहुंचा और बोला , ठेकेदार साहब , मैंने बरसों आपकी सेवा की है पर अब मैं बाकी का समय आराम से पूजा-पाठ में बिताना चाहता हूँ , कृपया मुझे काम छोड़ने की अनुमति दें ।
ठेकेदार कारपेंटर को बहुत मानता था , इसलिए उसे ये सुनकर थोडा दु:ख हुआ पर वो कारपेंटर को निराश नहीं करना चाहता था , उसने कहा , आप यहां के सबसे अनुभवी व्यक्ति हैं , आपकी कमी यहां कोई नहीं पूरी कर पायेगा लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि जाने से पहले एक आखिरी काम करते जाइये ।
जी , क्या काम करना है ? , कारपेंटर ने पूछा । मैं चाहता हूँ कि आप जाते -जाते हमारे लिए एक और लकड़ी का घर तैयार कर दीजिये । , ठेकेदार घर बनाने के लिए जरूरी पैसे देते हुए बोला । कारपेंटर इस काम के लिए तैयार हो गया । उसने अगले दिन से ही घर बनाना शुरू कर दिया , पर ये जान कर कि ये उसका आखिरी काम है और इसके बाद उसे और कुछ नहीं करना होगा वो थोड़ा ढीला पड़ गया । पहले जहाँ वह बड़ी सावधानी से लकड़ियाँ चुनता और काटता था अब बस काम चालाऊ तरीके से ये सब करने लगा । कुछ एक हफ्तों में घर तैयार हो गया और वो ठेकेदार के पास पहुंचा , ठेकेदार साहब , मैंने घर तैयार कर लिया है , अब तो मैं काम छोड़ कर जा सकता हूँ ?
ठेकेदार बोला हां , आप बिलकुल जा सकते हैं लेकिन अब आपको अपने पुराने छोटे से घर में जाने की जरुरत नहीं है , क्योंकि इस बार जो घर आपने बनाया है वो आपकी बरसों की मेहनत का इनाम है ; जाइये अपने परिवार के साथ उसमे खुशहाली से रहिये !
कारपेंटर यह सुनकर स्तब्ध रह गया , वह मन ही मन सोचने लगा , कहाँ मैंने दूसरों के लिए एक से बढ़ कर एक घर बनाये और अपने घर को ही इतने घटिया तरीके से बना बैठा । काश मैंने ये घर भी बाकी घरों की तरह ही बनाया होता ।
कब आपका कौन सा काम किस तरह आपको ाीू३ कर सकता है ये बताना मुश्किल है। ये भी समझने की जरुरत है कि हमारा काम हमारी पहचान बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है। इसलिए हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम हर एक काम अपनी best of abilities के साथ करें फिर चाहे वो हमारा आखिरी काम ही क्यों न हो!

नज़रिया

अब एआई पर ही कई सवाल

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को लेकर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, इस्राइल, आस्ट्रेलिया और चीन में तहलका मचा हुआ है। उनकी सरकारें बेचैन है कि वह बेकाबू न हो जाए। उनके द्वारा एआई एडवाइजरी कमेटी, इनोवेशन ऑथोरिटी, साइंस एडवाइजरी कमेटी बनाई गई हैं। यूएन में ग्लोबल एआई ऐक्ट पर सहमति जुटाई जा रही है। टास्क फोर्स का गठन और सैंकड़ों पन्ने के दिशा निर्देश में इसे मानव, समाज और पर्यावरण के लिए खतरा बताते हुए परमाणु बम जैसा खतरनाक कह दिया गया है, जबकि भारत इसी तकनीक की बदौलत अपने टेक सिस्टम को और अधिक सुदृढ कर डिजिटलाइजेशन को विस्तार देने की तैयारी में है। एआई नए रूप में जनेरेटिव एआई बनकर तेजी से इस्तेमाल में आ चुका है।

शंभु सुमन
स्तंभकार

विकसित देशों लिए भले ही जेनरेटिव एआई एक चुनौती बनकर सामने आया हो, लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों को इसके जरिए संभावनाओं के कई दरवाजे खुलते नजर आ रहे हैं।

डिजिटल क्रांति और औटोमेशन के दौर में मशीनों पर बनते-बढ़ते भरोसे के साथ इसकी भूमिका, क्षमता और नतीजों ने कई वजहों से पूरी दुनिया को हतप्रभ कर दिया है। इसकी चर्चा एक दशक से हो रही है, लेकिन ओपनएआई के चैटजीपीटी और गूगलएआई बार्ड से इसे पंख लग गए हैं। इसके जनक से लेकर नए दौर के टेक स्पेशलिस्ट, शोधकर्ता और सरकारें तक इसकी अनगिनत संभावनाओं के बावजूद खतरे की आशंकाओं को लेकर सतर्क हो गए है। सभी को चिंता है कि एआई बेलगाम न हो जाए, और भविष्य में मशीन से संचालित मशीनें इंसानी जद से बाहर न निकल पड़े।
विकसित देशों के लिए भले ही जेनरेटिव एआई एक चुनौती बनकर सामने आया हो, लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों को इसके जरिए संभावनाओं के कई दरवाजे खुलते नजर आ रहे हैं। इसके प्रयोग से हर क्षेत्र में विस्तृत विकास और समय की बचत जैसे नतीजे मिलने की उम्मीद बन गई है। इसे देखकर ही भारत सरकार अपने नेशनल एआई पोर्टल ह्यक्ठउक्रअ्र के द्वारा जेनरेटिव एआई, उसकी नीति, शासन और मजबूत नियमन के संबंध में कई बैठकें कर चुका हैं। एआई के व्यापक इस्तेमाल, प्रभाव, जोखिमों के वर्गीकरण, नैतिकता आदि से संबंधित उठने वाले विभिन्न सवालों के संदर्भ में चचाएं की जा चुकी है। यही नहीं भारत साल 2020 में ही ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(जीपीएआई) की स्थापना के लिए 15 देशों में शामिल है। इसका उद्देश्य उभरती प्रौद्योगिकियों के उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग के लिए ढांचा स्थापित करना है। फिर भी कई सवाल सामान्य लोगों के जेहन में कुलबुला रहे हैं। सबसे अहम इसके व्यापक प्रयोग में आने पर नौकरियों में छंटनी और घटते अवसर को लेकर है। क्या छंटनी या नौकरियों के रूपांतरण के संदर्भ में कोई तैयारी की गई है? क्या नई पीढ़ी को स्कूली स्तर से तैयार किया जा रहा है? क्या इसे लेकर केंद्र और राज्य सरकारों समेत साइंस और टेक्नोलाजी महकमे से जुड़े लोगों के बीच तालमेल बिठाने के क्षेत्र में कोई पहल हुई है? क्या इसके लिए आवश्यक नेटवर्क, स्वदेशी सर्वर, ब्राउजर, क्लाउड और क्वांटम कंप्यूटिंग के लिए संसाधन तैयार किए गए हैं? क्या सूचना तकनीक और संचार संसाधनों के नेटवर्क को मजबूत बनाया जा सका है? क्या एआई के जोखिमों और साइबर क्राइम के तहत किए जाने वाले दुरूपयोग के बारे लोगों के सुझाव लिए गए हैं?

जानकारी

मसूरी

मसूरी, जिसे पहाड़ियों की रानी के नाम से भी जाना जाता है, देश के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है।समुद्र तल से लगभग 1900 मीटर की ऊंचाई पर स्थित प्रकृति का यह परिदृश्य समय बीतने के साथ पर्यटकों के लिए स्वर्ग बन गया है। प्रकृति के इस लाभ बिंदु का इतिहास 19वीं शताब्दी का है जब सत्तारूढ़ ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों ने इसे पहाड़ियों में एक छुट्टी स्वर्ग के रूप में विकसित किया था। भारतीय राज्य उत्तरांचल, देहरादून की राज्य की राजधानी से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, मसूरी ने ₹हिल स्टेशनों की रानी₹ होने के इस मोनिकर को भी जीता। जब आप मसूरी रिसॉर्ट्स में ठहरने की योजना बना रहे हों तो प्रकृति, धर्म और संस्कृति से भरे 15 से अधिक आकर्षण आपके निपटान में हैं। यह हिल स्टेशन यमुनोत्री और गंगोत्री के ग्लेशियरों के प्रवेश द्वार के रूप में भी कार्य करता है और हम इसे गर्मी की छुट्टियां बिताने के लिए एक आदर्श स्थान मान सकते हैं। मसूरी में घूमने की जगह..मसूरी, जिसे पहाड़ियों की रानी के नाम से भी जाना जाता है।

999 रुपये में जियो ने लॉन्च किया 4G फोन

नई दिल्ली: रिलायंस जियो ने देश में एक नए 4G फोन 'जियो भारत V2' को लॉन्च कर दिया है। जियो ने बताया है कि इस फोन की कीमत 999 रुपये है। जियो के मुताबिक, उसकी नजर भारत के करीब 25 करोड़ 2G कस्टमर्स पर है, जो अभी एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया जैसी टेलिकॉम कंपनियों से जुड़े हैं। गौरतलब है कि जियो सिर्फ 4Gऔर 5G नेटवर्क पर ही ऑपरेट करती है। कंपनी ने दावा किया है कि वह अपने नए फोन 'जियो भारत V2' के दम पर 10 करोड़ से ज्यादा कस्टमर्स को जोड़ेगी।

सबसे सस्ता इंटरनेट फोन!

जियो का कहना है कि मार्केट में इंटरनेट पर काम करने वाले जितने भी फोन हैं, उनमें 'जियो भारत V2' सबसे सस्ता है। कंपनी ने साल 2018 में जियोफोन को लॉन्च किया था, जिसे अच्छी सफलता मिली थी। 'जियो भारत V2'' से भी कंपनी को यही उम्मीदें हैं।

Jio Bharat V2 की खूबियां

जियो ने बताया है कि उसका 4G फोन सिर्फ 71 ग्राम वजन वाला है। इस लाइटवेट डिवाइस में एचडी वॉयस कॉलिंग, FM रेडियो, 128 जीबी का एसडी मेमरी कार्ड सपोर्ट जैसे फीचर हैं। फोन में 4.5 सेंटीमीटर का TFT डिस्प्ले, 0.3 मेगापिक्सल का कैमरा, 1000mA की बैटरी, 3.5 का हेडफोन जैक, लाउडस्पीकर के साथ ही टार्च भी मिलेगी।
इस फोन के साथ जियो ग्राहकों को जियो सिनेमा और जियो-सावन ऐप का एक्सेस भी मिलेगा। यह मोबाइल 22 भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करता है।

123 रुपये का रिचार्ज, मिलेगा 14GB डेटा

999 रुपये के Jio Bharat V2 के यूजर्स के लिए कंपनी ने सस्ता रिचार्ज प्लान भी पेश किया है। 28 दिन की वैलिडिटी वाले प्लान के लिए 123 रुपये देने होंगे। इस प्लान पर कंपनी 14GB 4जी डेटा देगी। 'जियो भारत V2' पर कंपनी सालाना प्लान भी लाई है, जो 1234 रुपये का है।

साइबर दुनिया

टॉप ट्वीट

"आशा के अग्रदूत और परिवर्तन के आधार, समानता और न्याय के सिद्धांतों पर निर्मित एक मजबूत और एकजुट भारत का उनका दृष्टिकोण हमारा मार्गदर्शक बना हुआ है।" तथा सामंजस्यपूर्ण राष्ट्र के लिए काम करके उनके सपने को पूरा करने का प्रयास करें।"

ममता बनर्जी
पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री

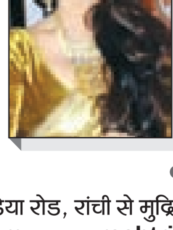

"सही प्रोजेक्ट उन्हें सही समय पर मिल जाएगा और भले ही वह कोई फिल्म साइन न करें, लेकिन उनकी सिनेमाई आत्मा उनका साथ कभी नहीं छोड़ती। रेखा ने बताया, मेरा व्यक्तित्व मेरा अपना है, लेकिन मेरा सिनेमाई व्यक्तित्व देखने वाले की नजर में है। इसलिए मैं चुनती हूं कि मैं कहां रहना चाहती हूं और कहां नहीं रहना चाहती।"

रेखा
बॉलिवुड अभिनेत्री

संपादक के नाम पत्र

खुशी के उपाय

वैज्ञानिकता से भरे आज के भागमभाग और व्यस्तता भरे जमाने में प्राय: लोग अपनी मूड खराब होने की बात सहज में कर देते हैं। मन की खिन्नता और चित्त की प्रसन्नता दोनों एक दूसरे की वितरित हैं लेकिन उन्हें कौन बताए जो समझते हैं कि खुश होना मेरी किस्मत में नहीं है। सदैव किस्मत का रोना रोने वाला व्यक्ति जीवन के दौर में खुश बड़ा ही कम होता है। एक बहुचर्चित फिल्म का डायलॉग याद कीजिए जिसमें महानायक अमिताभ बच्चन कहते हैं कि खुशी की फुलवारी अब खिलती कहां है?
कहा जाता है खुश वही व्यक्ति है जो दूसरे की खुशी में साथ हो लेता है। खुशनुमा मनुष्य का इस दुनिया में सभी कार्य ठीक-ठाक ढंग से संपन्न हो जाते हैं। खुशियों का दामन भरने पर वह थोड़ी लगती है लेकिन उन्हें बांटा जाए तो वे और ज्यादा बड़ी नजर आती हैं। जीने की कला के अंतर्गत विश्व प्रसिद्ध साधक श्री श्री रविशंकर जी कहते हैं खुशी कहीं बाहर नहीं... अपने ही भीतर है और इसे जानने -समझने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से खुश रहता है। दु:ख आते हैं और चले जाते हैं लेकिन सुख स्थायी खुशी का भाव उन्हें देता रहता है। खुशी का रंग मेहंदी के समान है जो लगाने वाले और लगवाने वाले दोनों पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है। हमें अपने उपलब्ध संसाधन में ही खुश रहने का अवसर ढूंढना होगा और यही भाव प्रगति का समवेत आधार है। खुशी कहीं से कर्ज या उधार लेने की आवश्यकता नहीं यह तो हमारे आपके मन का उद्गार है।

डॉ.राकेश कुमार सिन्हा'रवि'

स्वस्तिक मीडिया वेंचर्स प्रा. लिमिटेड के लिए मुद्रक और प्रकाशक रजत कुमार गुप्ता द्वारा वृंदा मीडिया पब्लिकेशन्स प्रा.लि., चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची से मुद्रित और एचआई 254, हरमू बाईपास रोड, हरमू हाउसिंग कालोनी, रांची से प्रकाशित। सम्पादक - रजत कुमार गुप्ता
RNI No- JHAHIN/ 2008/ 26373, email-rastriyakhabarhn@gmail.com, www.rashtriyakhabar.com, Phone No. 0651-2244605, 2244505

शहर >> अपडेट

खड़ी हाइवा में लगी अचानक आग

चरही : चरही मंगलवार को चरही थाना क्षेत्र के 45कांटा चेकपोस्ट से महज कुछ दूरी पर एक खड़ी हाइवा में अचानक आग लग गई। घटना मंगलवार शाम 4बजे के करीब की है। मौके से प्राप्त जानकारी के अनुसार हाइवा खाली था फिलहाल समाचार लिखे जाने तक हाइवा जल रहा था जबकि वहां पर लोग भय से नहीं जा रहे थे।

सिटी अपडेट्स >>

बाबूलाल मरांडी को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर भाजपाइयों ने बधाई

हजारीबाग : हजारीबाग मंगलवार केंद्रीय नेतृत्व ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व भाजपा के कद्दावर नेतृत्वकर्ता बाबूलाल मरांडी को भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किये जाने की खबर प्राप्त होते ही भाजपा के कार्यकताओं व नेताओ में खुशी की लहर दौड़ गयी। कार्यकताओं ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दिया। इस संदर्भ में सदर विधायक मनीष जायसवाल ने कहा कि बाबूलाल मरांडी एक कुशल नेतृत्वकर्ता हैं। उन्होंने कहा कि मरांडी हर वर्ग के कार्यकताओं के दिलो में बसते हैं। वही प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अनिल मिश्रा ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि बाबूलाल मरांडी जमीनी नेता हैं। सरल ब्यक्तित्व के धनी भी हैं। श्री मिश्रा ने कहा कि 2005 में जब मैं बड़कागाँव मंडल का अध्यक्ष था तब श्री मरांडी के साथ चुनाव के समय मे बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में जानने व समझने का मौका मिला था। श्री मिश्रा ने कहा कि इनके कुशल नेतृत्व का फायदा आगामी लोकसभा व विधानसभा के चुनाव में पार्टी को मिलेगा।जिला अध्यक्ष अशोक यादव ने कहा कि बाबूलाल मरांडी एक कदावर नेता है केन्द्र नेतृत्व ने सही फैसला लिया इनको प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर संगठन को और भी मजबूती और गति मिलेगी।

संक्षिप्त >> अपडेट्स

वीर शासन जयंती के शुभ अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

पीरटांड़ : मधुबन स्थित गुणायतन में मंगलवार को मुनि प्रमाणसागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में वीर शासन जयंती के शुभ अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रातः श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, पूजन किया गया। तत्पश्चात मुनि प्रमाणसागर जी महाराज का वीर शासन जयंती पर मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें गुरु जी ने वीर शासन जयंती के बारे में विस्तृत रूप में सभा को उद्बोधन दिया।कार्यक्रम में उपस्थित सुभाष जैन, नंदलाल जैन, अखिलेश जैन,ब्रह्मचारी सुनीता दीदी, सुनील, शैलेश, आदि उपस्थित थे।

पदमा ओपी अंतर्गत रोमी गांव में कुंआ में डूबी सुमो

हजारीबाग : हजारीबाग मंगलवार की दोपहर 1:30 बजे के करीब पदमा ओपी अंतर्गत रोमी गांव के समीप बरही से हजारीबाग जा रही एक सूमो विक्टा गाड़ी एक बुलेट सवार को बचाने के क्रम में ठल-33 के किनारे स्थित कुआं में गिर गई और साथ ही बुलेट सवार भी गिर गया। स्थानीय पुलिस एवं ग्रामीणों के सहयोग से तत्काल तीन लोगों को निकालकर अस्पताल भेजा गया है। हाइड्रा क्रेन से सूमो गाड़ी को कुएं से बाहर निकाल लिया गया है। कुएं से कुल 6 शवों को बाहर निकाला गया है। इस घटना में हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के मंडई के कुल 5 लोग और शहर के दिपुगढ़ा के रहने वाले एक चालक समेत 6 लोगों की मौत हो गई और 3 जन गंभीर रूप से घायल हो गए। इसमें एक ही परिवार के तीन सदस्य की मौत हो गई। घटना के बाद पुरे हजारीबाग क्षेत्र में मातम का माहौल है। घटना की जानकारी पाकर तत्काल विधायक मनीष सक्रिय हुए और अपने मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी, सदर प्रखंड के विधायक प्रतिनिधि विजय कुमार और कार्यलय कर्मी विशेषांक वर्मा सहित अन्य लोगों को तत्काल अस्पताल भेजकर सहयोग किया।

जलाभिषेक बादम पचबहनी से जल उठा कर बुढ़वा महादेव में किया गया जलाभिषेक

सावन के पहले दिन ग्रामीणों ने किया बुढ़वा महादेव शिव मंदिर में जलाभिषेक

- गाजे-बाजे के साथ झूमते हुए बुढ़वा महादेव मंदिर परिसर पहुंचे
- सैकड़ों महिला-पुरुष एवं बच्चे जल यात्रा में शामिल होकर सर्वप्रथम पचबहनी मंदिर पहुंचे

राष्ट्रीय खबर

बड़कागांव : बड़कागांव सावन के पहले दिन बड़कागांव प्रखंड के कांडतरी के ग्रामीणों द्वारा बादम स्थित पचबहनी मंदिर से जल उठा कर ऐतिहासिक महुदी पहाड़ी स्थित बुढ़वा महादेव शिव मंदिर में जलाभिषेक किया गया। कांडतरी गांव से गाजे-बाजे के साथ सैकड़ों महिला-पुरुष एवं बच्चे जल यात्रा में शामिल होकर सर्वप्रथम पचबहनी मंदिर पहुंचे एवं वहां से पूजा अर्चना कर जल उठा कर गाजे-बाजे के साथ झूमते हुए बुढ़वा महादेव मंदिर परिसर पहुंचे। इस दौरान जिला परिषद सदस्य सुनीता देवी, प्रमुख वचन देव कुमार, उप मुखिया राजदेव महतो, ग्राम अध्यक्ष प्रेमचंद कुमार, सचिन मुरली महतो, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार, मीना कुमारी, इंदु देवी, सावित्री देवी, कलावती देवी, उषा देवी, आरती देवी, भागीरथी देवी, अरुणा बाला, शोभा देवी, समुद्री देवी, जयंती देवी, जानकी देवी, शांति देवी, कौशल्या देवी, उर्मिला देवी, बालो देवी, त्रिभुवन महतो, चंद्रशेखर महतो, ननकू महतो, रघुनंदन महतो, प्रदीप कुमार, सिकंदर महतो, धूपन महतो, चांदो महतो, रघु महतो सहित सैकड़ों ग्रामीण भक्त शामिल थे।

बाबूलाल मरांडी को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर बटेश्वर नेता ने दिया बधाई

राष्ट्रीय खबर

इचाक: इचाक झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई एवं अशेष शुभकामनाएं इनके बनने से भाजपा झारखंड में पुनः अपने गौरव प्राप्त कर 2024 के लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में अपना परचम लहराएगी। बरकट्ठा विधानसभा के पूर्व प्रत्यासी सह प्रदेश कार्य समिति सदस्य बटेश्वर प्रसाद मेहता।

किसान मोर्चा के प्रदेश कार्य समिति सदस्य सुनील कुमार मेहता ने कहा की पार्टी ने एक मजबूत एवम कुशल संगठन कर्ता को पार्टी का कमान सोप कर राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ऐतिहासिक काम किया है।

जन कल्याण में बनी योजनाओं का लाभ ले सके झारखंड जन ताकि ना रुके उनके कदम

सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय ने कराया गया मेला प्रदर्शनी का आयोजन

राष्ट्रीय खबर

हजारीबाग : हजारीबाग झारखंड सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने हेतु उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल अंतर्गत हजारीबाग के निम्न प्रखंडों को चयनित कर एक-एक दिवसीय मेला प्रदर्शनी का आयोजन प्रमंडलीय सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय द्वारा कराया गया। जनहित के लिए बनी योजनाएं सिर्फ फाइलों में सीमित ना रहकर वास्तव में जनोपयोगी बने इसके लिए झारखंड सरकार प्रयासरत है। इसके मद्देनजर सरकारी योजनाओं की जानकारी झारखंड के जन-जन तक पहुंचे इस हेतु भीड़भाड़ वाले इलाकों को चिन्हित कर वहां मेला प्रदर्शनी के माध्यम से सरकार की लोककल्याणकारी जनहित योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

योजनाओं को गहराई से समझें झारखंड जन इस हेतु पोस्टर का वितरण

3 जुलाई को चरही हाट बाजार एवं 4 जुलाई को गांधी मैदान हजारीबाग के लगभग 600 स्क्वायर फीट क्षेत्र में एक-एक दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन संपन्न कराया गया। यह एक दिवसीय प्रदर्शनी लगभग प्रतिदिन 4-5 घंटे तक चली। प्रदर्शनी के माध्यम से सरकार की जनोपयोगी योजनाओं से आमजन परिचित होकर उचित लाभ ले सके, इसके लिए विभिन्न प्रकार के स्टाल लगाए गए थे।अधिक-अधिक लोग प्रदर्शनी में उपस्थित हो उसके लिए साउंड एवं एलईडी टीवी की व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी।

झारखंड भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के बनने से संगठन में आएगी मजबूती

राष्ट्रीय खबर

हजारीबाग : हजारीबाग झारखंड भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के बनाए जाने का हजारीबाग सदर विधायक मनीष जायसवाल ने स्वागत किया है। भाजपा विधायक मनीष जायसवाल ने कहा कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व ने झारखंड के हितों को देखते हुए बहुत ही अच्छा निर्णय लिया है।

जिसका हम सभी जोरदार ढंग से स्वागत करते हैं। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा और अमित शाह जी धन्यवाद के पात्र हैं। श्री जायसवाल ने कहा कि आने वाले समय में लोकसभा और विधानसभा का चुनाव होने वाला है। झारखंड के लोकप्रिय नेता बाबूलाल मरांडी के प्रदेश अध्यक्ष बनने से इन चुनावों में पार्टी को लाभ मिलना तय है।

उन्होंने कहा कि बाबूलाल मरांडी के प्रदेश अध्यक्ष बनने से राज्य के कार्यकर्ताओं में एक नए तरह का उत्साह और संचार देखने को मिलेगा।

पार्टी के छोटे से बड़े नेता कार्यकर्ता पार्टी के इस निर्णय का तहे दिल से स्वागत किया है।

उपविकास आयुक्त ने विभिन्न योजनाओं का किया निरीक्षण

राष्ट्रीय खबर

हजारीबाग : हजारीबाग 4 जुलाई को उप विकास आयुक्त प्रेरणा दीक्षित ने कटकमदाग प्रखंड के खपरियावां,बेस,अड़रा एवं कटकमदाग पंचायत में मनरेगा,15वें वित्त आयोग एवं डीएमएफटी के द्वारा चल रहे योजनाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान पंचायत सचिवालय खपरियावां, मॉडल आंगनबाड़ी केंद्र, खपरियावां, उत्क्रमित उच्च विद्यालय ढेंगुरा, रोहित लिंडा का डोभा निर्माण, सरिता तिर्की का आम बागवानी, गोवर्धन गंजू के तालाब गहरीकरण एवं बिरहोर टंडा में आदिम जनजातियों के उजड़े आवासों का निरीक्षण किया। साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र,मनातू एवं स्वास्थ्य उप केंद्र,पसाई का निरीक्षण किया। भ्रमण के दौरान संज्ञान में आए खामियों को दो दिनों के अंदर दूर करने का निर्देश दिया।

सुविधा अदाणी फाउंडेशन के सहयोग से जरूरतमंद स्कूली बच्चे करेंगे साइकिल की सवारी

अब साइकिल पर सवार होकर बच्चे आएंगे स्कूल

- अदाणी फॉउंडेशन ने सात विद्यार्थियों के बीच बांटे निःशुल्क साइकिल
- समय की बचत के साथ-साथ बच्चों की परेशानी होगी दूर

राष्ट्रीय खबर

हजारीबाग : हजारीबाग जिले के बड़कागांव प्रखंड गोंदलपुरा खनन परियोजना के तहत अदाणी फॉउंडेशन ने मंगलवार को बड़कागांव प्रखंड के विभिन्न गांव के बच्चों के बीच कार्यालय परिसर में निःशुल्क ब्रांडेड साइकिल का वितरण किया। अपने सामाजिक दायित्व के निर्वहन के क्रम में अदाणी फॉउंडेशन ने सात ऐसे लड़के और लड़कियों को साइकिल प्रदान किए, जिन्हें पढ़ने के लिए स्कूल आने में काफी कठिनाई होती थी। इन बच्चों को राज्य सम्पोषित हरली प्लस टू उच्च विद्यालय पढ़ने के लिए अपने गांव से करीब दस से 12 किलोमीटर पैदल, ऑटो या किसी अन्य साधन से आना पड़ता था। अब साइकिल मिल जाने से दसवीं और बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले इन बच्चों का समय बचेगा और स्कूल आने में हो रही कठिनाई भी दूर हो जाएगी। गोंदलपुरा, बलोदर और गाली गांव के ये बच्चे साइकिल पाकर बेहद प्रसन्न नजर आए। साइकिल का और भी अन्य कार्यों में ये उपयोग कर सकेंगे। आने वाले दिनों में भी अदाणी फॉउंडेशन की ओर से परियोजना प्रभावित गांव के विद्यार्थियों को हर संभव मदद प्रदान करने की कोशिश की जाएगी। राज्य सम्पोषित हरली प्लस टू उच्च विद्यालय में अदाणी फॉउंडेशन की ओर से विज्ञान विषय के दो विशेष शिक्षक नियुक्त किए गए हैं, जो लगातार विद्यार्थियों को विज्ञान पढ़ा रहे हैं। इस स्कूल में विज्ञान विषय के शिक्षक नहीं रहने के कारण बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही थी और उन्हें पढ़ने के लिए बाहर जाना पड़ता था।

जारी है जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश

अदाणी फॉउंडेशन की ओर से बड़कागांव प्रखंड के विभिन्न गावों में लगातार सामाजिक दायित्वों का निर्वहन जारी है। फॉउंडेशन ने हाल ही में 70 टीबी के नए मरीजों को गोद लिया है। इससे पहले गोद लिए गए 60 टीबी मरीजों में अधिकतर स्वस्थ हो चुके हैं। फॉउंडेशन ने हाल ही में 39 मरीजों के आंखों की निःशुल्क जांच करवा कर उनके बीच निःशुल्क चश्मे का वितरण किया, जिससे उनके देखने की समस्या दूर हो गयी। इसके अलावा अदाणी फॉउंडेशन की ओर से गावों में निःशुल्क हेल्थ कैम्प लगाए जा रहे हैं, जहां लोगों को दवाइयां और उचित परामर्श दिया जाता है। आने वाले दिनों में अदाणी फॉउंडेशन की ओर सीएसआर के तहत और भी कई कार्य किए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों का जीवन और सुगम होगा।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

साइकिल वितरण कार्यक्रम के अवसर पर परियोजना प्रमुख धर्मेंद्र दूबे, डीजीएम संजय कुमार, सेवानिवृत डीएसपी सूर्य कुमार सिंह, सुरक्षा प्रबंधक रामअवध यादव, सीएसआर प्रबंधक मोहित गुप्ता, शरद मिश्रा, उप प्रबंधक संतोष तिवारी और चेतन साई समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

न्यूज फटाफट

हजारीबाग यूथ विंग के संरक्षक ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बनने पर बाबूलाल मरांडी को दी शुभकामनाएं

हजारीबाग : हजारीबाग शहर में सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने वाले हजारीबाग यूथ विंग के संरक्षक चंद्र प्रकाश जैन के द्वारा भारतीय जनता पार्टी झारखंड प्रदेश के अध्यक्ष नियुक्त होने पर बाबूलाल मरांडी को शुभकामनाएं दी। मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निदेर्शानुसार राष्ट्रीय महासचिव अरुण कुमार सिंह पत्र जारी किया है। चंद्रप्रकाश जैन ने कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से बाबूलाल मरांडी जी से कई बार मुलाकात कर चुका हूं मिलनसार व्यक्ति, हर चीजों को धैर्य से सुनिश्चित करना भी इनकी सबसे बड़ी पहचान है। पद पर रहकर भी पद पर ना रहकर भी इन्होंने जो समाज के प्रति अपनी सेवा दी है उसे कभी भूला नहीं जा सकता। साथ ही कहा आपके नेतृत्व में झारखंड प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

कटकमदाग के इंटर पास युवा मनीष ने शुरू किया बकरी पालन

हजारीबाग : हजारीबाग आत्मनिर्भर भारत के सपने को हजारीबाग के युवा साकार कर रहे हैं। हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के कटकमदाग प्रखंड स्थित कटकमदाग निवासी इंटर पास युवा मनीष कुमार ने बकरी शेड का निर्माण कर बकरी पालन की शुरूआत की है। मंगलवार को हजारीबाग सदर विधायक मनीष जायसवाल ने नारियल फोड़कर और फीता काटकर उनके बकरी शेड का विधिवत उद्घाटन किया। शेड परिसर में लीची और नींबू के पौधे भी उन्होंने अपने हाथों से लगाएं। मनीष कुमार ने अपनी माता सुमा देवी के नाम से खुद के पैसे से इस व्यवसाय की शुरूआत की है। शेड के उद्घाटन के बाद विधायक मनीष जयसवाल ने इसके संचालक मनीष कुमार से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। मौके पर विशेषरुप से कटकमदाग विधायक प्रतिनिधि अजय कुमार साहू, मुखिया प्रतिनिधि सुनील गोप, बसंत यादव, बिनोद प्रसाद, सुनील कुमार, सुरेंद्र गुप्ता, मनीष कुमार, बबलू साव, आलम, सुधीर कुमार, मंटू कुमार, सुरेश राम, सदर विधायक मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें।

शोकाकुल परिवार से मिले बाबूलाल

पीरटांड़ : पीरटांड़ प्रखंड के पालगंज में शोकाकुल परिवार से मिले भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी। यहां यह बता दें कि भाजपा कार्यकर्ता प्राण वल्लभ भक्त के बड़े भाई राधावल्लभ भक्त का निधन पिछले दिनों हो गया था। जिनके द्वादशा कर्म में भाग लेने एवं पिडित परिवार को सांत्वना देने मंगलवार को बाबुलाल मरांडी उनके घर पालगंज पहुँचे। बाबूलाल मरांडी ने शोक व्यक्त कर परिवार से मिले। उन्होंने पीड़ित परिवार से पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली।मौके पर भाजपा नेता शरत भक्त,ग्रीष्म भक्त,भुवन भक्त,निकुंज भक्त,चरित्र भक्त, मुन्ना लाल उपाध्याय, ब्रह्मदेव मिश्रा के अलावे कई लोग मोजूद थे।

डीप बोरिंग के सहारे जल पर हो रहा है अमीरों का कब्जा

साहिबगंज : डीप बोरिंग से साहिबगंज जिला मुख्यालय के अलावा आसपास के इलाकों में धरती का चीर हरण कर पानी निकालने का चल रहा है कार्य। ऐसे में यह आने वाले समय के लिए एक बहुत बड़ा चिंता का कारण बनता जा रहा है। कहा जाता है कि जल ही जीवन का आधार है, लेकिन इसकी लगातार अनदेखी के दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं. स्थिति चिंताजनक है। ऐसे में जल संकट ना केवल साहिबगंज जिला के लिए बल्कि राज्य, देश और पूरे विश्व के लिए एक वैश्विक समस्या बनता जा रहा है। स्थिति यह है कि पानी की समस्या लगातार विकराल होती जा रही है। भूमिगत जल का वर्षों से अत्यधिक दोहन किया जाता रहा है, जिससे उसका स्तर साल दर साल लगातार तेजी से नीचे जा रहा है। 2002 की तुलना में 2023 में साहिबगंज जिले में लगभग दो से 10 मीटर तक जलस्तर नीचे जा चुका है। ऐसे में शहर के गर्मी के दस्तक देने के साथ ही कई वार्डों में जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शहर का 11 नंबर वार्ड हो, या दो नंबर या फिर 24 नंबर वार्ड। ये वो वार्ड है, जहां कमोवेश प्रत्येक वर्ष गर्मी आरंभ होने के साथ ही जल संकट की स्थिति बनी रहती है।

वज्रपात से दो बैलो की मौत

बड़कागांव : बड़कागांव में गरज के साथ तेज मूसलाधार बारिश में दो अलग-अलग गांव में दो अलग-अलग जगह पर दो किसान के दो बैल की मौत हो गई। पहली घटना सोमवार को तेज बारिश के कारण प्रखंड के नापो कला निवासी गणेश यादव का पुआल का मचान गिरने से एक बैल की घटनास्थल पर ही दब कर मौत हो गई। जबकि दो मवेशी को ग्रामीणों के सहयोग से बचा लिया गया। वहीं दूसरी घटना अंगों पंचायत के बंसी मांझी का एक बैल का मौत वज्रपात से हो गई। उक्त दोनों किसान के बीच इस बरसात में खेती करने की समस्या उत्पन्न हो गई है।

शराबी पति ने पत्नी को कुल्हाड़ी से काट की हत्या

पीरटांड़ : खुखरा थाना क्षेत्र के गम्हरा गाँव में अपने पति ने पत्नी की हत्या कर दी है। पत्नी की धारदार टांगी से निर्मम हत्या किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। मामला बदगांवा पंचायत के गम्भरा गांव की है। घटना की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल पर खुखरा थाना पुलिस पहुंची। और शव को कब्जे में कर आगे की कार्रवाई में जुट गई है। बताया गया कि गम्भरा निवासी अर्जुन महतो ने अपनी 55 वर्षीय पत्नी मुलिया देवी को सोमवार की देर रात में ही कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी।उसका एक बेटा है जो मुम्बई में रहता है। घर मे किसी के नही रहने के कारण अर्जुन ने पत्नी की हत्या गला काटकर की। घटना के दूसरे दिन मंगलवार शाम को खुखरा पुलिस को सूचना दी गयी और आरोपी अर्जुन महतो को पलड़कर पुलिस को सौंप दिया गया। मंगलवार सुबह थाना प्रभारी अजित महतो सदल बल के साथ घटना पहुंचकर पर पहुँचे और आगे की कार्रवाई में जुट गए। दो माह के अंदर खुखरा थाना क्षेत्र में यह दूसरे घटना है जो कि पति ने पत्नी की हत्या की।

प्रदेश >> अपडेट

बाबूलाल मरांडी जी को भाजपा नेत्री डॉ उषा सिंह ने दी बधाई

बेरमो: झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर भाजपा नेत्री डॉ उषा सिंह सह डॉ रविंद्र सिंह चैरिटेबल फाउंडेशन के अध्यक्ष ने बधाई दी है। उन्होने विश्वास व्यक्त किया है कि उनके नेतृत्व मे अगामी 2024 चुनाव मे भाजपा राज्य के सभी संसदीय क्षेत्र के साथ साथ राज्य के विधान सभा क्षेत्र मे उनके दिशा निर्देश पर विकास के पथ पर चलेगा झारखंड प्रदेश।

शॉर्ट न्यूज अपडेट्स >>

दर्दनाक घटना सुमित की मौत से मायूस है ग्रामीण

इचाक : इचाक पदमा थाना क्षेत्र के रोमी सूर्यपुरा गांव के पास हुई हृदय विदारक घटना में जान गवाने वाले छः लोगो में एक युवक इचाक के बड़की जलौंध गांव का निवासी था।जिसकी मौत इस दर्दनाक घटना में हो गई।मृत युवक की पहचान बड़की जलौंध निवासी स्व सुमित सिंह के छोटा पुत्र सूरज कुमार सिंह के रूप में हुई है। हादसे में हुई सूरज के मौत की खबर उसके पैतृक गांव बड़की जलौंध पहुंचते ही घर वालो और ग्रामीणों में मायूसी छा गई। गांव के दर्जनों युवक सूरज के हाल-चाल जानने के मकसद से घटनास्थल की ओर निकल गए। किंतु घटना के 2 घंटा बाद जब सूरज को मृत अवस्था में कुएं से बाहर निकाला गया तो उसके चाहने वाले ग्रामीणों ,परिजनों और साथियों में मायूसी छा गई। सूरज तीन भाइयों में छोटा था फिलहाल वह अपने फैमिली के साथ दीपू गढ़ा में रह रहा था । सूरज की मां पिता की मौत दस साल पूरे हो चुका है वह अपने दो बड़ भाइयों और चाचा चाची के सहारे दीपू गड़ा में रह रहा था । उसके चाचा यूपी में अधिकारी हैं। सूरज के दर्दनाक मौत की सूचना मिलते ही उसके परिवार वालों अचंभित है।ग्रामीण सूत्रों के मुताबिक सूरज वाहन को चला रहा था।

संक्षिप्त >> अपडेट्स

डीएवी ढोरी के ओलंपियाड विजेता बच्चे हुए सम्मानित

बेरमो /फुसरो: फुसरो नगर परिषद के मकोली स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल ढोरी में विद्यालय के प्रतिभाशाली बच्चों ने ब्लूम कैब ओलंपियाड तथा डीएवी ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया। ब्लूम कैप ओलंपियाड राष्ट्रीय स्तर पर अरिहंत प्रकाशन द्वारा आयोजित किया गया था। इसके साथ ही डीएवी सीएई द्वारा आयोजित डीएवी ओलंपियाड में विद्यालय के कई बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जिसमें कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों ने भाग लिया। दसवीं के आलोक कुमार, अर्चित कुमार, निष्ठा, कृष्णा चौधरी, अनिमेष बीना सिंह, आशीष महतो, सृष्टि कुमारी, अभय सिंह, राहुल कुमार, शिवांगी कुमारी, आलोक राज, कृष्णा अग्रवाल, हिमांशी कुमारी, कोमल कुमारी, अभिनव सिंह, कुमार ऋषभ, धीरज कुमार, पिंटू महतो, अभिषेक कुमार, प्रशांत टूडू, सत्यम कुमार, अर्चित कुमार, प्रथम खेमका, अरविंद सोनी, मनीष पांडे, अमन कुमार, अर्चित कुमार, राहुल ठाकुर, प्रथम खेमका, सूर्यकुमार, कृष्णा चक्रवर्ती, संजय कुमार, अभिषेक कुमार, विवेक तुरी, तनय राज, आशीष कुमार, कुमार आदित्य, आयुष गौरव, जानवी सिंह, अर्पिता कुमारी, पायल सिंह, रवि कुमार, निशान, अभिनय सिंह, अविनाश कुमार , नवप्रीत इत्यादि सफल घोषित हुए। ब्लूम कैप ओलंपियाड में जिन बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया उनमें अरनव पाल, तैबा खुलसुम, श्रेयांश कुमार, श्रेया कुमारी, गरिमा पाठक है।विद्यालय के प्राचार्य एस कुमार ने इन बच्चों को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरती हुई प्रतिभाओं को उचित प्लेटफार्म और समुचित प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करने की दिशा में हमारी संस्था निरंतर प्रयासरत है।

मुलाकात

खेला होबे की चर्चा के बीच हरिवंश ने नीतीश से भेंट की

लालू प्रसाद ने कहा उड़ती चिड़िया को भी हल्दी लगा देते हैं बिहार

- निर्वाचित जनप्रतिनिधियों से मिल रहे हैं नीतीश
- उनके नाम की पुस्तक का विमोचन किया लालू ने
- हरिवंश पर कई नेता नाराजगी जता चुके थे पहले

राष्ट्रीय खबर

पटना: नीतीश कुमार से आज काफी लंबे अरसे के बाद राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश ने भेंट की। यह मुलाकात तब हुई जब नीतीश कुमार संगठन, लोकसभा क्षेत्र और चुनावी तैयारियों पर फीडबैक लेने के लिए विधायकों और सांसदों के साथ इन दिनों मुलाकात कर रहे हैं। वे विधायकों और सांसदों के साथ वन टू वन मीटिंग कर रहे हैं। इसी क्रम में कुछ सांसद मंगलवार को भी नीतीश कुमार से मिलने उनके पटना स्थित आवास पहुंचे। यहां हरिवंश नारायण भी नीतीश कुमार से मुलाकात करने पहुंचे। दूसरी तरफ बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने कहा कि बिहार हार मानने वाला नहीं है। यहां महाराष्ट्र को दोहराने का सपना धरा का धरा रह जाएगा। उन्होंने कहा हमारे सांसदों-विधायकों को तोड़ने की चर्चा हो रही है, उन लोगों को पता ही नहीं कि बिहार उड़ती चिड़िया को भी हल्दी लगा देता है। बिहार टूटने-झुकने वाला नहीं है। यहीं से भाजपा के सफाये की शुरूआत होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हम उनकी मंशा में सफल नहीं होने देंगे।

वह नीतीश कुमार की जीवनी पर लिखे गये पुस्तक का विमोचन कर रहे थे। पटना में गांधी मैदान से सटे अशोक कन्वेंशन सेंटर में 750 से अधिक पन्नों की इस पुस्तक का विमोचन हुआ। मुख्यमंत्री के साथ अपने संबंधों को अटूट बताते हुए लालू ने कहा कि नीतीश बिल्कुल साधारण घर-परिवार से निकले नेता हैं। हमारी मित्रता वर्षों पुरानी है और यह आगे भी बनी रहेगी।

इधर जारी सियासी अटकलों के बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्यसभा उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह से मुलाकात की। यह मुलाकात लंबे वक्त के बाद हुई। हरिवंश जदयू से राज्यसभा सांसद हैं। वे पार्टी के बायकॉट के बावजूद नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह के मौके पर पहुंचे थे। इसके बाद जदयू ने नाराजगी व्यक्त की थी। नीतीश कुमार और हरिवंश के बीच ये मुलाकात ऐसे वक्त पर हुई, जब बिहार में कई तरह की सियासी अटकलें लगाई जा रही हैं। दरअसल, महाराष्ट्र में रविवार को जिस तरीके से राजनीतिक घटनाक्रम तेजी से बदला और अजित पवार के नेतृत्व में एनसीपी में बड़ी टूट हुई, उसके बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि महाराष्ट्र जैसी स्थिति बिहार में भी जल्द दोहराई जा सकती है।

पिछले तीन-चार दिनों के घटनाक्रम पर अगर नजर डालें तो राजनीतिक तौर पर ऐसी कई चीजें हुई है जो सामान्य नहीं है और इस ओर इशारा कर रही है कि महाराष्ट्र में जिस तरीके से एनसीपी में टूट हुई है वैसी ही टूट बिहार में जनता दल यूनाइटेड में देखने को मिल सकती है। कयास लगाए जा रहे हैं कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एक बार फिर अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर एनडीए में वापस आ सकते हैं।

नीतीश कुमार ने पिछले साल अगस्त में भाजपा से अलग होकर आरजेडी के साथ नई सरकार बनाई थी। इसके बाद बीते 10 महीने में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पांच बार बिहार का दौरा कर चुके हैं। शाह ने पिछले दौरे पर नीतीश कुमार पर जोरदार हमला किया था और उन्होंने कहा था कि नीतीश कुमार के लिए भाजपा के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं।

कई क्षेत्र हुआ जलमग्न

खिली धूप लोगों ने ली राहत की सांस

राष्ट्रीय खबर

पाकुड़: पिछले 4 दिनों से लगातार रुक रुक कर हो रही बारिश के रुक जाने व धूप खिलने से आम जनमानस ने राहत की सांस ली है वही किसान अपने खेतों में दिन रात पसीना बहा रहे हैं। किसानों के चेहरे में खुशी है किंतु इस अतिवृष्टि से जिस क्षेत्र के मकान सड़क खेत जलमग्न हो गए हैं वहां के लोग दुखी हैं और सरकार से मुआवजे की मांग कर रहे हैं। सदर प्रखंड के तोड़ाई नदी के किनारे कुसमा नगर, अनूप नगर गांव में सड़क 5 फीट धसने के समाचार है। महेशपुर पकुड़िया के मुख्य सड़क पर स्थित बडकियारी नारायणगढ़ गांव के बीच पगला नदी पर बने पुल के उपर से 3 फीट पानी बह रहा था।

जिससे कुछ देर तक यातायात बाधित रहा। जिले से होकर बहने वाली बांसलोई नदी, तिरप्तिया नदी, तोडाई नदी का जलस्तर बढ़ा है। जिले भर में 110 . 23 मिली बारिश हुई है। कई ग्रामों के खेतों में जल लबालब भरा है। डांगापारा , पारगला,के नदी में भी जल स्तर में काफी वृद्धि हुई है। यदि कुल मिलाकर देखा जाए तो इस वर्षा से कहीं खुशी कहीं गम का माहौल है। वर्षा अपने साथ खुशियां लेकर आई है।

मलेरिया और डेंगू से बचाव के लिए घर- घर दी जा रही दस्तक

मलेरिया डेंगू के बचाव के लिए उपायुक्त ने लोगों से की अपील ना जमने दे गंदगी

राष्ट्रीय खबर

पाकुड़: जिले के शहरी क्षेत्र के सभी वार्डों में डेंगू व चिकनगुनिया से बचाव को लेकर वॉलेंटियर्स द्वारा लार्वा की पहचान कर नष्ट करने के तरीके बताए जा रहे है. जिला भी.बी.डी पदाधिकारी डॉ. अमित ने बताया कि राज्य से प्राप्त निदेर्शानुसार कम्युनिटी वॉलिंटियर्स के दल के द्वारा शहर के सभी वार्डों में डोर टू डोर एडीज लारवा सर्वे एक जुलाई से प्रारंभ किया गया है। मॉनसून के दौरान एवं मॉनसून के पश्चात मच्छरों के बढ़ते प्रकोप से होने वाली विभिन्न बीमारियों (यथा - डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, जेई एवं फाइलेरिया आदि) के प्रसरण काल के अंतर्गत अर्थात माह जुलाई से माह नवंबर 2023 तक ये सभी कम्युनिटी वॉलिंटियर्स कार्ययोजना के अनुसार पाकुड़ जिला के शहरी क्षेत्रों के विभिन्न वार्डों के अंतर्गत घर-घर जाकर लोगों को इनसे बचने और रोकथाम के उपाय आदि बताकर जागरुक करेंगी। साथ ही मच्छरों के प्रजनन स्थलों की पहचान कर लोगों को इसे सप्ताह में एक बार नष्ट करने हेतु बताया जा रहा है, ताकि सभी जनसमुदाय इसे अपनाकर मच्छरों तथा इससे होने वाली बीमारियों से बच सकें। इसके अलावे जल-जमाव वाले क्षेत्रों, जैसे छोटे-छोटे गड्ढों, नली-नालों, अनुपयुक्त बर्तनों आदि में जमे पानी में पनपे हुए मच्छरों के लार्वा को नष्ट करने हेतु कीटनाशक दवा का भी छिड़काव किया जाएगा, ठहरे हुए या जमें हुए पानी को सुखाने हेतु लोगों को प्रेरित किया जाएगा तथा बर्तन में जमे हुए काई को रगड़ कर साफ कर इसमें पनपे हुए मच्छरों के अंडे को पहचान कर नष्ट करने हेतु बताया जा रहा है।

भाजपा ने मनाया स्वामी विवेकानंद का पुण्यतिथि

राष्ट्रीय खबर

पाकुड़: युवा प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानंद जी के पुण्यतिथि पर पाकुड़ नगर स्थित स्वामी विवेकानंद चौक पर स्थापित उनके आदमकद प्रतिमा पर भारतीय जनता पार्टी के नगर अध्यक्ष पंकज कुमार साह के नेतृत्व में माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष अमृत पाण्डेय, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य मीरा प्रवीण सिंह,पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष बाबुधन मुर्मू,भाजपा जिला उपाध्यक्ष हिसाबी राय सहित शबरी पाल,विश्वनाथ प्रसाद भगत,गणेश रजक,धर्मेंद्र त्रिवेदी,रतन भगत,पिंका पटेल,तुलसी वर्धन केकारानी सिन्हा आदि मौजूद थे। जिलाध्यक्ष अमृत पाण्डेय ने कहा कि हर वर्ष 4 जुलाई को स्वामी विवेकानंद जी की पुण्यतिथि मनाई जाती है।उन्हें भारत का सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक नेताओं और विद्वानों में से एक माना जाता है।विवेकानंद जी ने योग वेदांत के दर्शन को पश्चिमी देशों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।उन्हें 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में अपने भाषण के लिए जाना जाता है।स्वामी विवेकानंद जी भारत के आध्यात्मिक गुरु थे,जिन्होंने दुनिया भर में हिंदुत्व और अध्यात्म का पाठ पढ़ाया।स्वामी विवेकानंद ने कम उम्र में जो ज्ञान हासिल किया उसके बाद वह युवाओं के लिए प्रेरणा बन गए।

बाबूलाल मरांडी को झारखंड प्रदेश का बीजेपी अध्यक्ष बनने पर रविंद्र ने दी बधाई

राष्ट्रीय खबर

हरिहरगंज/पलामू : झारखंड के पहले मुख्यमंत्री रहे बाबूलाल मरांडी को बीजेपी झारखंड प्रदेश का अध्यक्ष बनने पर हुसैनाबाद हरिहरगंज विस क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता प्रदेश कार्य समिति सदस्य रविन्द्र कुमार सिंह उर्फ बबलू सिंह ने उन्हें दिल से बधाई दी है।

साथ ही इसके लिए उन्होंने बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा के प्रति आभार भी व्यक्त किया है। इसकी जानकारी पत्रकारों को देते हुए उन्होंने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि श्री मरांडी के प्रदेश अध्यक्ष बनने से झारखंड में बीजेपी संगठन को काफी मजबूती मिलेगी। जिसका लाभ आगामी लोकसभा और विधानसभा चुनावों में जरूर मिलेगा।

लापरवाही

कर्मचारियों की गलती से हुआ था रेल हादसा

रेलवे सुरक्षा आयुक्त ने जांच के बाद अपनी रिपोर्ट सौंपी

- रेलवे सूत्रों के मुताबिक रेलवे सुरक्षा आयुक्त की रिपोर्ट में व्यवधान पर कोई टिप्पणी नहीं की गई है
- पुराने गेट की जगह इलेक्ट्रिक बूम बैरियर लगाने का काम चल रहा था

राष्ट्रीय खबर

कोलकाता: यहां के रेलवे सूत्रों का दावा है कि रेलवे सुरक्षा आयुक्त ने संकेत दिया है कि करमंडल एक्सप्रेस हादसा रेलवे स्टाफ की गलती से हुआ है। हालांकि यह रिपोर्ट बुधवार को रेलवे बोर्ड को सौंपी गई, लेकिन रेलवे की ओर से इसे अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है। गौरतलब है कि रेलवे सूत्रों के मुताबिक रेलवे सुरक्षा आयुक्त की रिपोर्ट में व्यवधान पर कोई टिप्पणी नहीं की गई है। घटना में तोड़फोड़ की आशंका की जांच के लिए रेलवे के आदेश पर सीबीआई अलग से जांच कर रही है।

गत 2 जून को ओडिशा के बहनागा बाजार स्टेशन पर करमंडल एक्सप्रेस का एक्सीडेंट हो गया था। रेलवे सूत्रों के मुताबिक अब तक 291 लोगों की मौत हो चुकी है। हादसे के बाद शुरूआती रिपोर्ट में कहा गया कि करमंडल एक्सप्रेस का सिग्नल अप मेन लाइन पर था लेकिन उसे प्वाइंट लूप लाइन की ओर मोड़ दिया गया। नतीजा यह हुआ कि करमंडल लूप लाइन में प्रवेश कर वहां खड़े स्टील अयस्क लदे वैगन से टकरा गया। बाद में दक्षिण पूर्व रेलवे के कार्यवाहक रेलवे सुरक्षा आयुक्त अनंत मधुकर चौधरी ने घटना की जांच शुरू की।

हादसे की जांच प्रक्रिया के अंत में सौंपी गई रिपोर्ट के मुताबिक, हादसे वाले दिन स्टेशन के पास रेलवे गेट नंबर 94 (लेवल क्रॉसिंग) पर पुराने गेट की जगह इलेक्ट्रिक बूम बैरियर लगाने का काम चल रहा था। उस कार्य के लिए, सेक्शन सिग्नल इंस्पेक्टर ने शाम 4.20 बजे तक इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम को खत्म करने के लिए एक विशिष्ट ज्ञापन जारी किया। कुछ घंटों के बाद, उन्होंने स्टेशन मास्टर को एक और मेमो भेजा कि काम पूरा हो गया है और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम का कनेक्शन बहाल करने का अनुरोध किया। ट्रेन आने से पहले जल्दबाजी में मेमो दिया गया, लेकिन उसके बाद भी कुछ काम चल रहा था। साथ ही प्रभारी स्टेशन मास्टर ने सिस्टम की जांच कर कन्फर्म होने से पहले ही करमंडल एक्सप्रेस के लिए सिग्नल देने की प्रक्रिया शुरू कर दी। कुछ चरणों के बाद, सिग्नलिंग प्रणाली सक्रिय हो जाती है इससे पहले कि यह पुष्टि हो जाए कि बिंदु दोष का पता नहीं चला है। सिग्नलिंग के प्रभारी विभाग के अलावा, रिपोर्ट ने ट्रेन मार्गों को निर्दिष्ट करने के लिए यातायात विभाग को दोषी ठहराया।

>>>> न्यूज फटाफट

असंतुलित होकर वाहन गिरा गड्ढे में, कोई हताहत नहीं

लिट्टीपाड़ा: यदि सड़कें खाली हो ,शानदार हो और जानदार हो तो वाहन चलाने का आनंद ही कुछ और है। चाहे इसकी अंजाम कुछ भी हो जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर लिट्टीपाड़ा थाना क्षेत्र के अमडापाड़ा की ओर जाने वाली मुख्य सड़क में ब्लॉक के पास तेज रफ्तार हाईवा के संतुलन बिगड़ने से ब्रेक लेते लेते नीचे और लुढ़क गया। यह हाईवा पाकुड़ से कोयला अपलोड कर लिट्टीपाड़ा के रास्ते अमलापाड़ा जा रहा था। खाली रस्ता देख कर ड्राइवर में गति गति काफी तेज कर दी फल स्वरूप हाईवा असंतुलित होकर गड्ढे की ओर लुढ़क गया। गनीमत रही चालक उप चालक दोनों की जान बच गई ।किसी भी के हताहत होने की समाचार नहीं है। सवाल उठना लाजमी है की सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है ।वाहन चलाने के नियम में बताए जा रहे। किंतु चालक अपनी मनमानी से बाज नहीं आते। फल स्वरूप दुर्घटना के शिकार होते हैं। जिसका नतीजा आपके सामने हैं।

हरिणडंगा उच्च विद्यालय में विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के नियमों से किया गया जागरूक

पाकुड़ : हरिणडंगा उच्च विद्यालय पाकुड़ में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच सड़क सुरक्षा के नियमो अनुपालन के प्रति जागरूक किया गया। बताया गया कि बारिश के मौसम वाहन चलाते समय मुख्य बातों का रखे ध्यान नहीं तो दुर्घटना के शिकार होंगे। मोटरसाइकिल चलाते समय फुल स्कल प्रोटेक्शन का हेलमेट का उपयोग जरुरी है। आगे और पीछे बैठे (ड्राइवर / पीछे बैठे) दोनों को ही आवश्यक रूप से हेलमेट का उपयोग मोटरसाइकिल का ब्रेक को हमेशा चेक कराते रहे। मोटरसाइकिल चलाते समय बारिश से बचने के लिए छाता का उपयोग न करें ड्राइव करते वक्त रेनकोर्ट का ही उपयोग करें। मोटरसाइकिल का हेड लाइट अवश्यकता अनुसार ही हाई बीम पर रखे अन्यथा लो बीम पर चलायें। अगर मोटरसाइकिल का हेड लाइट उपयोग करने से तेज बारिश में सामने से आने वाले वाहन की दिशा का पता चलता है की उसका वाहन का क्या प्रकार है। वाहन के सभी कागजात दुरुस्त रखे। मोटरसाइकिल का टायर की जांच करें की टायर मे गृप है या खत्म हो गया है। अगर गृप खत्म हो गया है तो टायर को तुरंत बदले। मोटर साइकिल का गति हमेशा सिमित रखें। ओवरटेक करने से बचे। रोड में अगर बहुत सारा पानी हो तो वाहन की गति तुरंत कम करें और वाहन को रोड के अनुसार ये देखे की रोड में कही कोई गढ़ढा तो नहीं है जिसमें पानी भर गया है इसका ध्यान दे। जूता जरूर पहने एवं अन्य रोड सेफ्टी की जरुरी बातो, रोड साइनेज का भी ध्यान जरूर रखे।

वाईजेके स्टूडेंट्स फेडरेशन ने जीएलए कॉलेज में लगाया हेल्पडेस्क

मेदिनीनगर : वाईजेके स्टूडेंट्स फेडरेशन ने जीएलए कॉलेज में चल रहें सेमेस्टर 5 में नामांकन को देखते हुए हेल्पडेस्क लगा कर विद्यार्थियों की सहायता की। श्रवण सिंह ने कहा कि हमारे संगठन द्वारा कॉलेज में सेमेस्टर 5 में नामांकन के समय को देखते हुए हेल्पडेस्क लगाया गया ताकि विद्यार्थियों को किसी प्रकार की कोई समस्या ना हो ने। विकाश मेहता ने कहा कि वाईजेके स्टूडेंट्स फेडरेशन छात्र हित में सदैव तत्पर रहा है और आगे भी इसी तरह तत्पर रहेगा और विद्यार्थियों के लिए आवाज बुलंद करता रहेगा। जिला अध्यक्ष विपिन यादव ने कहा कि हमारे संगठन की प्राथमिकता छात्र हित है। नामांकन को देखते हुए यह हेल्पडेस्क लगाया गया है ताकि विद्यार्थी की सहायता की जा सके, यह आगे भी लगाया जाएगा। संगठन के हेल्पडेस्क से कई छात्र लाभान्वित हुए और विद्यार्थियों की भरपूर सहायता की गई। इस मौके पर अजीत, मनोज, आलोक, सत्यम, अंकित आदि मौजूद थे।

बौधा डैम में अधिकार ना मिलने को लेकर उपायुक्त समेत अन्य अधिकारियों को दिया आवेदन

टाटीझरिया : टाटीझरिया प्रखंड के प्रसिद्ध बौधा डैम में मछली पालन का टेंडर वर्षो से हो रहा है जिसमें सिर्फ खम्भवा के लोगों को पुर्ण अधिकार मिलते आ रहा है जबकि खम्भवा और अमनारी को जमीन डैम में बराबर गया है जबकि कुछ हिस्सा बौधा का गया है लेकिन अमनारी के ग्रामिणों को मछली पालन मे टेंडर भरने का कोई अधिकारी और सुचना नही मिलते आ रहा है। अभी डैम का पुनः? टेंडर हो रहा है और इसकी सुचना अमनारी के जमीन मालिक समेत अन्य प्रतिनिधि को नही मिला जिससे गुस्साये ग्रामिणों ने हजारीबाग उपायुक्त, कार्यपालक अभियंता भुमि सर्वेक्षण विभाग, जिला मत्सय पदाधिकारी हजारीबाग को दिया है। सभी अधिकारियों से बौधा डैम का पुनः सर्वेक्षण करा कर समान अधिकार दिलाने की मांग किया साथ ही अभी टेंडर ना कराने की बात कहा। जमीन मालिक धानेश्वर पासवन ने कहा कि हमलोगों का जमीन गया है तो अधिकार मिलना चाहिए जब तक अधिकार ना मिले तब टेंडर रोकने का मांग किया है। वहीं भराजो मुखिया स्वास्तिका कुमारी एवं बरकट्ठा विधायक प्रतिनिधि उपेंद्र पांडेय ने भी जांच करवाकर टेंडर कराने की मांग किया है। आवेदन में मुखिया स्वास्तिका कुमारी,विधायक प्रतिनिधि उपेंद्र पांडेय,उपमुखिया कौलेश्वर कुमार,सुरेंद्र राम,सुनिता देवी,धानेश्वर पासवन,शीवा कुमार,मंजु देवी,अंजली देवी,पुनम कुमारी,राधे प्रसाद,अनिल प्रसाद,अकाश कुमार,पप्पु कुमार,उमेश कुमार,किरण देवी,सुरज महतो,जयप्रकाश सिंह,आदित्य कुमार समेत अन्य का है।

झारखंड धार्मिक न्यास बोर्ड के सदस्य बनने पर वरिष्ठ दयानंद मिश्रा

मेदिनीनगर : जिला मुख्यालय स्थित परिसदन भवन में आयोजित समारोह की अध्यक्षता पलामू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जैश रंजन पाठक उर्फ बिट्टू पाठक कार्यक्रम का संचालन पलामू जिला बीस सूत्रीकार्यक्रम क्रियान्वयन समिति की उपाध्यक्षा विमला कुमारी ने किया ।अपने सम्मान समारोह के अवसर पर हृदानंद मिश्रा ने कहा कि पहली प्राथमिकता रहेंगे जो मंदिर की पंजीयन नहीं हुआ है उसको प्राथमिकता के साथ कराने का काम करूंगा झारखंड सरकार जिस आस्था और विश्वास से मुझे सदस्य बनाया है उनके आस्था और विश्वास को मंजिल तक पहुंच जाऊंगा इस अवसर पर जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता के डी सिंह ने कहा कि झारखंड कौंग्रेस धनबाद के पात्र हैं जो झारखंड प्रदेश के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता हृद्यानंद मिश्र को धार्मिक न्यास बोर्ड के सदस्य बनाकर सम्मानित किया ।इससे आने वाले दिनों में झारखंड में कांग्रेस मजबूत होगी तथा सभी धर्मों में सद्भाव बढ़ेगा ।समारोह को संबोधित करने वालों में वरिष्ठ कांग्रेसी सत्यानंद दुबे प्रदेश सचिव राम आशीष पांडे लक्ष्मी नारायण तिवारी विनोद कुमार तिवारी राजेश चौरसिया वरिष्ठ कांग्रेसी ओम प्रकाश अमन सुनीता देवी, रा विश्राम दुबे सत्येंद्र कुमार सिंह विद्या सिंह चेरो मनोज कुमार पांडे ओम प्रकाश अमन रघुनंदन प्रसाद रामानंद पांडे कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन मनोज कुमार पांडे ने की।

शहर >> अपडेट

राजद पार्टी का स्थापना दिवस आज

मरकच्चो : राष्ट्रीय जनता दल पार्टी कार्यालय मरकच्चो में बुधवार को पूर्वाह्न 10 बजे राष्ट्रीय जनता दल का 27वां स्थापना दिवस मनाया जायगा। उक्त बातों की जानकारी प्रखण्ड प्रमुख सह पार्टी के प्रखण्ड अध्यक्ष विजय कुमार सिंह ने दी। उन्होंने यह भी बताया कि इस मौके पर जिले एवं प्रखंड के कई गणमान्य नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे।

सिटी अपडेट्स >>

134 संदेहास्पद कुष्ट मरीजों की हुई जांच

कोडरमा : राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के लेप्रोसी केस डिटेक्शन कैंपेन (कुष्ठ रोग खोज अभियान) के अंतर्गत जयनगर क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तिलैया डैम में कांटी कांको, धमराई सहित अन्य ग्रामों में इस खोज अभियान में मिले कुल 134 संदेहास्पद मरीजों की जांच जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ रमण कुमार द्वारा किया गया, जिसमे कुल 8 मरीजों में कुष्ठ के लक्षण एवं 1 कुष्ठ मरीज में कुष्ठ के कारण विकलांगता के मरीज मिले जिन्हे तत्काल मल्टी ड्रग थेरेपी दवा एवं उनके संपर्क के व्यक्तियों को सिंगल डोज रिफांपीसीन देने का निर्देश दिया। विदित है। की यह खोज अभियान 15 जून से चल रहा है। जिसमें जिले में अभी तक कुल 1278 संदेहास्पद मरीज मिले हैं। जिनमें 40 मरीजों में कुष्ठ के लक्षण मिले हैं। जिनका इलाज तत्काल शुरू कर दिया गया है। डा रमण ने कहा कि इस कुष्ठ रोग खोज अभियान का लक्ष्य यह है। की वे छिपे हुए कुष्ठ रोगियों को जल्दी से जल्दी खोज कर मल्टी ड्रग थेरेपी शुरू कर दें।

संक्षिप्त >> अपडेट्स

जयनगर प्रखंड में अवैध महुआ शराब की बिक्री धड़ल्ले से

जयनगर : प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में महुआ निर्मित अवैध शराब की बिक्री धड़ल्ले से हो रही है। जिसे लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। ज्ञात हो कि प्रखंड के चुटियारो, जयनगर, अलगडीहा, महुआगड़ा, सतडीहा, बाघमारा, खगराडीह, नवादा, लतबेधवा सहित अन्य गांवों व चौक चौराहों तथा छोटे छोटे होटलों में विगत कई महीनों से अवैध शराब का निर्माण व उसकी बिक्री की जा रही है। जिससे आसपास का वातावरण प्रदूषित हो रहा है। शाम ढलते ही इन स्थलों पर लोगों की भीड़ जमा हो जाता है। और फिर महुआ शराब को पीने में डूब जाते है। अवैध शराब की बिक्री व निर्माण को लेकर ग्रामीण महिलाओं ने कई बार आंदोलन किया था और अवैध शराब के धंधे को बंद करने के लिए उपायुक्त, उत्पाद विभाग सहित कई पदाधिकारियों को पत्र लिखा गया लेकिन इस पर किसी तरह का भी एक्शन नहीं लिया गया। हां कभी कभार अवैध महुआ शराब के खिलाफ छापेमारी की जाती है। जिसमें शराब बनाने के उपकरण को नष्ट किए जाते हैं। परंतु व्यवसाई पुलिस की पकड़ से बाहर हो जाते हैं। बताते चलें कि शराब पीने के बाद आपस में उलझने से दुकान के आसपास रहने वाले लोगों को काफी परेशानी होती है। यहां तक कि शाम ढलते ही महिलाओं का निकलना भी मुश्किल हो जाता है। शराब दुकानों के अगल-बगल शोर-शराबे के कारण इसका असर बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ रहा है। कई महिलाएं अवैध शराब पीकर आए हुए व्यक्तियों का प्रताड़ना का शिकार बन रही है। महिलाओं व ग्रामीणों ने अविलंब अवैध शराब निर्माण व बिक्री पर अंकुश लगाने की मांग प्रशासन से किया है। इन लोगों ने कहा कि यदि प्रशासन, अवैध शराब निर्मित व बिक्री पर रोक नहीं लगाती है तो वे आंदोलन करेंगे।

सम्मान

खिलाड़ियों को विद्यालय परिसर में किया गया सम्मानित

राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में पदक जीतकर लौटे खिलाड़ी

राष्ट्रीय खबर

- डिवाइन पब्लिक स्कूल के परिसर में सम्मान समारोह का आयोजन
- डिवाइन पब्लिक स्कूल कुल 11 विद्यार्थी इस प्रतियोगिता में भाग लिया
- 2 को गोल्ड, 5 को सिल्वर एवं 1 को कांस्य पदक प्राप्त हुआ
- खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर एवं सर्टिफिकेट और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया

कुडू: राज्य स्तरीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप के विजेता खिलाड़ियों को डिवाइन पब्लिक स्कूल के परिसर में सम्मान समारोह का आयोजन कर सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि देवघर के बंपास टाउन के सुभद्रा वाटिका में 27 एवं 28 जून को झारखंड राज्य ताइक्वांडो चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था जिसमें डिवाइन पब्लिक स्कूल कुल 11 विद्यार्थी इस प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें 2 को गोल्ड, 5 को सिल्वर एवं 1 को कांस्य पदक प्राप्त हुआ ।

आयुष्मान कुमार सिंह और अंजली कुमारी को गोल्ड मेडल ,अंश कुमार,रिया कुमारी, सत्यम कुमार, आर्यमन प्रताप सिंह एवं आर्यन पाल को सिल्वर मेडल एवं दीपक गोप को ब्रांच मेडल प्राप्त हुआ ।

सभी विजेता खिलाड़ियों को डिवाइन पब्लिक स्कूल के विद्यालय प्रांगण में विद्यालय के द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन कर सम्मानित किया गया ' विद्यालय के डायरेक्टर और शिक्षकों के द्वारा खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर एवं सर्टिफिकेट और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। मौके में उपस्थित विद्यालय के डायरेक्टर ने कहा इस तरह की उपलब्धि हमारे स्कूल के विद्यार्थियों के द्वारा जिले के नाम रोशन किया ये बहुत ही हर्ष की बात है ' डायरेक्टर ज्ञान गंगा सिंह एवं ताइक्वांडो प्रशिक्षक अरविंद यादव, शिक्षक समीर , शिक्षिका रेशमी प्रवीण, सुनिता कुमारी, विद्या कुमारी, सुनिता देवी, मीणा कुमारी, पिंकी कुमारी, सुलेखा सिंह, चांदनी प्रवीण, असरीता कुमारी, मनीषा तिर्की, उपस्थित रही '

वनरक्षी विवेक और कृष्णमोहन हुए निलंबित

राष्ट्रीय खबर

विडंबना:अफसर शाही का

चतरा: प्रतापुर वन क्षेत्र में जलावन के लिए झाड़ियां व सुखी टहनियां लेकर जा रहे बुजुर्ग से उठक-बैठक कराने के मामले में उत्तरी वन प्रमंडल के डीएफओ राहुल मीणा ने बड़ी कार्रवाई करते हुए वनरक्षी विवेक कुमार और कृष्णमोहन दास को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। साथ ही जांच रिपोर्ट आने के बाद दोनों के विरुद्ध अग्रेतर कार्रवाई करने की भी बात कही है। निलंबन अवधि में दोनों वनरक्षियों को प्रमंडलीय कार्यालय में रिपोर्ट करने का निर्देश दिया गया है। उपायुक्त अबू इमरान ने ट्वीट कर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को कार्रवाई से अवगत कराया है। गौरतलब है कि उत्तरी वन प्रमंडल अंतर्गत प्रतापपुर वनक्षेत्र में घोरान लेकर जा रहे बुजुर्ग को उसकी बहू और पोते के सामने दोनो वनरक्षियों ने उठक-बैठक कराई थी। पब्लिक एप में खबर चलने के बाद मुख्यमंत्री ने मामले में संज्ञान लेते हुए चतरा उपायुक्त को जांच के आदेश दिए थे।

गुरु और शिष्य एक दूसरे के परस्पर सहयोगी होते हैं

गुरु पूर्णिमा का त्यौहार काफी धूमधाम एवं भक्ति भाव से मनाया गया

राष्ट्रीय खबर

कुडू: प्रखंड क्षेत्र के बड़की चापि दुर्गा मंदिर प्रांगण में गुरु पूर्णिमा का त्यौहार काफी धूमधाम एवं भक्ति भाव के साथ के साथ सोमवार को मनाया गया।

इस मौके पर पुरोहित अनूप देव पौराणिक ने विधिवत पूजा पाठ करवाई ।तत्पश्चात भक्तों ने पुरोहित स्वर्गीय अर्जुन देव पौराणिक के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया ,पुष्प अर्पित किया ।

तत्पश्चात भक्तों ने अनूप देव पौराणिक का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया ।इस मौके पर दुर्गा मंदिर प्रांगण में दिन भर पूजा ,पाठ , भजन,प्रसाद वितरण एवं भंडारे का आयोजन किया गया ।इस मौके पर श्री पौराणिक ने कहा कि गुरु और शिष्य एक दूसरे के परस्पर सहयोगी होते हैं ,गुरु का काम है ज्ञान देना और शिष्यों का काम है उस ज्ञान पर अमल करके अपने जीवन को आगे बढ़ाना ।

इस मौके पर भूपाल पाठक,बिंदेश्वर सिंह, यदुनंदन तिवारी, भूषण प्रसाद,मनोज साहू, लाल गौरी शंकर नाथ शाहदेव ,अमोद पाठक ,राधा प्रसाद ,लाल शिव,मुकेश साहू,रंजीत तिवारी,संतोष पांडेय,नीरज प्रसाद, आनंद सिंह, सहित कई लोग उपस्थित थे।

बीमारी की शुरूआत में ही इलाज करना अभियान का मुख्य उद्देश्य है: डॉ. बीरेंद्र कुमार सिंह

राष्ट्रीय खबर

पेटरवार : पेटरवार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सभागार में मंगलवार को राज्य मलेरिया पदाधिकारी डॉ बीरेंद्र कुमार सिंह, केयर इंडिया के अभिनाश कात्यायन एवं जिला मलेरिया पदाधिकारी डॉ रेणु भारती ने संयुक्त रूप से फलेरिया किलिंनिक का उद्घाटन फीता काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर श्री सिंह ने कहा कि एक संकल्प के साथ हमलोगों का प्रयास होना चाहिए कि फलेरिया के मरीज अंतिम स्टेज पर न मिले जिससे उसकी पूरी जीवन लाचारी के साथ गुजारे। बीमारी की शुरूवात में ही इलाज करना अभियान का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर हाथी पांव से सबंधित रोग के रोकथाम का ब्यापक प्रचार- प्रसार कर लोगों को जागरूक करने का भी काम करना चाहिए। मौके पर श्री सिंह ने विभिन्न वार्डो का निरीक्षण कर मरीजों से अस्पताल में दी जा रही चिकित्सीय सुविधाओं की जानकारी ली। निरीक्षण के क्रम में उन्होंने लैब टेक्नीशियन के द्वारा क्रॉस चेक पंजी लैब में नही रहने पर नाराजगी ब्यक्त की। उन्होंने मरीजों के जांच के बाद उसके मोबाइल नम्बर रखने का निर्देश दिया ताकि ताकि बीमारी के गंभीर लक्षण मिलने पर उसे जानकारी दें सकें। इस अवसर पर हांथी पांव मरीजों के बीच कीट का वितरण व इसके उपयोग की विधि की जानकारी दी गयी। मौके पर राज्य सलाहकार वनय कुमार, चिकित्सा प्रभारी डॉ कुंदन राज, डॉ राहुल प्रियदर्शी, विजय रजक, देवेन्द्र प्रसाद, मनोज कुमार, जितेंद्र कुमार सहित स्वास्थ्यकर्मी मौजूद थे।

अनुमंडल पदाधिकारी ने डीजे संचालकों के साथ की बैठक

राष्ट्रीय खबर

कोडरमा: उपायुक्त कोडरमा की अध्यक्षता में पिछले दिनों सड़क सुरक्षा समिति की संपन्न हुई बैठक में यह बात सामने आई थी। कि कोडरमा जिले में डीजे से आये दिन दुघर्टनाएं हो रही है। डीजे संचालक अपने वाहन में रॉड के माध्यम अतिरिक्त स्थान निकाल देते हैं। जिससे दुघर्टनाएं होने की ज्यादा संभावना होती है। और दुघर्टनाएं हो भी रही है। साथ ही डीजे काफी आवाज में बजाते हैं। जिससे ध्वनि प्रदूषण होती है। उपायुक्त के निदेर्शानुसार आज अनुमंडल पदाधिकारी संदीप कुमार मीणा की अध्यक्षता में कोडरमा जिले के डीजे मालिक संचालक व दुकानदारों के साथ बैठक संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से डीजे बजाने को लेकर चर्चा की गयी। अनुमंडल पदाधिकारी ने सख्त हिदायत देते हुए कहा कि जितने भी डीजे संचालक है। वे अपने वाहन में अतिरिक्त स्थान नहीं निकलेंगे। साथ ही लाउडस्पीकर एक्ट के तहत नियमों को पालन करते हुए डीजे बजायेंगे।

मनमानी

पंचायत बुलाकर महज तीन लाख में कर दिया मौत का सौदा

प्रेमी युगल को बांध कर पीटा, प्रेमिका की गई जान

राष्ट्रीय खबर

चतरा: सदर थाना क्षेत्र के मसूरियातरी गांव मे विवाहिता के ससुराल वाले ने बहू को लाठी डंडे से पीट-पीटकर की हत्या प्रेमिका से मिलने गांव के नदी किनारे पहुंचे प्रेमी और विवाहित प्रेमिका को पकड़कर खंभे में बांधकर बेरहमी से पिटाई करने का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है ।इस घटना में जहां प्रेमिका की मौके पर ही मौत हो गई वहीं प्रेमी को पीटकर में अधमरा कर परिजनों को सौंप दिया है। इतना ही नहीं प्रेमिका सुगिया देवी की मौत के बाद गांव में पंचायत बुलाकर महज तीन लाख में ही उसके जान का सौदा तक ग्रामीणों द्वारा कर दिया गया। जिसके बाद पुलिस को मामले की जानकारी मिले इससे पहले शव तक को ग्रामीणों ने जला दिया। घटना विगत 30 जून की रात की बताई जा रही है। इससे संबंधित मारपीट का एक वीडियो भी तेजी से वायरल हो रहा है। घटना चतरा जिले के बरैनी पंचायत अंतर्गत घोर नक्सल प्रभावित मसूरियातरी गांव में घटी है। सोशल मीडिया में वीडियो वायरल होने के बाद मामले को गंभीरता से लेते हुए एसपी राकेश रंजन ने सदर थाना पुलिस को जांच कर दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई का निर्देश दिया है। मसूरियातरी गांव निवासी प्रेमी भूपिन गंझू अपनी विवाहित प्रेमिका सुगिया देवी से मिलने 30 जून की रात गांव के नदी किनारे पहुंचा था। इसी दौरान गांव के कमल गंझु, अनिल गंझू और बोधा गंझू समेत अन्य परिजनो ने उन्हें बात करते रंगे हाथ पकड़ लिया।

जिसके बाद दोनों की मौके पर ही खंभे में बांधकर जमकर बेरहमी से पिटाई कर दी। बताया जा रहा है कि परिजनों द्वारा की गई बेरहमी से पिटाई के दौरान मौके पर ही प्रेमिका सुगिया देवी ने दम तोड़ दिया वहीं उसका प्रेमी भूपिन गंझू गंभीर रूप से घायल है। सुगिया देवी की एक बेटी है और उसका पति बाहर रहकर कमाता है।आश्चर्य की बात तो यह है कि इतनी बड़ी घटना घटने के बाद भी ना तो मौके वाले नाही ग्रामीणों ने दोषियों के विरुद्ध पुलिसिया कार्रवाई कराने के बजाय गांव में ही पंचायत बुलाकर महज तीन लाख रुपये में महिला की मौत का सौदा तक कर दिया।

साथ ही आनन-फानन में पुलिस मामले में कुछ कार्रवाई करें इससे पहले ही महिला का शव तक जला डाला। और उसके परिजनों पर पुलिस को सूचना नहीं देने का दबाव बनाते हुए सूचना देने पर गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी तक दे डाली।

न्यूज फटाफट

स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया गया गुरु पूर्णिमा उत्सव

कोडरमा : स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल असनाबाद में गुरु पूर्णिमा का उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया ।इस कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाध्यापक सूरज कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि गुरु के बिना जीवन अंधकारमय होता है। गुरु के बिना व्यक्ति कभी भी सफलता हासिल नहीं कर सकता है। इस मौके पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा भाषण,गीत आदि भी प्रस्तुत किया गया। वही कार्यक्रम के द्वारान श्रुति कुमारी ने कहा कि गुरु बिन ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता है ।चाहत सिन्हा ने कहा कि गुरु के माध्यम से ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। प्रसन्न राज रंजन ने कहा कि गुरु हमारे मार्ग दर्शक होते हैं हमें उनके बताये मार्ग पर चलना चाहिए। वही संजना कुमारी,प्रेरणा कुमारी,शशि कुमार,अंकित कुमार,आर्यन कुमार के साथ-साथ दर्जनों छात्र छात्राओं ने गुरु जी के विषय में प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय के उपनिदेशक दीपक कुमार एवं शिक्षिकाएं प्रीति कुमारी,प्रियंका कुमारी,सोनिया कुमारी और पूजा शर्मा उपस्थित थी।

एसपी ने देर रात दुकानों में छापेमारी की

कोडरमा : पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव ने देर रात झुमरीतिलैया शहर के कई दुकानों में छापेमारी की। उन्होंने बताया कि कई जगहों पर अवैध तरीके से लोगों को शराब का सेवन कराया जा रहा था जिसकी शिकायत बार-बार मिल रही थी। जिसके बाद पेट्रोलिंग टीम की मदद से जिन जगहों पर अड्डेबाजी होती थी उन जगहों को भी चिन्हित किया गया। उन्होंने लोगों से भी सहयोग करने की अपील की। उन्होंने यह भी बताया कि एक झोपड़ी नुमा होटल से शराब की बोतल बरामद की गई है जिसे वहां अवैध रूप से रखा गया था। शहर में हो रहे अड्डे बाजी की शिकायतों पर पैंथर जवानों को भी पुलिस कप्तान ने जमकर फटकार लगाई। उन्होंने पैंथर के जवानों को वर्दी में रहने का आदेश दिया। साथ ही समय-समय पर दुकानों और अड्डेबाजी वालें जगहों पर ध्यान रखने का निर्देश दिया।

भव्य वर्षा योग चातुर्मास कलश की स्थापना

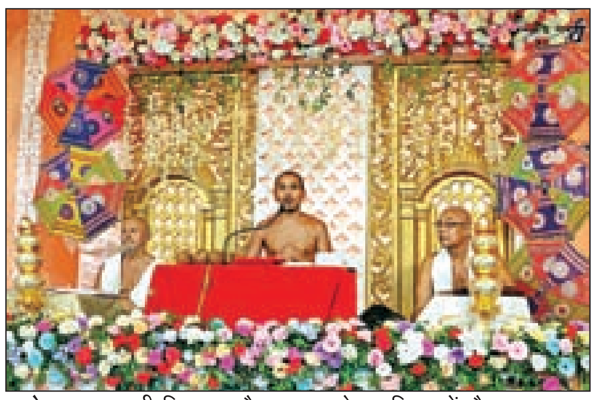

कोडरमा : श्री दिगम्बर जैन समाज के सानिध्य में जैन बड़ा मंदिर के बगल प्रांगण में भव्य वर्षा योग, चातुर्मास कलश की स्थापना सम्पन हुई । जैन संत चर्या शिरोमणि प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री 108 विशुद सागर जी महामुनिराज के परम प्रभावक श्रमण मुनि गुरुदेव श्री 108 सुयश सागर जी के चरणों में समाज के पदाधिकारियों श्रीफल अर्पित कर चातुर्मास नकी स्वीकृति लिया ।आज के कार्यक्रम का संचालन राज छाबड ने किया , स्वागत भाषण कार्यक्रम के संयोजक नरेंद जैन झांझरी ने दिया, अभिषेक जैन शास्त्री ने कलश स्थापना, पूजन विधान का कार्य किया, जैन भजन गायक सुबोध जैन गंगवाल,नविन जैन पांड्या ने अपने भजनों से पूरे कार्यक्रम से सभी को भक्ति की सागर में डूबा दिया सभी लोग गुरु भक्ति में आनंदित थे। पूरे भारतवर्ष और झारखंड से आए भक्तों ने गुरुदेव को श्रीफल भेंट किया आशीर्वाद लिया सर्वप्रथम आज प्रातः ध्वजारोहण देवेन्द्र-वीना काला परिवार दुर्ग ने किया, मंडप उदघाटन कर्ता सुशील-राज,सुनील जैन छाबडा,कोडरमा,दुर्ग,भिलाई ,दीप प्रज्वलित कर्ता राजकला-प्रेमा जैन काला तामसा महाराष्ट्र ने किया और प्रथम मुख्य कलश की स्थापना पवन जैन सेठी दालकोला,अजित जैन पांड्या बारसोई, बिहार निवासी को मिला गुरुदेव के चरण धोने का सौभाग्य कोडरमा के सुरेन्द जैन काला के भक्तों को मिला, शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य को मिला, वस्त्र देने का सौभाग्य मूलचंद सुशील कुमार छाबड़ा परिवार को मिला,इस अवसर पर मुनि श्री ने कहा कि पभक्तों के पुण्य के उदय से चातुर्मास होता हू पूरे देश मे शहर तो कई है लेकिन जिस नगर का पुण्य होता है वही जैन संत का चातुर्मास होता है और जिनका पुण्य का उदय आता है उनको ही कलश स्थापना का भीबसौभाग्य मिलता है आप सबो ने चातुर्मास कलश स्थापना तो कर दिया अब आप सब को इस चातुर्मास में तप,त्याग और संयम को ओर बढ़ाना है तभी ये चातुर्मास सफल और ऐतिहासिक होगा ।इस अवसर पर मंत्री ललित जैन सेठी ने बताया कि चातुर्मास मंगल कलश विश्व शांति व विश्व का कल्याण के उद्देश्य चार माह धर्म की गंगा के साथ भव्य स्वर्णिम वषायीग के निर्विघ्न सानंद संपन्न होने की मंगल कामना को लेकर स्थापित किए जाते हैं ।आज चातुर्मास कलश स्थापना के उपरांत समाज के प्रत्येक परिवार ने भी अपने अपने कलश विराजमान कर मंगल कामना की। मुख्य रूप से उपस्थित दुर्ग,हजारीबाग, बारसोई,गोंदिया, भाटापारा,रांची,जसपुर के अलावा देश के कई शहरों से सेकड़ो भक्त उपस्थित हुवे । इस चातुर्मास कलश स्थापना में संयोजक नरेंद्र झाझंरी, सह संयोजक सुनीता सेठी,ममता सेठी,राजीव छाबडा,सुमित जैन ,मनीष जैन सेठी, दिलीप जैन बाकलीवाल,सुशील पंड्या, विनोद अजमेरा , जैन समाज के मीडिया प्रभारी नवीन जैन राजकुमार अज्मेरा जैन युवक समिति के सभी टीम ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया ।

मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर राजनीतिक दलों के साथ बैठक

कोडरमा : समाहरणालय सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त आदित्य रंजन की अध्यक्षता में मंगलवार को राजनीतिक दलों की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 के संबंध में विस्तृत रूप से सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि को अवगत कराया गया। मतदाता सूची के पुनरीक्षण के दौरान सभी मतदान केन्द्रों पर राजनीतिक दलों को बूथ लेवल एजेंट प्रतिनियुक्ति करने हेतु कहा गया है। ताकि किसी भी योग्य व्यक्ति मतदाता सूची में जुड़ने से वंचित नहीं रहे। नाम जोड़ने हेतु प्रपत्र 6, नाम हटाने हेतु प्रपत्र 7 एवं किसी प्रकार के सुधार करने प्रपत्र 8 के संबंध में भी जानकारी दी गई। आनलाईन आवेदन करने एप के संबंध में जानकारी दी गई।, माकपा से रमेश प्रजापति, माले से राजेन्द्र प्रसाद, समाजवादी पार्टी से सुभाष राणा, मो फैयाज केशर, राजू सिंह एवं चंद्रशेखर जोशी उपस्थित थे।

न्यूज फटाफट

छंगटे, मनीषा चुने गये साल के सर्वश्रेष्ठ फुटबॉलर

नयी दिल्ली: अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने लल्लिजुआला छंगटे को साल का सर्वश्रेष्ठ सीनियर पुरुष फुटबॉलर चुना है, जबकि मनीषा कल्याण को साल की सर्वश्रेष्ठ सीनियर महिला फुटबॉलर के पुरस्कार से नवाजा गया है। एआईएफएफ ने आम सभा की वार्षिक बैठक के बाद मंगलवार को इसकी घोषणा की। साल 2022-23 के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों और कोचों का चयन प्रख्यात पूर्व खिलाड़ियों द्वारा किया गया, जो एआईएफएफ की कार्यकारी समिति के सह-चयनित सदस्य भी हैं। इस बीच, 21 वर्षीय आकाश मिश्रा और 16 वर्षीय शिलजी शाजी को क्रमशः पुरुष एवं महिला वर्ग में साल के उभरते हुए खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया। ओडिशा एफसी को सुपर कप जिताने वाले क्लिफोर्ड मिरांडा को साल का सर्वश्रेष्ठ पुरुष कोच आंका गया। भारत की अंडर-17 महिला टीम की मुख्य कोच और सीनियर महिला टीम की सहायक प्रिया पीवी ने वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला कोच का सम्मान जीता।

वनडे रैंकिंग के शिखर पर पहुंचने वाली पहली श्रीलंकाई महिला बनीं अटापट्टू

दुबई: न्यूजीलैंड के खिलाफ शृंखला में दो नाबाद शतक जड़ने के बाद श्रीलंका की कप्तान चमारी अटापट्टू बल्लेबाजों की महिला वनडे रैंकिंग में मंगलवार को शीर्ष पर पहुंच गईं। अटापट्टू वनडे रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाली श्रीलंका की पहली महिला हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ओर से जारी नवीनतम रैंकिंग के अनुसार, अटापट्टू 758 रेटिंग पॉइंट के साथ महिला वनडे रैंकिंग के शिखर पर हैं। अटापट्टू छह पायदान चढ़कर ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी को हटाकर प्रारूप की सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बनीं। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे में नाबाद 108 रन बनाये जिससे श्रीलंका को वर्षाबाधित मैच में 172 रन का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिली। दूसरे मैच में शून्य पर आउट होने के बाद अटापट्टू ने तीसरे निर्णायक वनडे में केवल 80 गेंदों में 140 रनों की विस्फोटक पारी खेलकर अपनी टीम को 2-1 से सीरीज जिताई। अटापट्टू अब 93 एकदिवसीय मैचों में 15 अर्धशतकों के साथ आठ शतक बना चुकी हैं। अटापट्टू की सातवें स्थान से शिखर तक की छलांग के कारण मूनी, लौरा वोल्वार्ड्ट, नैट सिवर-ब्रंट, मेग लैनिंग, हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना सभी एक-एक स्थान नीचे खिसक गयीं। उल्लेखनीय है कि तीसरे वनडे में अपनी तूफानी पारी के दौरान अटापट्टू ने नीलाक्षी डी सिल्वा के साथ तीसरे विकेट के लिये 190 रन की साझेदारी की, जो महिला वनडे में श्रीलंका के लिये सबसे बड़ी साझेदारी है। अटापट्टू के अद्भुत प्रदर्शन की बदौलत श्रीलंका ने न्यूजीलैंड पर अपनी पहली एकदिवसीय शृंखला भी जीती।

अभिव्यक्ति

भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाले मुकाबले को लेकर

सौरभ गांगुली ने दिया हैरान करने वाला बयान

एजेंसियां

मुंबई: भारत आईसीसी विश्व कप 2023 की मेजबानी करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। विश्व कप की शुरूआत 5 अक्टूबर से न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के बीच होने वाले मुकाबले से होगी। इस मुकाबले के महज 10 दिन बाद ही ऐसा मुकाबला होगा जिसका हर क्रिकेट प्रेमी को होता है।यानी 15 अक्टूबर को भारत और पाकिस्तान का मुकाबला होने वाला है, जो बेहद हाईवोल्टेज मैच होगा। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होने वाले इस मुकाबले के आयोजन का दोनों देशों के क्रिकेट प्रेमियों के अलावा पूरी दुनिया करती है। इस मुकाबले

के संबंध में भारतीय टीम के पूर्व कप्तान और पूर्व बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने बड़ा बयान दिया है।

उन्होंने ऐसा बयान दिया है जो बेहद चौंकाने वाला है। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मुकाबले काफी अहम होते हैं। दोनों चिर प्रतिद्वंदी है, जिनके बीच कड़े मुकाबले देखने को मिलते है। भारत और पाकिस्तान के बीच हुए अधिकतर मुकाबलों में भारत ने जीत हासिल की है। वहीं दोनों ही देशों के बीच होने वाले मुकाबलों को लेकर दोनों देशों के फैंस में जबरदस्त उत्साह देखने को मिलता है।

क्वालिटी क्रिकेट से हुआ प्रभावित

सौरव गांगुली ने कहा कि दोनों ही देशों के बीच अब क्रिकेट के खेल के स्तर में काफी बदलाव देखने को मिला है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच क्वालिटी क्रिकेट की कमी देखने को मिली है जिस कारण मुकाबले काफी प्रभावित हुए है। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान की अपेक्षा भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच मुकाबले अधिक अच्छे हुए है। उन्होंने कहा कि भारत ने टी20 विश्व कप के दौरान अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था हालांकि एकदिवसीय विश्व कप में भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन कर सकती है।

बीसीसीआई को किया आगाह

भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने एक दिवसीय विश्व कप 2023 के लिए बीसीसीआई और टीम मैनेजमेंट को भी आगाह किया है। उन्होंने कहा कि अनुभवी लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल पर नजर रखनी चाहिए। चहल ने इससे पहले ऑस्ट्रेलिया में आयोजित हुए टी20 विश्वकप में हिस्सा लिया था। हालांकि इस दौरान वो किसी भी मैच में खेल नहीं सके थे। इस टूनार्मेंट में भारतीय टीम इंग्लैंड से हारने के बाद बाहर हो गई थी।

कथित भ्रष्टाचार के कारण गनी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से लिया विराम

एजेंसियां

काबुल: हाल ही में अफगानिस्तान की राष्ट्रीय टीम से बाहर हुए सलामी बल्लेबाज उस्मान गनी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से विराम लेने की घोषणा करते हुए मंगलवार को कहा कि अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) का नेतृत्व ह्यभ्रष्टह्ल है और वह वापसी से पहले सही प्रबंधन और चयन समिति का उत्सुकता से इंतजार करेंगे। गनी ने ट्वीट किया, ''अच्छी तरह विचार करने के बाद मैंने अफगानिस्तान क्रिकेट से विराम लेने का फैसला किया है। क्रिकेट बोर्ड में भ्रष्ट नेतृत्व ने मुझे पीछे हटने के लिये मजबूर किया है। मैं अपनी कड़ी मेहनत जारी रखूंगा और सही प्रबंधन एवं चयन समिति के गठन का उत्सुकता से इंतजार करूंगा। एक बार ऐसा हो जाए तो मैं गर्व से अफगानिस्तान के लिये खेलने के लिए वापस आऊंगा। तब तक मैं अपने प्रिय राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने से खुद को पीछे हटा रहा हूं।'' गनी ने आखिरी बार मार्च 2023 में पाकिस्तान के खिलाफ एक टी20 सीरीज में अफगानिस्तान का प्रतिनिधित्व किया था, जिसमें वह सात और 15 रन के स्कोर ही बना सके थे। गनी ने पिछले दो वर्षों में 11 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 23.50 के औसत और 99.15 के स्ट्राइक रेट

से रन बनाये हैं। साल 2014 में पदार्पण करने वाले गनी ने 50 ओवर प्रारूप में अपनी जगह खोने से पहले आखिरी बार 2022 में एकदिवसीय मैच खेला था। हाल ही में बंगलादेश में टी20 अंतरराष्ट्रीय शृंखला से बाहर किये जाने के बाद वह प्रभावी रूप से सीमित क्रिकेट से बाहर हो गये हैं, जबकि टेस्ट क्रिकेट में वह कभी अपनी जगह नहीं बना सके। गनी ने कहा कि उन्होंने एसीबी के अध्यक्ष मीरवाइज अशरफ से मिलने के कई प्रयास किये, लेकिन 'वह अनुपलब्ध रहे।' गनी ने सभी प्रारूपों से बाहर किये जाने का 'संतोषजनक कारण' नहीं देने के लिये नये मुख्य चयनकर्ता असदुल्ला खान की भी आलोचना की। उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान की टीम में गनी की जगह अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज मोहम्मद शहजाद ने ली है। शहजाद अपनी फिटनेस में सुधार और घरेलू सर्किट में लगातार रन बनाकर 19 महीने के अंतराल के बाद टीम में लौटे हैं। उन्होंने ग्रीन अफगानिस्तान वनडे कप में 44 की औसत से 264 रन बनाये और क्षेत्रीय मिवाइस नीका तीन दिवसीय टूर्नामेंट में 88 की औसत से 440 रन बनाये। अफगानिस्तान और बंगलादेश बुधवार से शुरू होने वाली तीन मैचों की एकदिवसीय शृंखला में एक-दूसरे का सामना करेंगे। इसके बाद दोनों टीमें तीन टी20 मैचों की शृंखला में आमने-सामने होंगी।

पोप कंधे की चोट के कारण एशेज से बाहर

हेडिंगली: इंग्लैंड के उप-कप्तान ओली पोप दाहिने कंधे की चोट के कारण एशेज टेस्ट शृंखला के आगामी तीनों मैचों से बाहर हो गये हैं। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने मंगलवार को इसकी पुष्टि की। ईसीबी ने कहा कि लंदन में सोमवार को विस्तृत जांच के बाद पता चला है कि पोप को सर्जरी से गुजरना होगा। पोप की सर्जरी और रिहैब प्रक्रिया के दौरान इंग्लैंड और सरी काउंटी की मेडिकल टीम उनकी देखरेख करेगी। उल्लेखनीय है कि लॉर्ड्स टेस्ट के पहले दिन फील्डिंग करते हुए पोप के कंधे में चोट आयी थी। उन्हें अंपायरों के अनुरोध पर मैच के तीसरे दिन फील्डिंग के लिये उतरना पड़ा, जिसने उनकी चोट को और गंभीर बना दिया। इंग्लैंड ने पोप के स्थान पर फिलहाल किसी खिलाड़ी को स्क्वाड में शामिल नहीं किया है। डैन लॉरेंस इंग्लैंड की स्क्वाड में एकमात्र अतिरिक्त बल्लेबाज हैं इसलिये ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गुरुवार से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में उनका खेलना लगभग तय है।

जर्मनी, स्पेन दौरों के लिये भारतीय टीम घोषित

एजेंसियां

बेंगलुरु: हॉकी इंडिया ने जर्मनी और स्पेन के दौरों के लिये 20-सदस्यीय महिला टीम की घोषणा मंगलवार को की। भारतीय टीम पहले जर्मनी में चीन के साथ एक और मेजबान देश के साथ दो हॉकी टेस्ट खेलेगी। इसके बाद भारतीय महिलाएं स्पैनिश हॉकी फेडरेशन की 100वीं वर्षगांठ पर मेजबान स्पेन, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के साथ चतुष्कोणीय टूर्नामेंट में हिस्सा लेगी। यह दोनों आयोजन सितंबर में चीन के हांग्झोउ में होने वाले एशियाई खेलों के लिये भारतीय टीम की तैयारी का हिस्सा होंगे। भारतीय टीम के सभी खिलाड़ी यहां चल रहे राष्ट्रीय कोचिंग शिविर को पूरा करने के बाद यूरोप के लिये रवाना होंगे। टीम का नेतृत्व गोलकीपर सविता पूनिया करेंगी जबकि दीप ग्रेस एक्का उप-कप्तान की भूमिका निभाएंगी। बिच्छू देवी खरिबम टीम में नामित दूसरी गोलकीपर हैं, जबकि दौरे के लिये चुने गये डिफेंडरों में दीप ग्रेस एक्का के अलावा निक्की प्रधान, इशिका चौधरी, उदिता और सुशीला चानू पुखरंबम का नाम शामिल है। निशा, मोनिका, सलीमा टेटे, नेहा, नवनीत कौर, सोनिका, बलजीत कौर, वैष्णवी विठ्ठल फाल्के और ज्योति छत्री मिडफील्ड का मोर्चा संभालेंगी। भारत की फॉरवर्ड पंक्ति का नेतृत्व अनुभवी स्ट्राइकर वंदना कटारिया करेंगी। उनके साथ लालरेम्सियामी, संगीता कुमारी और दीपिका भी शामिल होंगी। मुख्य कोच जैनेक शोपमैन ने टीम चयन पर कहा, ''स्पेन और जर्मनी का दौरा हमारी टीम के लिये अंतरराष्ट्रीय मंच पर फिर से अपनी क्षमता और कौशल दिखाने और एशियाई खेलों के लिये अपनी तैयारी जारी रखने का एक शानदार अवसर होगा। उन्होंने कहा, मैं उत्साहित हूं क्योंकि खिलाड़ी इस शिविर में उच्च स्तर का प्रदर्शन कर रहे हैं और वे अपने खेल को बेहतर बनाने के लिये अथक प्रयास कर रहे हैं।

रेखा ने फिल्मों से दूरी की वजह बतायी

एजेंसियां

मुंबई: बॉलीवुड अभिनेत्री रेखा ने फिल्मों से दूरी की वजह बतायी है। रेखा लंबे अरसे से फिल्मों में नजर नही आयी है। रेखा अंतिम बार वर्ष 2014 में प्रदर्शित फिल्म सुपर नानी में नजर आयी थी। रेखा ने फिल्मों में काम नहीं करने की वजह बतायी है। रेखा ने बताया कि वह खुद को भाग्यशाली महसूस करती हैं कि जहां वह यह चुनने के लिए स्वतंत्र हैं कि वह कौन सा प्रोजेक्ट करना चाहती हैं और क्या नहीं।रेखा ने कहा कि सही प्रोजेक्ट उन्हें सही समय पर मिल जाएगा और भले ही वह कोई फिल्म साइन न करें, लेकिन उनकी सिनेमाई आत्मा उनका साथ कभी नहीं छोड़ती। रेखा ने बताया, मेरा व्यक्तित्व मेरा अपना है, लेकिन मेरा सिनेमाई व्यक्तित्व देखने वाले की नजर में है। इसलिए मैं चुनती हूं कि मैं कहां रहना चाहती हूं और कहां नहीं रहना चाहती।

यश कुमार की फिल्म कुरुक्षेत्र की शूटिंग शुरू

मुंबई: यश कुमार एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनने वाली फिल्म ह्यकुरुक्षेत्र' की शूटिंग शुरू हो गयी है। फिल्म कुरूक्षेत्र में यश कुमार मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं। इसकी जानकारी खुद उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए दी। उन्होंने अपने ×फेसबुक वाल पर एक पोस्ट के जरिए बताया कि इस फिल्म की निर्माता निधि मिश्रा हैं, जबकि फिल्म का निर्देशन सुजीत वर्मा कर रहे हैं। फिल्म 'कुरुक्षेत्र' को लेकर यश कुमार का मानना है कि फिल्म नाम के अनुरूप होगी और इसकी कहानी अलग होगी। उन्होंने कहा कि इस फिल्म की कहानी दर्शकों के दिल जीत लेगी। मुझे कहानी बेहद खुबसूरत लगी और मुझे लगता है कि यह दर्शकों को भी पसंद आएगी। अभी हमारी फिल्म की शूटिंग शुरू हुई है और पहले दिन की शूटिंग में जो एनर्जी हमलोगों ने बनाई है, उसी के साथ पूरी फिल्म की शूटिंग करनी है। हर बार की तरह इस बार भी हमारा प्रयास होगा कि हमारी फिल्म दर्शकों को पसंद आए।

15 दिसंबर 2023 को रिलीज होगी सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म योद्धा

एजेंसियां

मुंबई: बॉलीवुड अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म योद्धा, 15 दिसंबर को रिलीज होगी। सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म योद्धा को लेकर लंबे समय से चर्चा हो रही है। इस फिल्म में सिद्धार्थ एक्शन अवतार में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म का निर्देशन नवोदित जोड़ी पुष्कर ओझा और सागर अंब्रे ने किया है। वहीं फिल्म निर्माता करण जौहर की धर्मा प्रोडक्शंस और शशांक खेतान की मेंटर डिसिपल फिल्म्स ने योद्धा का निर्माण किया है। फिल्म योद्धा अब तक थिएटर्स में दस्तक नहीं दे सकी है। इस बीच फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। मेकर्स ह्ययोद्धाह्ल को 15 दिसंबर 2023 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित करने की तैयारी कर रहे हैं। मेकर्स ने एक प्रेस नोट जारी कर फिल्म की नई रिलीज डेट का एलान किया है। नोट में लिखा है, सिद्धार्थ मल्होत्रा अभिनीत और नवोदित जोड़ी सागर अंब्रे और पुष्कर ओझा द्वारा निर्देशित पहली एक्शन फिल्म योद्धा - 15 दिसंबर, 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।'' फिल्म योद्धा में सिद्धार्थ मल्होत्रा के अलावा राशि खन्ना और दिशा पाटनी की भी अहम भूमिका हैं।

वरूण धवन ने बवाल का रोमांटिक पोस्टर शेयर किया

एजेंसियां

मुंबई: बॉलीवुड अभिनेता वरूण धवन ने अपनी आने वाली फिल्म बवाल का रोमांटिक पोस्टर सोशल मीडिया पर शेयर किया है। 'बवाल' में वरूण धवन और जाह्नवी कपूर की मुख्य भूमिका है। नितेश तिवारी निर्देशित फिल्म 'बवाल' का कुछ दिन पहले ही फर्स्ट पोस्टर रिलीज किया गया था, जिसमें जाह्नवी और वरुण के बीच की केमिस्ट्री लोगों को काफी पसंद आई थी। अब वरुण धवन ने एक और रोमांटिक पोस्टर शेयर किया है। वरुण धवन के पोस्ट के अनुसार 'बवाल' का टीजर कल यानी 05 जुलाई 2023 को 12 बजे रिलीज किया जाएगा। वरूण धवन ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्टर यर किया है, जिसमें वह जा''वी के प्यार में डूबे हुए दिखाई दे रहे हैं। पोस्टर में देखा जा सकता है कि जाह्नवी, वरुण धवन की बाहों में खोई हुई हैं। इसके साथ एक्टर ने कैप्शन में लिखा, तुम प्यार

करने देते तो तुम्हें कितना प्यार करते। कल 12 बजे बवाल का टीजर आउट होगा। वरुण और जाह्नवी की स्टारर मूवी 'बवाल' पहले सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी। फिल्म बवाल प्राइम वीडियो पर 27 जुलाई 2023 को रिलीज होगी।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी का गाना यार का सताया हुआ है रिलीज

एजेंसियां

मुंबई: बॉलीवुड अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी और अभिनेत्री शहनाज गिल का गाना यार का सताया हुआ है रिलीज कर दिया गया है। गाना 'यार का सताया हुआ है' में नवाजुद्दीन दिलजले आशिक की तरह शहनाज का इंतजार कर रहे हैं। इस गाने को बी-प्राक ने अपनी दर्द भरी आवाज दी है। गाने का म्यूजिक भी बी-प्राक का है। गाने को लिखा और कंपोज जानी ने किया है। शहनाज गिल और नवाजुद्दीन सिद्दीकी को खूबसूरती से कैमरा पर अरविंद्र खैरा ने दिखाया है। गाने की कोरियोग्राफी राजीत देव ने की है।

निरहुआ, आम्रपाली दुबे की फिल्म कलाकंद का गाना 'मिलल भी चाही ले पास भी न जाइले' रिलीज

एजेंसियां

मुंबई: भोजपुरी इंडस्ट्री के जुबली स्टार एवं सांसद दिनेश लाल यादव निरहुआ और अभिनेत्री आम्रपाली दुबे की भोजपुरी फिल्म ह्यकलाकंदह्ल का रोमांटिक गाना ह्यमिलल भी चाही ले पास भी न जाइलेह्ल वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर रिलीज हो गया है। गाना मिलल भी चाही ले पास भी न जाइले को सिंगर सुगम सिंह ने गाया हैं। इसके गीतकार लवली पुजारा, संगीतकार आर्या शर्मा हैं। इस फिल्म का ट्रेलर पहले ही वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स भोजपुरी के

ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर रिलीज किया जा चुका है, जिसे काफी सराहना मिली है। वर्ल्डवाइड चैनल और जितेंद्र गुलाटी के बैनर तले बनी ह्यकलाकंद' के निर्माता रत्नाकर कुमार, सह-निर्माता कुलदीप श्रीवास्तव हैं। वही कलाकंद' के कहानीकार और निर्देशक संतोष मिश्रा हैं। फिल्म का संगीत आर्य शर्मा ने तैयार किया हैं। इस फिल्म में दिनेश लाल यादव, आम्रपाली दुबे के साथ नीलम गिरी, सुशील सिंह, संजय पांडेय, रीना रानी, संजीव मिश्रा, रचना यादव, अखिलेश शुक्ला, सुन्नी शर्मा और संतोष पहलवान मुख्य भूमिका में हैं।

प्रदेश >> अपडेट

योगी ने श्रावण माह के पहले दिन रुद्राभिषेक किया

गोरखपुर : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि के लिए पवित्र श्रावण मास के पहले दिन मंगलवार को रुद्राभिषेक एवं हवन किया। श्री योगी ने यहां अपने आवास गोरखनाथ मंदिर के प्रथम तल पर स्थित शक्ति पीठ पर भगवान शिव पर बिल्व पत्र (बेलपत्री) और कमल का फूल चढ़ाया तथा दूध और मौसमी फलों के रस से रुद्राभिषेक किया।

शॉर्ट न्यूज अपडेट्स >>

खड़गे-राहुल ने स्वामी विवेकानंद को पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

नयी दिल्ली : कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को महान आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद को पुण्यतिथि पर नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री गांधी ने ट्वीट किया, पूरे विश्व को उन्होंने निडरता का पाठ पढ़ाया, करुणा का मार्ग दिखाया और भाइचारे की सीख दी। महान आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद जी को उनकी पुण्यतिथि पर सादर नमन और श्रद्धांजलि।

विवेकानन्द के विचार और सिद्धांत समय, सीमाओं से परे हैं: ममता

कोलकाता : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री बनर्जी ने मंगलवार को स्वामी विवेकानन्द की पुण्य तिथि पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि महान विभूति के विचार और सिद्धांत समय और सीमाओं से पर हैं। सुश्री बनर्जी ने स्वामी जी को नमन करते हुए ट्वीट किया, "आशा के अग्रदूत और परिवर्तन के आधार, समानता और न्याय के सिद्धांतों पर निर्मित एक मजबूत और एकजुट भारत का उनका दृष्टिकोण हमारा मार्गदर्शक बना हुआ है। उन्होंने कहा, आज, उनकी पुण्यतिथि के इस पवित्र अवसर पर, आइए हम उनके सार्वभौमिक भाईचारे के दर्शन को अपनाएं और एक प्रगतिशील तथा सामंजस्यपूर्ण राष्ट्र के लिए काम करके उनके सपने को पूरा करने का प्रयास करें।

संक्षिप्त >> अपडेट्स

भाजपा ने पांच चुनावी गारंटी को लेकर विस की कार्यवाही की बाधित

बेंगलुरु : कर्नाटक विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायकों ने चुनाव पूर्व सत्तारूढ़ दल द्वारा की गयीं पांच चुनावी गारंटी के क्रियान्वयन में 'विफलता' को लेकर मंगलवार को सदन की कार्यवाही बाधित की। पूर्वाह्न जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरू हुई, पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई और पूर्व मंत्री आर अशोक सहित भाजपा सदस्यों ने विधानसभा अध्यक्ष यू टी खादर से प्रश्नकाल से पहले स्थगन प्रस्ताव के तहत चुनाव पूर्व दी गई पांच गारंटी पर चर्चा कराने की अनुमति देने का अनुरोध किया। इसके जवाब में मुख्यमंत्री सिद्धारामैया ने कहा कि भाजपा सदस्य जिद छोड़ें, स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा प्रश्नकाल और शून्यकाल के बाद ही होगी। उन्होंने कहा, ''भाजपा सदस्यों को जिद छोड़नी चाहिए। सरकार उनके सभी सवालों का जवाब देने के लिए तैयार है, लेकिन स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा प्रश्नकाल और शून्यकाल के बाद ही होगी।''

टीना अंबानी ईडी दफ्तर में हुई पेश

मुंबई : उद्योगपति अनिल अंबानी की पत्नी एवं पूर्व अभिनेत्री टीना अंबानी विदेशी मुद्रा कानून के कथित उल्लंघन की जांच के सिलसिले में अपना बयान दर्ज कराने के लिए मंगलवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों के समक्ष पेश हुई। टीना के साथ उनकी कंपनी के कुछ निदेशक भी हैं, जो दक्षिण मुंबई के बैलार्ड एस्टेट में ईडी कार्यालय के बाहर इंतजार कर रहे हैं। ईडी अधिकारी उनका बयान दर्ज कर रहे हैं। उद्योगपति अनिल अंबानी भी सोमवार को उसी कार्यालय में उपस्थित हुए और उनसे विदेशी मुद्रा कानून के कथित उल्लंघन से जुड़ी जांच के संबंध में पूछताछ की गई।

परामर्श

संसदीय कमेटी के अध्यक्ष सुशील मोदी के विचार

आदिवासियों को समान नागरिक संहिता से बाहर रखने की वकालत

- कई दल पहले से ही विरोध में है
- उत्तर पूर्व के आदिवासी संगठन विरोध में
- आदिवासियों के पारंपरिक कानून कमजोर होंगे

राष्ट्रीय खबर

नईदिल्ली: भाजपा सांसद और कानून पर संसदीय पैनल के अध्यक्ष सुशील मोदी ने सोमवार को पूर्वोत्तर सहित आदिवासियों को किसी भी संभावित समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के दायरे से बाहर रखने की वकालत की। सूत्रों ने बताया कि यह विचार एक बैठक में रखा गया, जहां विपक्षी सदस्यों ने विवादास्पद मुद्दे पर परामर्श शुरू करने के विधि आयोग के कदम के समय पर सवाल उठाया। कांग्रेस और द्रमुक सहित अधिकांश विपक्षी सदस्यों ने यूसीसी पर जोर देने को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से जोड़ा। संसदीय स्थायी समिति की बैठक, कानून पैनल द्वारा समान नागरिक संहिता पर परामर्श प्रक्रिया शुरू करने के बाद पहली, पैनल के प्रतिनिधियों और कानून मंत्रालय के कानूनी मामलों और विधायी विभागों के विचारों को सुनने के लिए आयोजित की गई थी। पिछले महीने, विधि आयोग ने पर्सनल लॉ की समीक्षा विषय के तहत यूसीसी पर विभिन्न हितधारकों से विचार आमंत्रित करते हुए एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया था।

झारखंड में आदिवासी निकायों ने कहा है कि वे यूसीसी का विरोध करेंगे, उनका तर्क है कि इसके अधिनियमन से उनके प्रथागत कानून कमजोर हो जाएंगे। संगठनों ने तर्क दिया था कि यूसीसी संविधान की पांचवीं और छठी अनुसूची के प्रावधानों को प्रभावित करेगा। पांचवीं अनुसूची झारखंड सहित आदिवासी राज्यों में अनुसूचित क्षेत्रों और इन क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण से संबंधित है। छठी अनुसूची में असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम में आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित प्रावधान हैं।

दूसरी तरफ उत्तर पूर्व के आदिवासी संगठनों ने अपने अपने विधायकों को इस बारे में चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर उन्होंने इसका समर्थन किया तो सभी के विधायक आवास जला दिये जाएंगे। वैसे भी अभी मणिपुर में निरंतर जारी हिंसा की वजह से पड़ोसी राज्यों पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

पता चला है कि सुशील मोदी ने आदिवासियों को किसी भी प्रस्तावित यूसीसी के दायरे से बाहर रखने की वकालत की और कहा कि सभी कानूनों में अपवाद हैं। यह भी बताया गया कि केंद्रीय कानून उनकी सहमति के बिना कुछ पूर्वोत्तर राज्यों पर लागू नहीं होते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समान संहिता की वकालत करते हुए 27 जून को भोपाल में एक सार्वजनिक बैठक में कहा था कि आप मुझे बताएं, क्या किसी घर में परिवार के एक सदस्य के लिए एक कानून है और दूसरे सदस्य के लिए अलग कानून है। क्या वह घर चल पाएगा? फिर कोई देश कैसे चल सकता है ? दूसरी तरफ शिवसेना के संजय राउत ने परामर्श के समय पर सवाल उठाया, जबकि कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा और डीएमके सांसद पी. विल्सन ने अलग-अलग लिखित बयान देकर कहा कि अब नए सिरे से परामर्श की कोई आवश्यकता नहीं है।

अपने पत्र में, तन्खा ने पिछले विधि आयोग के विचार को दोहराया कि समान नागरिक संहिता प्रदान करना इस स्तर पर न तो आवश्यक था और न ही वांछनीय। इस कदम के पीछे की मंशा पर सवाल उठाते हुए उन्होंने लॉ पैनल के फैसले को आसन्न चुनावों से जोड़ा। विपक्षी दलों ने यूसीसी पर उनकी टिप्पणियों के लिए प्रधान मंत्री पर हमला किया था, कांग्रेस ने कहा था कि वह केवल बेरोजगारी और मणिपुर हिंसा जैसे वास्तविक मुद्दों से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहे थे।

न्यूज फटाफट

फ्रांस में बीस पुलिस स्टेशनों पर हमला 577 गाड़ियों में आगजनी

पेरिस : फ्रांस की सरकार और पुलिस भी इस स्तर के विरोध प्रदर्शन को नहीं भांप पायी थी। जिस कारण यहां स्थिति नियंत्रण से बाहर चली गयी। वहां एक रात में 577 कारों को आग लगा दी गई, 20 पुलिस स्टेशनों पर हमला किया गया। फ्रांस में पुलिस द्वारा एक युवक की हत्या को लेकर शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन पांचवें दिन में प्रवेश कर गया है। मंगलवार को देश की राजधानी पेरिस के उपनगर नो शहर में पुलिस ने नाहेल माजौक (17) नाम के एक किशोर की हत्या कर दी। नाहेल को शनिवार को पेरिस के पास उनके गृहनगर में दफनाया गया। नाहेल की हत्या के तुरंत बाद फ्रांस में युवाओं ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। जैसे-जैसे दिन चढ़ता जा रहा है, विरोध-प्रदर्शन और तेज होता जा रहा है। बताया गया कि प्रदर्शनकारियों ने एक रात में 577 घरों में आग लगा दी। फ्रांस के आंतरिक मंत्रालय ने रविवार को यह जानकारी दी। विरोध प्रदर्शन में झड़प के दौरान लगभग 45 पुलिस अधिकारी भी घायल हो गए। गृह मंत्रालय ने यह भी कहा कि प्रदर्शनकारियों ने 74 इमारतों और सड़कों सहित सार्वजनिक समारोहों के 871 स्थानों में आग लगा दी। उन्होंने 20 से अधिक पुलिस स्टेशनों पर भी हमला किया। शहर में पुलिस-प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प जारी है। शनिवार रात से ही प्रदर्शनकारी सड़कों पर जुटने लगे थे। रात भर तोड़फोड़ और आगजनी होती रही।

फिलाडेल्फिया में हुई गोलीबारी में चार लोगों की मौत

वाशिंगटन : अमेरिका के फिलाडेल्फिया शहर में हुई गोलीबारी में चार लोगों की मौत हो गई। यह जानकारी मंगलवार को एबीसी ब्रॉडकास्टर की स्थानीय शाखा ने दी। रिपोर्ट के अनुसार, फिलाडेल्फिया के किंग्सिग में सोमवार रात हुई गोलीबारी की घटना में चार अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस के अनुसार, मृतकों में एक युवक भी है और बुलेटप्रूफ जैकेट, राइफल तथा हैंडगन से लैस एक संदिग्ध व्यक्ति को गोलीबारी के तुरंत बाद हिरासत में लिया गया।

जहरीली शराब पीने से चार लोगों की मौत

नोम पेन्ह : कम्बोडिया के पूर्वोत्तर रतनकिरी प्रांत में अधिक मात्रा में मेथनॉल युक्त चावल की शराब का सेवन करने से चार लोगों की मौत हो गई है। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। रतनकिरी प्रांतीय गवर्नर नेम सैम ओयुन ने कहा कि यह घटना कोन मोम जिले के सेरे अंगक्रोंग कम्यून के एक गांव में उस वक्त हुई, जब केले के बागान कंपनी के कर्मचारियों ने स्थानीय किराने की दुकानों से खरीदी गई चावल की शराब पी ली थी। उन्होंने टेलीफोन पर सिन्हुआ को बताया, ह्वरतनकिरी प्रांतीय स्वास्थ्य विभाग द्वारा दर्ज किए गए आंकड़ों के अनुसार, जहरीली शराब पीने के बाद, चार लोगों की मौत की पुष्टि हुई है जबकि एक व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। गवर्नर सैम ओयुन ने कहा, ह्व प्रयोगशाला परीक्षणों में पाया गया कि शराब में मेथनॉल का स्तर 8.21 प्रतिशत और 18.8 प्रतिशत के बीच था, जो सामान्य स्तर 0.15 प्रतिशत से बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि घटना पर एक स्थानीय चावल शराब विक्रेता से पूछताछ की गई है।

जेनिन में कार्यवाही रोकने के लिए इजरायल के संपर्क में मिस्र

काहिरा : वेस्ट बैंक के जेनिन में इजरायली कार्यवाही रोकने के लिए मिस्र इजरायल के संपर्क में है। अल-क़ाहिरा न्यूज़ ने यह जानकारी मंगलवार को मिस्र के सूत्रों के हवाले से दी। इससे पहले, फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि जेनिन में इजरायली कार्यवाही में आठ फिलिस्तीनी मारे गए हैं, 50 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं, जिनमें से 10 की हालत गंभीर है। इजरायल ने सोमवार को वेस्ट बैंक में अपना सबसे बड़ा हवाई और जमीनी कार्यवाही शुरू किया। इजरायली रक्षा बलों के विमानों ने जेनिन शरणार्थी शिविर में तथाकथित आतंकवादी अवसंरचना पर 10 से ज्यादा हमले किए। इजरायली सेना ने कहा कि उसने एक मिसाइल लॉन्चर, हथियार और गोला-बारूद बरामद किया है।

ईरान में पिछले छह माह में 354 लोगों को दी गयी फांसी

पेरिस : ईरान में 2023 की शुरुआती छह महीनों में कम से कम 354 लोगों को फांसी दी गयी है, जो 2022 की तुलना में बहुत अधिक है। नॉर्वे स्थित ईरानी मानवाधिकार संगठन ने सोमवार को यह जानकारी दी। संगठन ने तेहरान पर आरोप लगाया है कि पिछले सितंबर में महसा अमिनी की मौत पर भड़के विरोध आंदोलन के मद्देनजर समाज में डर फैलाने के लिए लोगों को मौत की सजाएं दी जा रही हैं। उन्हें कथित तौर पर महिलाओं के लिए सख्त पोशाक नियमों का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। इस वर्ष जनवरी से 30 जून तक 354 लोगों को फांसी दी जा चुकी है। यह आंकड़ा 2022 में इसी अवधि की तुलना में 36 प्रतिशत अधिक है क्योंकि पिछले वर्ष 261 लोगों को ही फांसी दी गई थी। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि ईरान में फांसी से गैर-फ़ारसी जातीय समूह असमान रूप से प्रभावित होते हैं।

शरद पवार का तेवर देख विधायकों का दल वापस लौटा

फिर पटखनी खा सकते हैं उपमुख्यमंत्री अजीत पवार

- मंत्री बने विधायकों के खिलाफ कार्रवाई प्रारंभ
- चुनाव आयोग को भी शरद पवार ने पत्र लिखा
- जयंत पाटिल ने कहा चंद विधायक पार्टी नहीं है

राष्ट्रीय खबर

मुंबईः चुपचाप शपथग्रहण और बहुमत की दावेदारी के बीच कुछ विधायकों और सांसदों की राय सामने आ गयी है। इससे संदेह उत्पन्न हो गया है कि पिछली बार की तरह शायद इस बार भी अजीत पवार बहुमत के मामले में पटखनी खा सकते हैं। वैसे शरद पवार के तेवरों से यह भी साफ हो गया है कि बगावत करने वाले नेताओं को वह फिलहाल माफ करने की मूड में भी नहीं है। एनसीपी विधायकों का बहुमत किस तरफ है, इसे लेकर संशय की स्थिति बनी हुई है। अजीत पवार के घर पर हुई बैठक में भी दल विभाजन के लिए आवश्यक 36 विधायक नहीं जुटे थे। इस बीच एनसीपी ने बागी अजित पवार को विधायक पद से अयोग्य ठहराने के लिए याचिका दायर की है। शरद पवार की पार्टी पहले ही अजित और 9 एनसीपी विधायकों के खिलाफ महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष को याचिका दे चुकी है। महाराष्ट्र राकांपा के अध्यक्ष जयंत पाटिल ने कहा कि भले ही कुछ विधायक दलबदल कर गए हैं, लेकिन पार्टी के सभी नेताओं और कार्यकताओं का समर्थन अभी भी शरद पवार के प्रति है। संयोगवश, अजित पवार ने रविवार दोपहर अचानक महाराष्ट्र की भाजपा-शिवसेना गठबंधन सरकार में उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इसके बाद से राज्य की राजनीति में उथल-पुथल मची हुई है। जयंत पाटिल ने कहा, एक विधायक ने हमारी पार्टी अनुशासन समिति के पास शिकायत दर्ज कराई है। उनकी शिकायत पर गौर करने के बाद 9 विधायकों को पद से बर्खास्त करने का अनुरोध विधानसभा अध्यक्ष से किया गया है। स्पीकर से इस मामले पर कल विधानसभा में जल्द से जल्द चर्चा कराने का अनुरोध किया गया है।

ईडी के कार्यालय हाजिर हुए अनिल अंबानी

राष्ट्रीय खबर

नईदिल्लीः ईडी ने अनिल अंबानी को समन भेजा था। प्रमुख उद्योगपति सोमवार सुबह जांच एजेंसी के कार्यालय में उपस्थित हुए। खबर है कि उनके खिलाफ फेमा एक्ट के तहत शिकायत दर्ज की गई है। लेकिन ये पहली बार नहीं है, ईडी ने 2020 में एक बार अनिल अंबानी को समन किया था। उनका नाम यस बैंक लोन मामले में फंसा था। बाद में, बैंक के संस्थापकों में से एक राणा कपूर को उस आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। अनिल अंबानी सोमवार सुबह करीब 10 बजे केंद्रीय जांच एजेंसी के दफ्तर में पेश हुए। लंबी पूछताछ के बाद उनका बयान भी दर्ज किया गया। शुरूआती तौर पर पता चला है कि उनके खिलाफ फेमा के तहत शिकायत है। यह कानून तब लागू किया जाता है जब विदेशी मुद्रा के इस्तेमाल पर नियमों के उल्लंघन का आरोप लगता है। सूत्रों के मुताबिक आरोप है कि अंबानी की कंपनी में निवेश के दौरान फेमा क्लॉज का उल्लंघन किया गया। हालांकि, शिकायत वास्तव में क्या है, किस घटना के आधार पर शिकायत दर्ज की गई है, इसके बारे में कोई विस्तृत जानकारी नहीं है। समन पर न तो ईडी और न ही अंबानी ने अपना मुंह खोला। संयोग से, प्रसिद्ध उद्योगपति कुछ दिन पहले आय विवरण को लेकर परेशानी में थे। उन पर 420 करोड़ रुपये के निवेश पर टैक्स चोरी का आरोप लगा था। हालांकि, बॉम्बे हाई कोर्ट के फैसले से अनिल अंबानी को राहत मिली थी। वहीं, इससे पहले 2020 में भी उनसे ईडी पूछताछ कर चुकी है। अनिल अंबानी का नाम यस बैंक फंड गबन मामले में फंसा था। हालाँकि पूछताछ की गई, लेकिन प्रमुख उद्योगपति को सजा नहीं दी गई। यस बैंक के संस्थापकों में से एक को गिरफ्तार कर लिया गया।

समान नागरिक संहिता लागू करने की कवायद के बीच मोदी से मिले धामी

एजेंसियां

नयी दिल्लीः उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता को लागू किये जाने को लेकर चल रही कवायद के बीच राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। प्रधानमंत्री से मिलने के लिए उनके आवास पहुंचे श्री धामी के साथ समान नागरिक संहिता की मसौदा समिति की अध्यक्ष न्यायमूर्ति रंजना देसाई भी थी। दोनों नेताओं के बीच मुलाकात के दौरान किन किन मुद्दों पर बात हुई इस बारे में आधिकारिक तौर पर कोई जानकारी नहीं दी गयी है,हालांकि प्रधानमंत्री कार्यालय ने श्री धामी की प्रधानमंत्री के साथ मुलाकात की तस्वीर ट्विटर पर जारी कर दोनों के बीच बातचीत की पुष्टि की है। धामी श्री मोदी से मिलने से पहले सोमवार को उन्होंने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी मुलाकात की।

रोबोट ने राष्ट्रीय ऑर्केस्ट्रा में शानदार प्रदर्शन किया

राष्ट्रीय खबर

सिओलः एक एंड्रॉइड रोबोट, जिसका नाम एवर 6 रखा गया है, ने दक्षिण कोरिया के राष्ट्रीय ऑर्केस्ट्रा के प्रदर्शन का नेतृत्व करने के लिए शुक्रवार शाम को सियोल में एक मंच पर प्रदर्शन किया। उसने मंच पर मौजूद सभी कलाकारों का सही तरीके से निर्देशन किया और यह रोबोटिक प्रस्तुति देखकर लोग भी हैरान रह गये। देश में इस तरह का पहला प्रयास था। मजेदार बात यह है कि यह खास रोबोट खुद सुन नहीं सकता। वहां पहले से प्राप्त निर्देशों और मंच पर मौजूद कलाकारों को पूर्व भूमिका के आधार पर इस संगीत का परिचालन करता रहा। कोरिया इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी द्वारा डिजाइन किए गए दो-सशस्त्र रोबोट ने कोरिया के राष्ट्रीय रंगमंच में अपनी शुरूआत की, जो देश के राष्ट्रीय ऑर्केस्ट्रा में अग्रणी संगीतकार थे। मानवीय चेहरे वाले रोबोट ने सबसे पहले दर्शकों को प्रणाम किया और लाइव शो की गति को नियंत्रित करने के लिए अपनी भुजाएं लहराना शुरू कर दिया।

आज का इतिहास

- 1658 : मुगल शासक औरंगजेब ने अपने बड़े भाई मुराद बख्श को बंदी बनाया।
- 1811 : वेनेजुएला के सात प्रांतों ने स्पेन के शासन से स्वतंत्रता की घोषणा की।
- 1922 : नीदरलैंड में पहली बार आम चुनाव हुए।
- 1935 : फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने अमेरिका के नेशनल लेबर रिलेशंस कानून पर हस्ताक्षर किए।
- 1950 : नये कानून के तहत सभी यहूदियों को इस्राइल में रहने की अनुमति दी गयी।
- 1954 : बीबीसी ने अपने पहले टीवी समाचार बुलेटिन का प्रसारण किया।
- 1959 : इंडोनेशिया में संविधान बहाल किया गया।
- 1960 : मंगोलिया ने संविधान अपनाया।
- 1962 : अल्जीरिया 132 साल के फ्रांसीसी शासन से आजाद हुआ।
- 1968 : भारत की पहली पनडुब्बी सोवियत रूस से पहुंची।
- 1977 : जनरल मोहम्मद जिया उल-हक के नेतृत्व में पाकिस्तानी सेना ने तख्ता पलट कर देश के शासन पर कब्जा किया।
- 1994 : जेफ बेजोस ने ई-कॉमर्स वेबसाइट ऐमजॉन की स्थापना की।
- 2013 : इराक की राजधानी बगदाद की एक मस्जिद पर हुए बम हमले में 15 लोगों की मौत।
- 2015 – सातवीं महिला फुटबॉल विश्व कप: वैंकूवर में अमेरिका ने जापान को 5-2 से हराया।
- 2016 – नासा का अंतरिक्षयान जूनो बृहस्पति ग्रह की कक्षा में पहुंचा।
- 2019 – अफ्रीका के मुस्लिम देश ट्यूनीशिया ने महिलाओं के चेहरे को ढकने वाले नकाब के पहनने पर रोक लगा दी। ट्यूनीसिया ने यह कदम आतंकी हमलों से सुरक्षा के मद्देनजर उठाया।
- 2019 – टाटा स्टील कलिंगानगर (टीएसके) पहला और एकमात्र भारतीय विनिर्माण संयंत्र बना, जिसे वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम के प्रतिष्ठित लाइटहाउस नेटवर्क में शामिल किया गया।

व्यापार

भारत से मिर्च गयी तो बांग्लादेश में दाम हजार रुपये गिरे

ढाका में बारह सौ रुपये किलो तक दाम पहुंचा था

- हिली लैंड पोर्ट के जरिए भेजा गया माल
- साठ टन माल पहुंचा तो दाम गिरने लगे
- कोलकाता में भी इसके भाव तीन सौ रुपये

राष्ट्रीय खबर

कोलकाताः एक किलो हरी मिर्च की कीमत 1200 रुपये। यह खबर हैरान करने वाली थी लेकिन भारतीय बाजार में भी टमाटर ने लोगों के बजट में आग लगी रखी है। इसके बीच ही पिछले कुछ हफ्तों में बांग्लादेशी बाजार में कच्चे मिर्च की कीमतें आसमान छू गई है। एक तो लगातार बारिश के कारण उत्पादन में कमी है, ऊपर से इसकी अभी धार्मिक आयोजनों की भारी मांग है। कुल मिलाकर उस देश में लंका का नाम 1200 रुपये प्रति किलो पहुंच गया था। इस बीच भारत से काफी अधिक मिर्च को बांग्लादेश भेजा गया है। भारत से यह माल पहुंचते ही बांग्लादेश के बाजार में हरी मिर्च की कीमत में भारी गिरावट आई। रविवार से सोमवार तक कच्चे प्याज की कीमत में 1000 रुपये प्रति किलो की कमी आई है। रविवार को हिली लैंड पोर्ट के जरिए भारत से 60 टन लंका बांग्लादेश पहुंचा। इसके बाद लंका का भाव गिर गया। पिछले कुछ हफ्तों में बांग्लादेशी बाजार में इसकी कीमत आसमान छू गई है। इसके बाद पता चला कि मिर्च से लदे 6 ट्रक हिली बॉर्डर से होते हुए भोमरा लैंड पोर्ट पर पहुंच गए हैं। कुल 60 टन मिर्च का वहां भेजा गया है। यह खबर फैलने के कुछ ही घंटों के भीतर बांग्लादेशी बाजार में हरी मिर्च की कीमतों में गिरावट दर्ज किया गया। सोमवार सुबह ढाका समेत विभिन्न बाजारों में प्रति किलो हरे मिर्च की कीमत तीन सौ रुपये प्रति किलो तक हो चुकी थी।

दूसरी तरफ कलकत्ता और आस पास के इलाकों में भी हरी मिर्च 300 रुपये प्रति किलो पर बेचा जा रहा है। राज्य के मुख्य सचिव ने स्थिति से निपटने के लिए पहले ही एक टास्क फोर्स का गठन कर दिया है। मालूम हो कि सप्लाई की कमी के कारण मिर्च समेत अन्य सब्जियों के दाम बढ़ गए हैं। बांग्लादेश सरकार ने स्थिति से निपटने के लिए भारत से कच्ची मिर्च आयात करने का फैसला किया था। लेकिन सवाल यह उठता है कि आपूर्ति की कमी के कारण जिस राज्य के बाजार में एक किलो मिर्च 300 रुपये तक पहुंच गई है, वहां किसकी अनुमति से कच्ची मिर्च का बांग्लादेश निर्यात किया गया है। इससे पहले प्याज की कीमत ऊंची होने पर भारत सरकार ने प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। जिसके चलते बांग्लादेश को ईरान से प्याज लाना पड़ा।

राष्ट्रीय ख़बर
हमारी नज़र

प्रथम पृष्ठ 2

रांची बुधवार 12

web : www.rashtriyakhabar.com

epaper.rastriyakhabar.com

5:07:2023

सावन के पहले दिन ही शिवालयों में उमड़ी भक्तों की भीड़, भोलेनाथ के जयकारे से गुंजायमान हुआ रांची का पहाड़ी मंदिर

राष्ट्रीय खबर

रांची: सावन की शुरूआत होते ही मंदिरों में भीड़ उमड़ने लगी। लोग सुबह से ही शिव मंदिर में पहुंचकर भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग पर जल अर्पित करते दिखे। मंदिरों में भी भक्तों की भीड़ को देखते हुए हर सुविधा का ख्याल रखा गया है। साथ ही कई इंतजाम भी किए गए हैं।वहीं रांची के पहाड़ी मंदिर की बात करें तो पहाड़ी मंदिर में भी भक्तों की सुविधा को देखते हुए मेडिकल टीम के अलावा जगह-जगह बैरिकेटिंग लगाए गए हैं। रांची के पहाड़ी मंदिर में साफ-सफाई से लेकर सभी इंतजाम किए गए हैं। मंदिर प्रबंधन के लोगों ने बताया कि इस वर्ष भी अर्घा सिस्टम के माध्यम से जल चढ़ाने की व्यवस्था की गई है।इस वर्ष सावन में 8 सोमवार मनाए जाएंगे। इसीलिए भक्तों की भीड़ भी इस वर्ष ज्यादा होने की संभावना जताई जा रही है। मलमास की वजह से इस वर्ष 59 दिनों का सावन मनाया जा रहा है। प्रतिवर्ष भक्तों को चार सोमवारी करने का मौका मिलता था लेकिन लंबे समय के बाद इस वर्ष 2 महीने तक सावन मनाया जाएगा, जिस वजह से भक्त 8 सोमवारी कर पाएंगे।पंडितों के अनुसार इस वर्ष का सावन बेहद खास है, लंबे समय के बाद सावन में मलमास पड़ रहा है। शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर कांवरियों की टोली भी नजर आने लगी है। वहीं रांची के पहाड़ी मंदिर से भी कई ऐसे कांवरियों की टोली देखने को मिल रही है जो बाबा मंदिर जाने से पहले पहाड़ी बाबा का दर्शन करते हैं। वहीं मंदिर में पहुंचे भक्तों ने भी हर हर महादेव के नारे से भगवान भोलेनाथ के मंदिर में प्रवेश किया और शिवलिंग पर जल चढ़ा कर परिवार एवं समाज के सुख समृद्धि की कामना की।

जलसंकट ▶ जलसंकट तो इस साल दूर होगा पर अगले साल

यह काम सरकार को करना होगाः डॉ राजेश गुप्ता छोटू

- ▶▶ दूसरे डैम से पानी लाने का काम हो
- ▶▶ खुले और सार्वजनिक स्थलों पर सरकार करे
- ▶▶ अब कई इलाकों में पांच सौ फीट नीचे गया पानी

राष्ट्रीय खबर

रांची: रांची पूर्व पार्षद और सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता डॉ राजेश गुप्ता छोटू ने इस बारे में कहा कि रांची में अब कई स्थानों पर जलस्तर पांच सौ फीट से नीचे चला गया है। इसके अलावा अधिकांश पुराने घर जिस तरीके से बने हुए हैं, उनमें रेन वाटर हार्वेस्टिंग की न तो सुविधा है और ना ही इन घरों में रहने वालों की आर्थिक हैसियत है। जमीन का बंटवारा होते होते बहुत इलाका इतना सीमित हो गया है कि वहां अब भूमिगत जल को रिचार्ज करने के लिए जमीन भी नहीं बची है।

उन्होंने कहा कि अपने कार्यकाल में ही उन्होंने नगर निगम के माध्यम से राज्य सरकार को अपनी तरफ से पहल करने का सुझाव दिया था। इसके तहत हर इलाके में खुला मैदान अथवा अन्य सार्वजनिक संपत्तियों में सरकारी स्तर पर सही रेन वाटर हार्वेस्टिंग का काम किया जाना चाहिए। इससे इलाकों को बारिश के मौसम में भूगर्भस्थ जल भंडार को रिचार्ज करने का मौका मिल जाएगा। वह मानते हैं कि इस दिशा में अधिक जलसंकट वाले इलाकों में सरकारी स्तर पर ही काम किया जाना चाहिए। वरना वह भी मानते हैं कि आने वाले वर्षों में इस पर काम नहीं होने की स्थिति में हालत और गंभीर होती चली जाएगी।

डॉ गुप्ता के मुताबिक शहर के तालाबों को गहरा बनाकर उसमें जमा काई और मलबा निकालने का काम भी होना चाहिए। इसके अलावा आबादी बढ़ने की वजह से अब जब तक कोई नया डैम नहीं बन जाता, सरकार को पतरातू अथवा लतरातू डैम से अतिरिक्त पानी लाने पर भी कोई कदम उठाना चाहिए। उनके मुताबिक शहर को जलापूर्ति करने वाले तीनों डैम अब काफी पुराने और आबादी के अनुपात में कम हो चुके हैं। इसलिए शहर की जलापूर्ति व्यवस्था को अतिरिक्त इंतजाम की जरूरत है। इस बीच सरकारी अधिकारियों द्वारा अपनी हैसियत के दुरुपयोग का मामला भी चर्चा में आ जाता है। इसी साल रांची नगर निगम की एक अधिकारी पर रातू रोड पर अपने आवास के ठीक बाहर 12 फीट चौड़ी पीसीसी सड़क पर बोरवेल खोदने का आरोप लगा। बोरवेल खोदे जाने की वजह से सड़क का वह हिस्सा अवरुद्ध हो गया। आर्यपुरी इलाके के निवासियों के एक वर्ग ने औपचारिक रूप से आरएमसी के नगर आयुक्त शशि रंजन को एक पत्र सौंपकर एक नागरिक अधिकारी की ऐसी मनमानी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। आंकड़े बताते हैं कि आरएमसी ने 13 उच्च-उपज वाले ड्रिल्ड ट्यूबवेल स्थापित किए। इनमें से दस क्षतिग्रस्त हो गये हैं और पानी भी सूख गया है। बड़ी आबादी केवल तीन एचवाईडीटी और आरएमसी द्वारा आपूर्ति किए गए टैंकरों पर निर्भर है। इस बीच, आरएमसी के पास पानी की आपूर्ति के लिए केवल 40 टैंकर उपलब्ध हैं। टैंकरों की क्षमता 2,000 से 10,000 लीटर तक है। शहर में 2,507 हैंडपंप हैं, जिनमें से करीब 190 सूखे हैं। इसके अलावा, 1,374 माइक्रो ल उ्ळ२ और 174 बड़े एचवाईडीटी और 69,078 कनेक्शन हैं। गर्मी के दिनों में पानी की लगातार कमी रहती है। निगम ने सभी घरों को वर्षा जल संचयन प्रणालियों से लैस करने के लिए कहा है। निवासियों की जल संरक्षण के प्रति उपेक्षा पानी की कमी में योगदान करती है। 2.25 लाख से अधिक हैं शहर में घर हैं लेकिन उनमें से केवल लगभग 20,000 में ही वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ हैं।

(समाप्त)